बड़ा सूर्यपुराणादि



प्रकाशकः—

बाबू वृजभूषणदास कन्हैयालाल गुप्त ।

पं० रामतेज पाण्डेय द्वारा संशोधित

बा० जयकृष्णदास गुप्त द्वारा—

विद्याविलास प्रेस, गोपालमंदिर लेन, काशी में मुद्रित ।

सन् १९२६

॥ श्री ॥

अथ सूर्यपुराणादि २९६ रत्नों की ।

अनुक्रमणिका ।

इति सूर्यपुराणादि विषयानुक्रमणिका समाप्त।

॥ श्रीः ॥

अथ सूर्यपुराणप्रारंभः ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

दोहा—बंदौं चरण हृदय धरि, भक्ति प्रेम लवलीन॥
महिमा अगम अपारहै, सो बहुज्ञानप्रवीन॥१॥
वंदौं चरननजोरि कर, श्रीपति गौरिगणेश॥
तुलसिदासअतिप्रेमसे, बर्णतकथादिनेश॥२॥

चौपाई॥ सूर्यदेवता सुमिरौं तोहीं॥ सुमिरत ज्ञान बुद्धिदे मोहीं॥ ज्योतिरूप आदितबलवाना॥ तेज प्रताप सुअग्निसमाना॥ तुम आदितपरमेश्वरस्वामी अखिलनिरंजनअंतर्यामी॥ बर्णि न जाइ ज्योति की लीला॥ धर्मधुरंधरपरमसुशीला॥ ज्योतिकला चहुँओर विराजै॥ जगमगकाननकुंडलछाजै॥ नील-

वर्णछावहय असवारी ॥ ज्ञाननिधानधर्मव्रतधारी ॥ परमपुनीत आदितअविनासी ॥ अजनअनादिसकलघटवासी ॥ जासुकथा मैं करौंबखाना ॥ सोपूरुष है अग्निसमाना ॥ महिमाआदित अगम अपारा ॥ तीनहुँलोकज्योतिउजियारा ॥१॥ दोहा ॥ आदितकथापुनीतहै, गावहिं शम्भुसुजान ॥ तीन लोकक्षबिउदितहै, करहिंप्रतापबखान ॥२॥ चौपाई ॥ सुनहुउमाआदित्यप्रतापा ॥ वर्णौं विमलजासु मैं जापा ॥ नाथमहातमसुनहु भवानी ॥ कहौंपुनीतकथाशुभबानी ॥ गिरिजासुनहुकथा मनलाई ॥ मैंतोहिं अर्थ कहौं समुझाई ॥ बांझसुनैयकमासपुराना ॥ मनवचकर्मसुचितधरिध्याना ॥ नेमधर्मसोकरै अहारा ॥ द्वादशबर्तकरै इतवारा ॥ कुशाबिछाइकरैविश्रामा ॥ हरषितलेइसूर्यकोनामा ॥ इतनीटेकधरैतियजबहीं ॥ होहिंदयालुदयानिधितबहीं ॥ वृथावचनभाषौंनहिंतोहीं ॥ मनवचकर्मजोपूछौमोंहीं ॥ निश्च-

यतोप्रसन्नबलवाना ॥ पांचपुत्रहों अग्निसमाना ॥
तिनसोंजीति सकैनहिंकोई॥विद्यावंतगुणीबड़होई ॥३॥
दोहा ॥ वांझकथामनलाइकै, टेकधरैव्रतध्यान ॥
निश्चय होवैं पाँच सुत, योधा अग्निसमान ॥४॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे वांझपुत्रपावनो नाम
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

चौपाई ॥ सूर्यकथा है अमृतवानी ॥ मनसुस्थिरकरि सुनहुभवानी ॥ कुष्टवर्णहोइजाकरअंगा ॥ सो यह कथाकरैसुप्रसंगा ॥ रविदिनभोजनकरैअलोना॥ पुष्प सुवासचढ़ावैदोना॥ विप्रबुलाइकैहोमकरावै॥वहीभस्म ले अंगलगावै॥ निश्चय कुष्ट वर्णछुटिजाई ॥ धनि महिमाहै सूर्यगुसाईं॥१॥दोहा ॥ जाकोअंगसकुष्टहै, सो यहसुनैपुराण ॥निश्चयसूर्यप्रतापते,पावैकायादान॥१॥

इति श्रीसूर्यपुराणे कुष्टीकायादानपावनो नाम
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

चौपाई ॥ सूर्यकथामैंकहौंबुझाई ॥ मनबचकर्मसुन-
हु चितलाई ॥ जाकेवर्णअंगमहँ होई ॥ स्थिरक-

थापढ़ैनरसोई॥ जाकोगाढ़परैअतिभारी॥ सोयह कथाकरैअनुसारी॥पांचबरतनरकरइतवारा॥ मनवचकर्मकथाअनुसारा॥अगरसुचंदनलेपन करई॥ निशिदिनध्यानसूर्यकरधरई॥ निश्चय वर्णसकलमिटिजाई॥ धनिमहिमांहैसूर्यगुसाई॥१॥ दोहा॥ जाकेबर्णसुअंगमहँ, सोनितसुनैपुराण॥ धन्यधन्यआदित्यको, महिमाकरौंबखान॥१॥ चौपाई॥ सूर्यकथामैंकहौंबुझाई॥ मनसुस्थिरकरसुनुचितलाई॥ जोनरहोयअन्धदोउलोचन॥ सो यहकथासुनैदुखमोचन॥ निशिदिनकरै अलोन अहारा॥ विविधभाँतिकरनेमअचारा॥पीपरतरुतरसुनैपुराना॥ पावैनयनअन्धबलवाना॥ अन्धहुंलोचननिश्चयपावै जोयहकथासुचितलवलावै॥२॥दोहा अन्धालोचनपावहीं जोजानैप्रभुएक॥ पुलकितप्रेमपुनीतमन, धरै कथापर टेक॥२॥ मनवचकर्मसुप्रीति दृढ़, भोजनकरैअलोन॥ रविदिनहर्षितसुचितमन, पुहुपचढ़ावैदोन॥३॥
इति श्रीसूर्यमा० महा० अंधलोचनपावनो नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

॥चौपाई॥ यात्राकरिनरचलैविदेशा ॥ सोयहपढ़ै-
पुराणसुदेशा ॥ निश्चयतासुसकामसिधिहोई ॥ लाभ-
भवनचलिश्रावैसोई ॥ जाकोगाढ़परैश्रति भारी ॥
सोयहकथा करैश्रनुसारी ॥ निश्चयऋणहु सकल-
मिटिजाई ॥ धनिमहिमाहैसूर्यगुसाईं ॥१॥ दोहा ॥
यात्राकरिनरजबचलै, तबयहपढ़ैपुरान ॥ निश्चय-
सकलमनोरथ, पुरवहिंश्रीभगवान ॥१॥ चौपाई ॥
सुनहुउमामैंकहौंबुझाई ॥ मनबचकर्मसुनहु चित-
लाई॥ऐसी महिमाश्रादित देवा ॥ जासुकरहिंसुर
नरमुनि सेवा ॥ मेटतगाढ़ सकलतनुत्रासू॥ पुलक
प्रेमहियहर्षहुलासू॥दीनानाथनिरंजनसाँईं ॥ महिमा
मुखतेवर्णिनजाई॥ जोदण्डवतकरैव्रतदाना ॥ सो-
नतुलेयहि कथा समाना ॥ तेजप्रताप वर्णिनहिं
जाई ॥ सूरजकथापढ़ै मनलाई ॥ कहैं शंभुयहक-
थापुनीता ॥ रविप्रतापते भयउंश्रजीता ॥२॥ दोहा ॥
श्रसमहिमाश्रादित्यकर, बर्णौप्रेमउछाह ॥ सुनहुउ-

गाञ्चतिप्रेमसे, प्रभुकीरतिञ्चवगाह ॥२॥ चौपाई ॥
कथापुनीतकहौंशुभवानी॥छठोंमहातमसुनहुभवानी॥
कार्त्तिकचैत्रपुण्यबहुभारी॥ साजहिंअर्थसकल नरना
री॥ चंदन अगरकपूरकीबाती॥ पूजानाथकरहिं बहु
भाँती॥ जोउरमनोकामनाराखे॥ पुलकध्यान धरिसु
खतेभाखै ॥ सोकारजपुरवहिंभगवाना। ऐसे हैं प्रभु
ज्ञाननिधाना॥३॥दोहा॥लीलाअगमअपारहै, कृपासि
न्धुबलवान॥ वर्णहुँकथापुनीतअति, सुनुसुस्थिरधरि
ध्यान ॥३॥ चौपाई ॥ सुनहु उमाप्रभुचरितअपा
रा॥ नाथकथावर्णौं विस्तारा ॥ सिंहलद्वीपनगरका
नाऊँ॥ तिहिमेंबसाहिंपरीच्छितराऊ ॥ महापुनीतधर्म
उपकारी ॥ तासुभवनइकसुताकुमारी ॥ सोनितकरै
सूर्यकोपूजा ॥ सेवैसूर्य और नहिं दूजा ॥ प्रेमसे
भक्तिकथामनलावै॥ निशिदिनटेक सूर्यजपध्यावै ॥
इहिकारणपरसंगगुसाँई ॥ सेवैसूर्यहिंमनचितलाई
तासुभवनप्रभुकरहिं कलेवा ॥ तीन भुवनपावै नहिं

भेवा॥एकसमयअसअचरजभयऊ॥ कन्यासुरसरितीर
हिंगयऊ॥ मज्जन करन लगी सोइ बाला ॥ हृदयवि
राजतमोतिनमाला ॥ तेहिअन्तरनारदऋषिआये॥
ताहिदेखिमुनिनयनलुभाये॥ ठाढ़भयेमुनि सुरसरि
तीरा॥ लियउ छीनकन्याको चीरा॥ कन्याजलमेंक
रतिपुकारा ॥ अंबरदीजियऋषेहमारा ॥ कह नारद
सुनु कन्यावाता ॥ हमसेकरहुपुरुषकरनाता ॥ सुनु
मुनितुम्हरी मति बौराई॥ ऐसे वचनकहौ कहुँजाई॥
मोसीकन्यालाखपचीसा॥ ऐसो वचन न कहोमुनी
सा॥ अव विनतीममसुनहुसुवानी॥ अंबरदेहुहमहिंमु
निज्ञानी ॥४॥ दोहा ॥ नग्ननारिजलमें खड़ी, तुमहिं
कहौंकरजोरि॥ करिकरुणाकरुणायतन, अंबरदीजैमो
रि ॥४॥ चौपाई॥ जब कन्याबहुबिनतीलाई॥ तेहि
क्षणमुनितवगयउलजाई॥ अंबरदैमुनिभवनसिधाये॥
तेहि अवसरतहँशंकर आये॥ सोसुनिमुनिहिंशापवश
कीन्हा ॥ सोआदितसे कहबैलीन्हा ॥ जहांकरतही

मैं असनाना ॥ मुनिअंबरलैगेअज्ञाना ॥ ताहिसम
य आयेशिवभोरा ॥ संगउमाजसचंद्रचकोरा ॥ भ
क्तिसहितप्रभुनायऊमाथा । पूंछिकुशलतब त्रिभुवन
नाथा ॥ कुशलकह्याशिव मनमुसकाई ॥ बैठेउप्रभु
तहँकहाबुझाई ॥ पूंछाप्रभुहिंशिवहिंकरजोरी ॥ नाथ
सुनहुइकविनतीमोरी ॥ कोअपराधकीन्हमुनिभारी ॥
सोप्रभुमोसोंकहौं विचारी ॥ तबप्रभुकहासुनहुहोभो
रा ॥ कन्याप्राप्तितसेवकमोरा ॥ सोज्ञुसुना मुनिकर
अज्ञाना ॥ दृष्टिविलोकेमनकरिध्याना ॥ यहकारण
मुनिशापजो दयऊ ॥ तेहितेअंगवर्णमुनिभयऊ ॥
इतनासुनिमनशिवमुसकाने ॥ दृष्टभुलानेउमनअ
ज्ञाने ॥ सुनतवचनक्रोधितमनभयऊ ॥ कन्यासह
सहतबमुनिपहँगयऊ ॥ ५ ॥ दोहा ॥ मुनिसोंकहावच
नतब, क्रोध कियेमनलाइ ॥ जसकौतुकतुमकीन्हेउ
मोहिं कहहुसमुझाइ ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ मुनिकरजोरि
सुबचन सुनाए ॥ धरिपदकमलसूर्यगुणगाये ॥ कहमु

निप्रभुसुनुबातहमारी ॥ मोसों चूकभईअतिभारी ॥ यहअपराधछमहुप्रभुमोरा ॥ विनवौंनाथदोउकरजोरा ॥ तवप्रभुकहासुनहुममवानी ॥ इहांकेलोगसकलगुरुज्ञानी ॥ तातेमुनिमसलेहुजुशापा ॥ जसकीन्हेउतसभुगतहुपापा ॥८॥ दोहा ॥ तीनभुवनकेस्वामिहैं, ज्योतिकीन्हपरकाश॥हर्षिकथाजो गाइहै लहैसोरविढिगवास ॥ ६ ॥

इति श्रीसू०म०राजपरीक्षितकन्यानारदशापदानं नाम चतुर्थो० ॥ ४ ॥

चौपाई ॥ पंपापुरइकनगरकनाऊँ ॥ हलधरविप्रनृपतिवहिठाऊँ ॥ नगरवसैमानहुंकैलासा ॥ धर्मकथा तहँहोइप्रकाशा ॥ पूजैसूर्यहिंसोदिनराती ॥ निशिदिनटेकधरै वहुभाँती ॥ अग्निकोटचारौदिशि तहाँ ॥ श्रीसूरजकोआश्रमजहां ॥ तहाँतड़ागअखंडसुहोवा ॥ चारौघाटसुवर्णबँधावा ॥ तहाँ थंभइकबड़ाविशाला ॥ सौयोजनसोरहेउपताला ॥ वोहिथंभआदितकरवासा ॥ प्रातहिथंभसोलागुअकासा ॥ यहि

विधिआदितआवहिंजाहीं॥कथापुनीतसुनहुमनमाहीं॥
मैंतेहिंअर्थकहौंसमुझाई॥आदितकथापढ़ैमनलाई॥४॥
दोहा॥ धनिआदितपरमेश्वर, महिमाअगमअपार ॥
तीनभुवनतमभागेउ, भएउसकलउजियार ॥ १ ॥
कुष्टीध्यानजुलावही, पावैकायादान ॥ असप्रभुअंत-
र्यामी, कृपाकरहिंभगवान ॥ २ ॥ कपटछांड़िमन-
लावही, मनवचकर्म अनुराग॥ सुरजनसनअस्तुति-
करहिं, प्रसवहोइबड़भाग ॥ ३ ॥ सबगुण-
आगरशीलतुम, जगमहँरूपनिधान ॥ मन वचक-
र्मतेहर्षित, सज्जनकरहिंबखान ॥४॥ चौपाई ॥ गिरि-
जासुनहुकथामनलाई ॥ पूरबदिशिजहँ उगहिंगो-
साईं ॥ ताहिदिशाइकश्रीपुरदेशा ॥ तहांको राजा-
रूपमहेशा ॥ करैसदाआदितकी पूजा ॥ वहिसमान
कोउभक्तनदूजा ॥ यहिविधिसकलनगरउजियारा ॥
तहाँशैलयकबड़बिस्तारा॥सहसकोस पर्वतपरमाना॥
तहाँवसहिंआदितबलवाना ॥ दोइ पहरतहँकरहिं-

निवासा ॥ फिरपश्चिमदिशिप्रेमहुलासा ॥ मनव-
चकर्मकथागुणगाई ॥ सूर्य्यचरित मैं तुमहिंसुना-
ई ॥ सुनिगिरिजाचकितभइबानी ॥ तेजप्रतापसुन
तहरखानी । धनिआदितजिनकीयहलीला ॥ धर्मधुरं
धरपरमसुशीला ॥ जोनरकथासूर्यको गावै ॥ चढ़ि-
विमानबैकुंठसिधावै ॥ सूर्यकथाहै अम्मृतसानी ॥
अस्तुतिहर्षितकरहिंबखानी॥२॥छंद॥ तुमप्रभु स्वामी
अन्तर्यामीज्योतिकलाछवि उदितमहा॥रूपनिधानाश्री
भगवाना करहुकृपाहमअधममहा ॥ छबिज्योतिवि-
राजैकुंडलछाजै तवप्रतापहै त्रयभुवना ॥ महिमाप्रभु-
तोरीहृदयधरोरीलेतनाम पातक हरना ॥१॥ चौपाई॥
गिरिजाकहैदोउकरजोरे॥ एक संदेह और मन मोरे ॥
उत्तरदिशि कहँ उगहिंगुसाँई ॥ सोमोहिं नाथ कहौ
समुझाई ॥ कहनलगेशिवकथारसाला ॥ जेहिबिधिउ-
त्तरउगहिंकृपाला॥ उत्तरदिशिकरकथाकहानी ॥ मन-
सुस्थिरकरसुनहुभवानी॥तहाँशैलइकबड़बिस्तारा॥सौ-

योजनसोउच्चपहारा॥भ्रूपैभानुकिरणिनहिधावै॥यहि-
विधिपुरअँधियारजनावै॥तहाँवासकलियुगकरहोई॥
तबसोंपापमलिनहोयसोई॥ यहिविधिकबहुँनऊगहि
भानू॥मैतोहिंअर्थकहौंपरमानू ॥ एकसमयअचर-
जअसभयऊ॥नारदमुनितहवाँचलिगयऊ॥ देखा-
नगरसकलअँधियारा॥धर्मकथाकरनाम विसारा॥
फिरिफिरिनगरसकलमुनिदेखा॥पाप सिवाय और
नहिंलेखा॥मनमेंनारदकरहिंविचारा॥ आयेकहाँ
नगरअँधियारा॥ असकहिनारद कोपेउजबहीं॥
नगरहिंशापदीन्हमुनितबहीं॥कुष्ठीहोउसकलनरना-
री॥धर्मकथाकरनामबिसारी॥ कुष्टवर्णभे सबकेअं
गा॥आठौंबदनसकल तनभंगा॥ कोउनरहाकुष्ट
सनबाँचा॥सबकेकुष्ट वर्णभासाँचा॥ व्याकुलभये
तहाँनरनारी॥त्राहि त्राहिकरतबहिंपुकारी॥ शापि
तकरिसूरजपहँ आये॥ उत्तरादिशिकरअर्थजनाये॥
सुनतकथाआदितमुसकाने॥ कहांगयेमुनिउतरभु

लाने॥ शापितकरि उत्तर कहँआये॥ अब हमरे
पहँ वात जनाये॥ अबै कहहु मुनि पूछौं तोहीं॥
उग्रशाप कबछूटै ओहीं॥ कहनलगेमुनिनारदजबहीं॥
अंगवर्ण मुनिदेखातबहीं॥ अंगवर्णमुनिदेखा कैसा॥
मानहुहंससरोवरवैसा ॥ चकितभयेसबमुनिकेअंगा॥
निकसोवर्णसकल तनुभंगा ॥ तनुमहँकुष्टजोमुनिके
भयऊ॥ व्याकुलहोयसूर्यसनकहेऊ ॥ हेप्रभुअबमैं
पूछौंतोहीं॥ केतेअंगवर्णरहैमोहीं॥ कृपासिंधुप्रभु परम
अगाधा॥ वर्णभयो तनुकेहि अपराधा ॥ सोमोहिं
नाथकहौ समुझाई ॥ जेहिते अंगवर्णमिटिजाई॥
तव प्रभुकहा सुनहु ममबानी॥ वहाँकेलोगसकलगु
रुज्ञानी॥ सबकहँशापदीन्हतुमभारी॥ व्याकुलभये
सकल नरनारी॥ सबकरअंगभंगतुमकीन्हा॥ उत्तर
जाइशापतुमदीन्हा॥३॥ दोहा॥ अबमैंकहिंहौंतुम
हिंसन, कथापुनीतअभंग॥ शापअनुग्रहकरहुतौ, व
र्णमिटैतवअंग ॥४॥ चौपाई॥ नीकवचननारद

मनमाना ॥ उत्तरदिशिकहं कीन्हपयाना॥ द्वादश दिनमहँउत्तर गयऊ॥ नगरशापसुअनुग्रहकियऊ॥४॥ दोहा॥ नारद उत्तर जाइकै, शाप अनुग्रह कीन्ह॥ तेज प्रतापादित्य कर, हर्षित वर्णन कीन्ह ॥ ६ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये नारदशापवर्णनं नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

चौपाई॥ असकहि मुनि आदितपहँआये ॥ उत्तर दिशिकी कथा सुनाये ॥ शापअनुग्रहकीन्हगुसाँई ॥ धन्य प्रतापवर्णि नहिं जाई॥ अस सुनि आदित हर्षित भयऊ ॥ दयालागितबमुनिसोकहेऊ॥अबजनि ऐसेभरमभुलाहू ॥ आशीर्वादलेहुघरजाहू ॥ भई कृपामुनिपरबहुभारी ॥ बर्णिनजाइज्योति अधिकारी॥ बिदाहुएमुनिगृहकोआये ॥ हर्षितहुयेसूर्यगुण गाये ॥ हर्षितमंगलगावहिंनारी ॥ धन्यसूर्यसबकर हिंपुकारी॥ धनि आदितकाया के राजा ॥ जाकी ज्योतिचहुँ ओरबिराजा ॥ कोटि विप्रतहँनेवतिपठावा॥ अस्तुतिनारदसूर्यकीगावा॥ अश्वमेधकरनेमुनि

लागे ॥ तीनभुवनकेदारिदभागे ॥ सबकहँनारदने
वतिपठाये ॥ रथचढ़िदेवतहाँसबआये ॥ ब्रह्माविष्णु
आदित्रिपुरारी ॥ आयेसकलसहितसुतनारी ॥ बहु
प्रकारमुनिसबहिंजिवांये ॥ हर्षितहोयसूर्यगुणगाये ॥
हर्षितमंगलगावहिंनारी ॥ ब्राह्मणवेदपढैंजयकारी ॥
चंदनअक्षतपानपकवाना ॥ पूजाकरहिं धरहिंमुनि
ध्याना ॥हर्षितहोयसूर्यगुणगावैं ॥ तालपखावज
शंखवजावैं॥१॥दोहा॥ यज्ञकीन्हमुनिनारद, शोभावर
णिनजाइ ॥तैंतिसकोटीदेवतहँ, हर्षि कथागुणगाइ॥१॥
चौपाई ॥ जोनरधरैंकथापरध्याना ॥ ताकरहोय
परमकल्याना ॥ जोयहकथापढ़ैमनलाई॥ तापरआ
दितहोयँसहाई ॥ धनिप्रतापआदितबलवाना॥ तेज
प्रतापसुअग्निसमाना ॥२॥ दोहा ॥ गिरिजापूंछैशम्भु
सन, सूर्यचरितमनलाइ॥ दक्षिणदिशिमहंकहंउगहिं,
नाथकहो समुझाइ ॥ २ ॥ चौपाई ॥ कहैं शम्भु
सुनु शैलकुमारी ॥ सूर्य चरित मैं कहौं बिचारी ॥

कहन लगे शिव कथा बुझाई ॥ जेहि विधि दक्षिण उगहिं गुसाईं ॥ दक्षिण दिशि इक नगर अनूपा ॥ जैमलविप्र तहाँ के भूपो॥ हर्षित भजन करै दिन राती ॥ जहां रहैंआदितबहुभांती॥ यहिविधि प्रभु कर ज्योति विराजे ॥ अनहद्नादघंटध्वनिबाजे ॥ तैंतिसकोटिदेवतातहां ॥ जगन्नाथकोआश्रम जहां ॥ दक्षिणदिशिमेंकाशिप्रयागा ॥ तहां अहैयकविमल तड़ागा॥ तहं बलभद्र सुभद्रासङ्गा॥ जहांबसहिं श्री सुरसरिगङ्गा॥ कृपासिंधुप्रभुपरमअगाधा॥ निशिदिन भजन करैंअवराधा॥३॥ दोहा॥ दक्षिणदिशापुनीत है, सुनहु उमाचितलाइ॥आगिलचरितजुहोइहैं, सो मैं कहौं बुझाइ॥३॥चौपाई॥ कलियुगअन्त होइजबजैहैं॥ मानुषकोतनुमानुषखैहैं॥ तब प्रभुलैअवतार कलंकी ॥ मानुष तब होइहै निकलंकी॥ दक्षिणदिशाउगहिरबि जाई ॥ आगिलअर्थ कहौं समुझाई ॥ धर्म कथा चलिहैंबहुभांती ॥ नेम धर्मकरिहैंदिनराती ॥ विप्र

जिवांयआपतवजैइहैं ॥ निश्चयनामसूर्यकेगइहैं ॥ लक्ष्मी घरघरकरहिंनिवासा ॥ धर्मकथातहंहोइप्रकासा वृथावचनकोईनहिंभाषै ॥ निशिदिनध्यानसूर्यपर राखै ॥ धर्मविचारसूर्यतहंकरिहैं ॥ द्वादश कलाज्योतिलै वरिहैं ॥३॥ दोहा॥ द्वादशकलालैऊगिहैं, आदि ततवहींआइ॥ पूर्वजन्मकेपातकन, कथापढ़त छयजाइ ॥ चौपाई ॥ आगिल अर्थजुटेरि सुनावा ॥ सुनि गिरिजा के मन अतिभावा ॥ मग्न भईसुनिशिवकी बानी॥ हरपि सूर्य गुण करहि बखानी ॥ तीनिभुवन जेहिनावैंमोथा ॥ सोप्रभुनाथअनाथकोनाथा ॥ जो यह कथापढ़ै मनलाई ॥ बाढ़ै धर्मपापछयजाई ॥

दोहा—याहि कथा मन लाइकै, टेक धरै व्रतध्यान ॥
जो इच्छा करिपढ़ै नर, सो पुरवहिं भगवान ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे कल्क्यवतार वर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥



अथ व्रतविधान प्रारंभः ।

चौपाई ॥ कार्तिकमासजोप्राणीरहई ॥ तीनपत्र तुलसीदललहई ॥ अगहनमासध्यानजोधरई ॥ श क्करचाटिकेभोजनकरई। पूसमासजोप्राणीरहई ॥ तीन दूबकेभोजनकरई॥ माघमासकरसुनहुविचारा॥तिलखं डीकोकरै अहारा ॥ फाल्गुनमासजोयहिविधि रहई। दहिखंडीकेढिगहोरहई॥ चैत्रमासकोसुनहु विचारा॥ घृतगंडूषकरिकरै अहारा॥ वैशाख मास जो प्राणी रह ई ॥ आमिलतासचाटिसोरहई ॥ ज्येष्ठमासकरसुनहु विचारा॥ तीन अंजुलिजलकरै अहारा ॥ आषाढमा सजोप्राणीरहई ॥ तीनमिरचको भोजनकरई ॥ सा वनमासयहीव्यवहारा ॥ कपिलामूत्रगंडूषअहारा ॥ भादौंमासजोयहिविधिरहई॥ गोबरखंडीकेढिगरहई ॥ क्वारमासकोसुनहु विचारा॥ चंदनखंडिकेकरै अहारा॥

इति श्रीसूर्यमहात्म्ये महापुराणे व्रतमाहात्म्यं समाप्तम् ।

इति सूर्यपुराणं समाप्तम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ गणेशपुराणप्रारम्भः ।

दोहा-एकदरदनगजवदनके, पदवंदौंकरजोरि॥ कृपा करहुशिवनंदन, बुद्धिवढ़ैजेहिमोरि ॥ १ ॥ व्यास आदिनरपुंगव, नारदआदिमुनीश॥ दिनकरब्रह्माशेष गुरु, सबकहं नावोंशीश ॥ २ ॥ चौपाई ॥ राजायुधिष्ठिर उवाच ॥ सुनोस्वामितुममदनगोपाला ॥ सदाकरौसंतनप्रतिपाला ॥ विपति हमारिविलोकहुस्वामी ॥ कृपासिंधुउरअन्तर्यामी ॥ छल कीन्हों दुर्योधन राजा ॥ जीति लीन्ह मम राज समाजा ॥ बनहिं निकारि दीन्ह दुख दाई ॥ कानन फिरौं दुसह दुख पाई ॥ तेहि प्रभुविनवौंकरजोरी ॥ केहि विधि पावौंराज्यबहोरी ॥ कृष्णकहा सुनु वचन नरेशा ॥ तुम हितलागि कहौं उपदेशा ॥ पूजोगणपतिमनचितलाई ॥ तेहिपूजे सबदुखमिटिजाई ॥ विघ्नहरनहैजाकर

नामा ॥ तेहि पूजे पैहौ विश्रोमा॥ दोहा ॥ कृष्ण वचनसुनिधर्मसुत, वोले पदशिरनाइ ॥ गणपति कव नसुनाथहैं, सोमोहिंकहौवुझाइ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ सुनौभूपपरमारथवादी ॥ गणनायकहैं देवअनादी ॥ शिवकोतनयविदितत्रैलोका ॥ तिन्हेंपूजिजगहोइवि शोका ॥ सुनिकहधर्मतनय करजोरी ॥ नाथ सुनो इकविनती मोरी ॥ गणपति आदि देवतुम कहेऊ ॥ शंभुतनयकेहिभांति सोभयऊ ॥ यहसमुझाइकहौय-दुनाथा ॥ बारबार नावौं पद माथा ॥ हँसि कह कृष्ण सुनो तुम भूपा ॥ गणनायककी कथा अनूपा ॥ आदि-देवकोउपारनपावैं ॥ वेदपुराणहु मुनिजनगावैं ॥ आ-दिकल्पते जगबिस्तारा ॥ तबते गणपतिपूज्यभुवारा ॥ दोहा ॥ तीनलोक सब पूजते, सुरनर आतम शेष ॥ शंभुतनयजेहि भांतिभे, सोअबसुनोनरेश ॥ ४ ॥ चौपाई—एकसमयगिरिवरकैलासा ॥ सहितउमा-शिवकरत बिलासा ॥ करिकछुरामकथागुणगाना ॥

महादेव तवगये अस्नाना॥ बैठीगिरिजासदनसुहाये॥ तेहिसमयनारदऋषिआये॥ उठिकैउमाविनयबड़ि कीन्हा॥ आसनदैचरणोदकलीन्हा॥धन्यभाग्यमुनि-आजु हमारे॥ कृपाकीन्हमुनिइतपगुधारे॥ केहि-कारण आगमनतुम्हारा॥ कहोऋषीश्वरकरतबि-चारा॥ तबबोलेनारदमृदुबानी॥ वचनएकममसुनहु-भवानी॥ दोहा॥ बहुदिनबीतेब्रह्मपुर, मनमहं भ-यउँ उदास॥ शिवदर्शनकेकारने, चलिआयउँकै-लास ५॥चौपाई॥ शंभुकहांगयेशैलकुमारी॥ सोतु-महमसोंकहौविचारी॥बोलीवचनउमाहितकारी॥ म-ज्जनकरनगयेत्रिपुरारी॥ तबनारदबोलेमृदुबानी॥ सुनोएकआश्चर्यभवानी॥ नरशिरमालशंभुउरजेऊ॥ तुमजानहुतेहिकरकछुभेऊ॥ उमाकहाप्रभुमैं नहिं-जानौं॥ आपसोंमिथ्याकहावखानौं॥ तब नार-दकहवचनरसाला॥ तुम्हरेशिरनकेरिहैमाला॥ तु-मसेशिवकछुअन्तरराखा॥ जोयहकथाकबहुँनहिं

भाखा ॥ जबआवैंशिवकरिअसनाना ॥ तबतुमपूँछेउसकलविधाना ॥ दोहा–असकहिनारदनाइशिर, चलेभवनहर्षाय ॥ मुनिवरकेरेवचनसुनि बैठिउमाबिलखाय ॥ ६ ॥ चौ०—यहि अन्तरशंकरचलिआए ॥ देखीउमाविषादबढ़ाये ॥ तबशंकर बोलेमृदुबानी ॥ केहिकारणदुखकीन्हभवानी ॥ उमाकहा शिवपदशिरनाई ॥ संशयएकअहैममसाँई ॥ तुह्मरेहृदयमुंडकीमाला ॥ सोकेहिकेशिरआहिकृपाला ॥ तबशंकरबोलेमुसकाई ॥ कवनेतुह्मरीमतिभरमाई ॥ मुँडमालममहृदयभवानी ॥ तासुकथातुमसुनोसयानी ॥ जबजबजन्मतुह्मारोहोई ॥ रामकृपासोंव्याहौंसोई ॥ समयपायजबत्यागहुदेहा ॥ तुमशिरकेसबमालजुएहा ॥ दोहा—जितनेजन्म भयेतव देहतजेकरिभोग ॥ तबतुमशिरकेमालकिय प्रियातुह्मारेशोग ॥ ७ ॥ चौ०—यहसुनिगिरिजावचन नउचारी ॥ सुनहुबचनममनाथपुरारी ॥ तुमअवता-

रंभयोप्रभुयेका ॥ केहिकारण ममजन्मअनेका ॥ मोरेमनप्रभुभयउअँदेशा ॥ सोसमस्तमोहिं कहौम-हेशा ॥ तवशंकरशुभगिरासुनाई ॥ हृदयसुमिरि-निजप्रभुरघुराई ॥ बीजमन्त्ररघुनायककेरा ॥ सो-ममहृदयमें करतबसेरा ॥ तातेमोरहोतनहिंनाशा ॥ बीजमन्त्रदियअलपप्रकाशा ॥ बीजमन्त्रतुमजा-नतनाहीं ॥ तातेजन्मधरेविपुलाहीं ॥ तबगिरि-जाबोलीकरजोरी ॥ विश्वनाथसुनुविनती मोरी ॥ दासीजानिकृपाअबकीजे ॥ बीजमन्त्र हमहूं कहँ-दीजे ॥ दोहा—शंकरबोलेवचनतब, सुनहुउमा-ममबानि ॥ विपुलजीवबसशैलतर, केहिबिधिक-हौंबखानि ॥ ८ ॥ चौपाई—जोयहमन्त्रसुनैकोउ-पावा ॥ ताकेकालनिकटनहिंआवा ॥ अजरअमर-सोहोइभवानी ॥ तातेकेहिविधिकहौंबखानी । तबगिरिजाकहगिरासुनाई ॥ देहुजीवप्रभुसकलभगा-ई ॥ तवशंकरचितयेकरिक्रोधा ॥ भागे जीवस-

कलचहुँकोधा ॥ आदिपिलजहाँतहँजाई ॥ सर्व-
जीवउड़िचलेपराई ॥ जीवरहितगिरिदेखि कृपाला ॥
बैठिबिछाइनागरिपुछाला ॥ जेहि तरुतरबैठे सुरना-
हा ॥ तहँवसिदीनकीरयकराहा ॥ दोहा—तेहिमें
अएडाएकधरि, करसोंगयो उडाय ॥ जोभावी सो-
नामिटै, सुनोयुधिष्ठिरराय ॥ ६ ॥ चौपाई—बी-
जमन्त्रशिवउमहिंसुनावा ॥ अएडाजीवसुनाचित
लावा ॥ कहतसुनतअण्डामुखभयऊ ॥ बारहवर्ष
बीतितबगयऊ ॥ जोजोमन्त्रउमहिंशिवदीन्हा ॥
सोसबअन्धसुनाओलीन्हा ॥ सम्बत द्वादशगयेसि-
राई ॥ माताकहँआईअलसाई ॥ सोवतजानिगिरी-
शकुमारी ॥ तबतेकीरदीन्हहुंकारी ॥ यहि अन्त-
रमहँकथासिरानी ॥ उमाजगाइकहाशिवबानी ॥
जहँ लगि सुनाकहौंसबलाई ॥ अन्तरलखि-
शिवकहाबुझाई ॥ कथापुनीतमैंकहाबखानी ॥
हुंकारहिकेहि दीन्हभवानी ॥ उमाकहाप्रभुमैंगइ-

सोई ॥ देखहु नाथजीवकोइहोई ॥ तबशंकर-
चितये धरिध्याना ॥ सुनावीजखगकीरनिधाना ॥
कर त्रिसूललेउठेरिसाई ॥ कीरदेखिउड़िचलेउप-
राई ॥ भागोखगव्याकुलअतिशोका ॥ भरमतफि-
रेउसकलत्रैलोका ॥ जहँजहँ खगशरनागतभाखा ॥
शिवद्रोहीकाहूनहिंराखा ॥ दोहा—पाछेशिवधावत-
फिरे,कियेक्रोधदुखमूल।जोभावीसोनामिटै, छूटै नहीं
त्रिशूल ॥१०॥ चौपाई-जबअतिकीरविकलमनभयऊ॥
उड़तैउड़तव्यासघरगयऊ । व्यास नारितेहिसमयभु-
आरा॥ ऋतुमज्जनकरिसूर्यनिहारा॥ ताहिसमयआई
जमुहाई ॥ वदनपंथखगगयउसमाई ॥ पाछेशंभु-
पहुंचेजाई ॥ भयदेखाइत्रियमाथनवाई ॥ कहैंशंभु
सुनु ऋषि कीनारी ॥ चोर हमारो देहु निका-
री ॥ मुनित्रियकहैनाथनहिंजानौ ॥ कहांचोरमैं
कहावखानौं ॥ तबहींबोलेशंभुसुजाना ॥ उदरतु-
म्हारेचोरसमाना ॥ दोहा—देनिकारिरिपु मोरहै,

करोबचनविश्वास॥ नाहींतोमुनित्रियअबहिं, करौं तुह्मारोनाश ॥ ११ ॥ चौपाई—ताहीमध्यव्यास ऋषिआये॥ देखिशंभुमुनिशीसनवाये ॥ समाचा सुनिकह्योमुनीशा॥ बचनहमारसुनो जगदीशा। त्रियाजानिप्रभुबधनहिंकीजे ॥ बालकहोइसोआप हिलीजे॥ मुनिकेबचनसुनत अतिहेतू ॥ भये प्रसन्नतबैवृषकेतू ॥ तबमुनिसोंहँसिकहेउमहेशू॥ दीन-पुत्रतोहितजोअँदेशू॥ होइपुत्रमहाविज्ञानी॥ तासुचरित्रतिहूँपुरजानी॥ हाथजोरिमुनिबिनती कीन्हा॥ होइप्रसन्नतबैशिवदीन्हा ॥ बरदेशंभुगयेकैलासा॥ मुनिहिंपुत्रकीउपजीआशा॥ दोहा—पूरेदिनबालकभयो, सुखतेसुनहुभुवाल॥ शुकाचार्यधरिनामतेहिं, राखोऋषीविचार॥१२॥ चौपाई—इहांशंभुआएकैलासा॥ बैठेजाइलागिअतित्रासा॥ देखत शिवहिंक्रोधभयोभारी ॥ तबहिंउमासोकहा विचारी॥ तुम्हरे सँग नहिंकार्यहमारा ॥ जाउजहां

मनरुचैतुम्हारा ॥ जबगिरिजाशिवआयसुपाई ॥
उठिकेचलींचरणशिरनाई ॥ शिवशिवभाषतउरअ-
भिलाषा ॥ गइँतहांजहँपुत्रविशाखा ॥ मातालखि
गुहकीन्हप्रणामा ॥ कहुजननी आईकेहिकामा ॥
सबप्रभावजबउमासुनावा ॥ षण्मुखहृदयशोचतब
आवा ॥ करिविचारबोलेसुनुमाता ॥ राखोइहां
क्रोधकरितांता ॥ पितावचनमोहिं मेटिनजाई ॥
कठिनकर्मकीन्हेउतुममाई ॥ दोहा—शिवप्रभावको
समुझिकै, कहीषडाननबात ॥ मातुतपस्याकरहुतुम,
सिद्धिकरहिंगेतात ॥ १३ ॥ चौपाई—सुतकेबचन
सुनतमनभाये ॥ उमाचलींकिष्किंधहिं धाये ॥ ते-
हिगिरिपरयकगुहासुहाई॥ तहांजाइशिवतपमनलाई॥
यहिविधिकालबीतिकछुगयऊ ॥ सुनउभूपआगेज-
सभयऊ ॥ एकसमयनिजदेहनिहारी ॥ उबटन
कीन्हगिरीशकुमारी ॥ तनुकामलजोछूटमुआरा ॥
सोउठायमनकीन्हबिचारा ॥ बालकरचिकीन्हेउह-

रिध्याना ॥ तनयसजीवकरौ भगवाना ॥ हरिइच्छा सोगयेनरेशा ॥ गणनायकतहँकीन्हप्रवेशा ॥ तनयशीसकरपरसेउजबहीं ॥ कीन्हसजीवरमापतितवहीं ॥ दोहा—तनयसजीवनदेखिकै, मनआनँदंतबकीन्ह ॥ अतिज्ञानीसुतहोहुतुम, माताआशिषदीन्ह ॥ १४ ॥ चौपाई—सुतसोंबोलीबचनभवानी ॥ सुनहुतातमानहुममबानी ॥ गुफाद्वारधरिबैठहुजाई ॥ हमकरिहैंशिवतपमनलाई ॥ भीतरआवनपावनकोई ॥ जोहमकहैंसुनोसुतसोई ॥ बालकबैठद्वारपरआई ॥ उमाकरततपशिवमनलाई ॥ यहिबिधिबीतिगयेउकछुकाला ॥ आगेसुनहुंकथानरपाला ॥ जबतेउमाशंभुकहँलागी ॥ जगीसमाधिअधिकअनुरागी ॥ ध्यानछूटशंभूतबजागे ॥ मनअनुमानकरनतबलागे ॥ कहाँगईधौंशैलकुमारी ॥ तनुकिजीवबिनभयेदुखारी ॥ दोहा—गिरजाहेरनकारने, शंभुगयेतजिधाम ॥ बनमहँगि-

रिखोजतफिरे, मन न लहेउविश्राम ॥ १५ ॥
चौपाई ॥ ॥ शरजन्मापहँगयेमहेशा ॥ लागीहर्ष
विषादअँदेशा ॥ दंडप्रणामपुत्रजबकीन्हा॥ आशी
र्वादतवैशिवदीन्हा ॥ तवशंकरबोलेमृदुबानी । दी-
खतातुमकतहुँभवानी ॥ अहैतातमैंवृथानभाखौं ॥
तुमविनआयुकिकिमिकरिराखौं ॥ गईविपिनतप
करनगोसाई ॥ थलमाताकाजानोनाईं ॥ सुनिशं-
करसँगतेहिलगाई ॥ खोजतचलेविपिनसमुदाई ॥
यद्यपिशिवजानतसवबाता ॥ हरिइच्छाराखंतसुर
त्राता ॥ खोजतकतहुँउमैनहिंपावा ॥ तबशिवहृ
दयक्रोधहोइआवा ॥ दोहा ॥ डमरूपटकाभूमि-
पर, तीनलोकअकुलान ॥ धेनुरूपहोइधरणितब,
विनयकीन्हबहुमान ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ कव-
नभांतिमैंचूकिउँसेवा॥ तेहितेक्रोधकीन्हतुमदेवा ॥
शंकरकहेउधरणिसमुझाई ॥ गिरिजाकहँतुमदेहुब-
ताई ॥ तबधरणीबोलीमृदुबानी ॥ किष्किंधागिरि

बसैभवानी ॥ सुनिशंकरसङ्गतनयलगाई ॥ खोज-
त चलोबिपिनसमुदाई ॥ गुफाद्वारयकदेखिकुमारा
पूंछाशिवतिहिंबचनउचारा ॥ गुफामध्यहै मातुहमा-
री ॥ करततपस्याशिवअधिकारी ॥ यहसुनिपेलि-
चलेत्रिपुरारी॥वालकदेखिक्रोधभयेभारी ॥ दोहा ॥
गुफाद्वारधरिठाढभौकरगहिशक्तिहिं जोहि ॥
बिना मातुकी आयसु जानन देहौं तोहि ॥ १७ ॥
॥ चौपाई ॥ यहसुनिपेलिचलेप्रियपाहीं ॥ वाल
ककोपकीन्हमनमाहीं ॥ क्रोधवंतसुतगिरिजा भारी
शिवपरतीक्षणशक्तिपँवारी ॥ आवतशक्तिदेखिखर-
धारा ॥ तेजशक्तिसोंकाटिनिवारा ॥ लखिशं
करशरतेजअपारा ॥ वालकधनुषकाटिशिवडारा ॥
मातासुनिकाटेधनुबारा ॥ गुफासोंनिकसीशक्तिअ-
पारा ॥ मारततनयनमानतहारी ॥ क्रोधवंततवभयेत्रि
पुरारी ॥ जौलोंशिवशिशुहतेप्रचारी ॥ तौलोंशिवयह
युक्तिविचारी ॥ देखायुद्धभयंकरनाना ॥ केतेशिव

भयेअनलसमाना ॥ गहित्रिशूलतेहिहतैप्रचंडा ॥
उड़िगामाथपड़ाब्रह्मंडा ॥ यहिबिधिबालकमारिम-
हेशा ॥ तनयसमेतगुफामैंपैसा ॥ जवहींउमाशंभुक
हँदेखा ॥ उठतभईतवप्रीतिबिशेषा ॥ दोहा—आसन
दैपदकमल गहि, चरणोदकतवलीन्ह ॥ शंभुबैठिआ-
सनसुभग, वहुबिधिआशिषदीन्ह ॥ १८ ॥ चौपाई ॥
उमाशंभुसनकहमृदुबानी ॥ सुनोताततुमसबसु-
खखानी ॥ गुफाद्वारशिशुहमबैठाये ॥ तासोंकेहि
विधिआवनपाये ॥ सुनतवचनतबबोलेशंकर ॥ ति-
हितोकीन्हासमरभयंकर ॥ विषमयुद्धतेहिंहमसन
कीन्हा ॥ ताकोमारिइहाँपगुदीन्हा ॥ सुनिगिरिजा
उठिवाहिरआई ॥ सुतकोदेखिपरीमुरझाई ॥ सुनो
नाथयहतनयहमारा ॥ जेहिविधिजियैसोकरौबि-
चारा ॥ तबपूँछाशिवउमाहिंभुवारा ॥ केहिप्रकारभा-
तनयतुम्हारा ॥ दोहा ॥ शंभुबचनसुनिपारब-
ति, जोरिपानिशिर नाइ ॥ जेहिबिधिउपज्योबाल

शुभ, सकलकहीसमुझाइ ॥ १९ ॥ ॥ चौपाई ॥ सुनिशंकरबोलेमृदुबानी ॥ बिनामाथकिमिजियैभवानी ॥ क्रोधितलागत्रिशूलप्रचंडा ॥ उड़िगामाथपड़ाब्रह्मंडा ॥ बोलीउमासुनौमभवानी ॥ कृपासिंधुउरअंतर्यामी ॥ आजुकभयोतनयजहँहोई ॥ मातापीठिदेहितहँसोई ॥ तेहिबालककामाथमँगावहु ॥ कृपाकरौममतनयजियावहु । तबशिवदूतनलीन्हबुलाई ॥ सकलकथाकहितिन्हहिं सुनाई ॥ आजुकेभयोतनयलैआवहु ॥ जननीपीठिदये जहँपावहु ॥ सोसुनिदूतदसौंदिशिधाए ॥ हेरिखोजिपुनिशिवपहँआये ॥ दोहा ॥ कहैंशंभुसनजोरिकर, सकलदूतशिरनाइ ॥ तेहिप्रकारकाबालहम, हेरिरहेनहिंपाइ ॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥ पुनिबोलेगणगिरासुहाई ॥ सुनौनाथकरिणीयकजाई ॥ सोबालक पीछेहैनाथा ॥ आज्ञाहोयतो आनौंमाथा ॥ आयसुपाइदूतबहुधाये ॥ करिसुतमाथकाटिलैआये ॥ मोद

लायजोड़ेउसोइग्रीवा ॥ भयोठाढ़प्रगटेउतबजीवा ॥ पुत्रदेखिमातासुखपायो ॥ आशिषदेशिवहृदयलगायो ॥ तनयदेखिसुखकीन्हभवानी ॥ शंकरसों बोलीमृदुबानी ॥ करिणीकोसुतदेहुजिवाई ॥ ऐसेइ नाथवहौदुख पाई ॥ तवशिवकिरकिटमाथमँगावा ॥ कृपाकीन्हहरतिन्हैंजिवावा ॥ दोहा ॥ किर किटकोआशिपदियो, जीवोतुमविनशीश ॥ तब गिरिजाअस्तुतिकियो, धन्यधन्यजगदीश ॥ २० ॥
॥ चौपाई ॥ उमाशंभुसँगलयदोउवालक ॥ चले जहाँजगकेप्रतिपालक ॥ पहुँचेहरिपुरसहितसमाजा ॥ तहाँविष्णुबैठेसबराजा ॥ तैंतिसकोटिदेवतहँ सोहा ॥ हरिकोरूपदेखिमनमोहा ॥ शंभुजायपद वंदनकीन्हा ॥ उमासहितचरणोदकलीन्हा ॥ सुर नरमुनिउठिकेकरजोरी ॥ सबपरशिवकैप्रीतिघनेरी ॥ शिवसुतयुगलदेखिसुखधामा ॥ परदक्षिणकरि कीन्हप्रणामा ॥ बालकदेखिदेवसुखपावा ॥ हरि

आशिषदैनिकटवुलावा ॥ हरिकेकरमादकयकरहा ॥ दोउवालकसोंप्रभुहँसिकहा ॥ जोसुततीनिलाकफि रिआवै ॥ आवैवेगिसोमोदकपावै ॥ शरजन्मातुर तहिंशिरनावा ॥ चढ़िकैरथहितुरतसोधावा ॥ दूसरसुततवयहविधिकीन्हा ॥ उठिहरिकेपरदक्षिण दीन्हा ॥ दोहा ॥ देखातवचुथिवंतगुण, देवन जय२ कीन्ह ॥ करमोदकअतिमोदसों तेहिवाल ककोदीन्ह ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ यहिअंतरषएमुख चलिआये ॥ हरिकेचरणशीसतिननाये ॥ देखामो दकवालककहाथा ॥ शरजन्माकोपेउनरनाथा ॥ मो दकलीन्हवदनपरमारा ॥ एकदंतगाटूटिभुआरा ॥ तवहरिहँसिकहगिरासुनाई ॥ षएमुखकहाकीन्हल-रिकाई ॥ वहवालकहैयेकसजाता ॥ दाँतटूटिगा कायहवाता ॥ तवगुहकहायुगलकरजोरी ॥ नाथ सुनोयकविनतीमोरी ॥ सवसंसारदौरिमैआयो ॥ वै-ठरहेउसोमोदकपायो ॥ हरिकहतुमसोंआगेआवा ॥

तेहिकारणइनमोदकपावा ॥ यहसुनिगुहअतिशंका कीन्हा ॥ तबहरिचरितलखावैलीन्हा ॥ हँसिकैज बहरिवदनपसारा ॥ तीनलोकतबदेखिकुमारा ॥ देखिषडाननलज्जितभयऊ ॥ तबहरिगुहैप्रबोधितकियऊ ॥ दोहा ॥ पुनिसबदेवनजोरिकर, प्रभुहिंकहासमुझाइ ॥ सोबालकबुधिवंतहै कृपाकरौ सुखदाइ ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ देवगिरासुनिप्रभुमतभाये ॥ तेहिबालककोनिकटबुलाये ॥ सावधानहोयसुनहुनरेशा ॥ नामधरेउहरिताहिगणेशा ॥ जानागणपतिदेवअनादी ॥ विधिहरिहरदियआशिखादी ॥ पूज्यनित्यतुमहोहुगणेशा ॥ जोपूजैतेहिमेटुकलेशा ॥ जोहमरेचरणनमनधरई ॥ सोप्रथमहिंतवपूजाकरई ॥ यहसुनिदेवनजयरकीन्हा ॥ सुमनवर्षातवपूजाकीन्हा ॥ स्वामीकार्तिकअतिहिंलजाई ॥ परेचरणगणपतिकेआई ॥ क्षमाकरोगणनाथगुसांई ॥ चूककरीसोमेटेउभाई ॥ गणपतिगु-

हैलाइउरलीन्हा ॥ शोचमिटाइआशिषादीन्हा ॥
॥ दोहा ॥ पूज्योगणकरजोरिकै, हरिचरणन
शिरनाइ ॥ अस्तुतिकरतअनेकविधि, सुनौयुधिष्ठि
रराइ ॥ २३ ॥ चौपाई—तुमत्रैलोक्यनाथप्रभुएका ॥
मायावशप्रभुजीवअनेका ॥ जेहिकाजमतुमआय
सुदीना ॥ सोतेहिभांतिरहैलवलीना ॥ जो
प्रभुहमपरदयाकरेहू ॥ तौप्रसन्नहोययहवरदेहू ॥
प्रथमहिं नाथभक्तितवपाऊँ ॥ पुनिदूसरवरजोमैंगा
ऊँ ॥ जोकोईपूजामनलावै ॥ मनवांछितफलसोप्र-
भुपावै ॥ बोलेप्रभुबिहँसेमृदुबानी ॥ सुनेहर्षिशिव-
सहितभवानी॥सुनिप्रभुबंदनकरिसबसेना ॥ निजनि-
जलोकगयेसबदेवा ॥ शंकरप्रभुपदउरमहँराखी ॥
बिदाभयेबिनतीबहुभाषी ॥ दोहा ॥ ॥ गुहगण
पतिप्रभुचरणगहि, चलेआशिषापाइ ॥ गिरिजास
हितमहेशतब, गमनकीन्हहर्षाइ ॥ २४ ॥ चौपा-
ई ॥ ॥ पहुँचेविश्वनाथकैलासा ॥ सुतनसहितशिव

परमहुलासा ॥ कहेउँकथामैंसकलनरेशा ॥ जेहिबि
धिसोशिवतनयगणेशा ॥ पूजेनितगणपतित्रैलो-
का ॥ तिन्हैपूजिजगहोबिनशोका ॥ तेहितेपूजोग-
णपतिराजा ॥ मिलहितोहिंसबराजसमाजा ॥ यहसु
निधर्मतनयशिरनावा ॥ धन्यकृष्णयहकथासुनावा ॥
अबजानेगणनाथपुरारी ॥ सुनतकथाछूटादुखभा-
री ॥ औरौएकलालसामोरे ॥ कहौकृष्णबिनवौंकर
जोरे ॥ प्रथमहिंकेहिपूजागणनाथा ॥ सोसमुझाइ
कहोयदुनाथा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ धर्मतनयकेबचनसु
नि, कहाकृष्णहरखाइ ॥ यहसबसादरभाषिहौं, सु
नहुंभूपमनलाइ ॥ २८ ॥॥ चौपाई ॥ ॥ प्रथमबर
तराजानलकियऊ ॥ ताकोसबसंकटमिटिगयऊ ॥
सुनतबचनकहधर्मकुमारा ॥ नलकहँकवनपरादुख
भारा ॥ सुनिहँसिकृष्णबचनपरकासा ॥ सुनहुभूप
सुंदरइतिहासा ॥ नवौखंडकोराजाभयऊ ॥ तेहिक-
छुकालराज्यसुखलियऊ ॥ एकसमयबिपत्तिपरि

आई ॥ छूटाराजदेशसमुदाई ॥ नारिसमेतविपिन कहँगयऊ ॥ तहँपरत्रियाविछोहिलभयऊ ॥ कतहुँ भूपकतहूँगइरानी ॥ महाविपिनकिमिकहौंबखानी ॥ दमयंतीवहुकरैविलापा ॥ मूर्छितपरीमहासंतापा ॥ गतमूर्छाहिरैवनमाहीं ॥ महाविकलतनु सुधिकछुनाहीं ॥ फिरतविपिनयकआश्रमदेखा ॥ बैठेऋषितहँपूजिविशेषा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दमयंतीमनधीरधरि, गहीऋषिनकेपाय॥करजोरेठाढ़ीभई, आरतबचनसुनाय ॥ २६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनहुनाथममबचनविशेषा ॥ तुमकहुँराजानलकोदेखा ॥ ऋषिनकहानहिंदेखेउँमाई ॥ सुनतवचनरानीमुरझाई ॥ भइसचेतआगेचलिरानी ॥ नदी एक तहँदेखिसथानी ॥ तहांअप्सरामज्जनकरहीं ॥ मंगल गानसुनतदुखटरहीं ॥ दमयंतीताहाँचलिआई ॥ पूछातिनसोंप्रीतिलगाई ॥ केहिकैपूजाकरौसयानी ॥ कहतचरितताकोमृदुबानी ॥ गणनायककीपूजाक-

रहीं ॥ तेहिपूजेसंकटदुखटरहीं ॥ त्रियापुरुषव्रतकरै जोकोई ॥ मनबांछितफलपावैसोई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
दमयंतीनिजदुखकहेउ, सकलभांतिसमुझाई ॥ सुनतअप्सराप्रीतिसों, बोलीबचनसुहाइ ॥ २७ ॥
॥ चौपाई ॥ गणपतिकोव्रतकीजैरानी ॥ मिलिहैंभूप सत्यममबानी ॥ दमयंतीगणपतिव्रतसाजा ॥ तिन केसँगपूजागणराजा ॥ पूजिअप्सरासुरपुरगई ॥ रानीहृदयबिचारतभई ॥ बहुदुखबिपिनअकेलीरानी ॥ जाउँपितागृहअसजियआनी ॥ तबउठिचलीपितागृहआई ॥ शोकसहितकछुदिवसगवांई ॥ श्रीगणनाथकृपातबकीन्हा ॥ आनिपासराजातबदीन्हा ॥ रानीराजाभयेइकठाई ॥ व्रतप्रभावसबबातजनाई ॥ सोईव्रतराजानलकियऊ ॥ ताकरसबसंकटमिटिगयऊ ॥ वैसहिराजभयोतबराजा ॥ छूटेताकेशोकसमाजा ॥ दोहा ॥ कथाबढ़नकेकारणहि संक्षेपैसमुझाइ ॥ औरकथागणनाथकी, सुनो

युधिष्ठिरराइ ॥२८॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मांधाता कोशलपुरराजा ॥ धर्मनीतिसबसकलसमाजा ॥ ताहिसमयनिशिचरअवतारा ॥ धुंधूसुततेहिनामभुआरा ॥ तेहिंसबलोकजीतिजबलीन्हा ॥ सुरनरनागसबहिंदुखदीन्हा ॥ सर्वदेवमिलिकरहिंविचारा ॥ केहिविधिजाइनिशाचरमारा ॥ सुरगुरुकहावचन सुनुमोरा॥ मांधातासोंकहौंनिहोरा ॥ तासोंकरिये युद्धविचारा ॥ यहिविधिजाइनिशाचरमारा ॥ सुर गुरुसहितदेवतहँ आये ॥ मांधाताकोकथासुनाये ॥ राजाकहाकहोगुरुमोंहीं ॥ केहिबलसोंमारौं सुरद्रोही ॥ सुरगुरुकहाभूपसुनिलीजे ॥ गणपतिकीपूजाव्रतकीजै ॥ युक्तिदेवगुरुदीन्हबताई ॥ तेहिविधिसोपूजामनलाई ॥ ॥ दोहा ॥ कृपाभएगणनाथकी, बलसमूहह्वैजात ॥ मांधातापरसन भये, धुंधूसुतहिंनिपात ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ यहइतिहाससकलजगजाना ॥ तातेंमैंसंक्षेपबखा

ना ॥ गणपतिउहैकृपाकरिनाना ॥ धुंधुमार असनामबखाना ॥ औरकथासुनुधर्मकुमारा ॥ वृत्रासुरसोंसुरपतिहारा ॥ गुरुउपदेशसुरेशहिं दीन्हा ॥ तबगणपतिकीपूजाकीन्हा ॥ व्रतकेफलपायेउबलभारी॥मारेउवृत्रासुरहिं भचारी ॥ औरकथा सुनुधर्मकुमारा ॥ जो सुनि कटैसकलदुखभारा ॥ महादेवकहँ संकटभयऊ ॥ त्रिपुरादैत्यमहादुखदयऊ ॥ गिरिजालेनत्रिपुरमनकीन्हा ॥ तबशिवगणपतिपूजाकीन्हा ॥ मारादैत्यमहाबलहारी ॥ तब तेनामपरोत्रिपुरारी ॥ पुनिव्रतकीन्हषडाननबीरा ॥ सावधानहोसुनुमतिधीरा ॥ तारकअसुरभयउप्रचंडा ॥ जीताकोपिसकलब्रह्मंडा ॥ गुहगणपतिपूजाअनुरागी ॥ हतेउतारकहिंवारनलागी ॥ दोहा ॥ औरकथाअबभाषिहों, चितदैसुनहुनरेश ॥ रुक्मिणिसुततेकारणै, पूजादेवगणेश ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ व्रतफलतेहिं प्रद्युम्नसुतभयऊ ॥ अति

आनँदशोभाफललयऊ ॥ पुनिव्रतकरिपूजागणरा-
जा ॥ रत्नजडितआरतिसोसाजा ॥ चीररोपिपुनिक
हेउनरेशा ॥ पुत्रदानतवदीन्हगणेशा ॥ त्रियासहि
तप्रद्युम्नघरआये ॥ रुक्मिणितनयदेखिसुखपाये ॥
औरौसुनहुधर्ममतिधीरा ॥ सोसुनिकटैसकलपुनि
पीरा ॥ माहिष्मतीनगरसुखधामा ॥ नीलध्वजरा
जाकरनामा ॥ तापुरवासीब्राह्मणएका ॥ ताकेयक
सुतसोअविवेका ॥ धेनुवत्सपुरकेरचरावै ॥ ब्राह्म-
णिभिक्षामांगिलेआवै ॥ यहिविधिसोंकछुकालवि-
तावा ॥ पुनितीयागणपतिहिं मनावा ॥ व्रतप्रभाव
सोंसंपतिपावा ॥ कछुकज्ञानबालककहँआवा ॥
॥ दोहा ॥ नीलध्वजकीसभामहँ, बालकआवै
जाइ ॥ ताहिदेखिकैभूपसुनु, प्रीतिकरहिंअधिकाइ
॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ जादिन सभा न बालक
जावे ॥ राजहिं नींदनभोजनभावे ॥ बहुअधिकारी
द्विजसुतजाना ॥ अतिअभिमानहृदयमहँआना ॥

एकदिवसब्राह्मणिव्रतकियऊ ॥ गणपतिकीपूजमान
दियऊ ॥ तेहिअंतरताकरसुतआवा ॥ मातासोंतब-
बचनसुनावा ॥ क्षुधालागिमोहिंमातबहूता ॥ जन
निकहाधरुधीरजपूता ॥ गणपतिकीपूजाकरिलेहुं ॥
तेहिपीछेतोहिंभोजनदेहुं ॥ तबवहबालकउठारिसा
ई ॥ माताकेसन्मुखचलिआई ॥ दोहा—गण
पतिकीप्रतिमाहनी, लातनदीन्हगिराइ ॥ मूरति
पटकी क्रोधकरि पुनिबोलामुसुकाइ ॥ ३२ ॥
चौपाई ॥ मूरतिपूजिपढ़ैकछुटोना ॥ पूजाछोड़ि-
बैठुयककोना ॥ यहकहिगयउसभानृपकेरी ॥ भ-
लअनभलनाहिंनमनहेरी ॥ तबबोलीमाता अकुला-
नी ॥ पूजासाजिउठालैआनी ॥ थापितकैपूजाम-
नलावा ॥ करजोरेगणपतीमनावा ॥गणपतिकेद्वि-
जसुतपदमारा ॥ ताकरफलअबसुनहुँअपारा ॥ जब
ब्राह्मणिसुतगोनृपद्वारे ॥ सभासूनिलखिमहलसि-
धारे ॥ भीतरजाइसोकौतुकदेखा ॥ शयनकियेदं-

पतिकोलेखा ॥ देखतद्विजसुतअतिभयमाना ॥ भ्रम
वश बिसरे पगकेत्राना॥ दोहा॥अपने पदकी पान-
हीं, छोड़ी भूप अवास॥ राजाकीपगपनहिलै आ-
यउनिजपितुपास ॥ २३ ॥ चौपाई—भोरभये नील-
ध्वजजागे॥ चरणत्राणलखिकहवेलागे ॥ काकी
पदकीहैपदत्राना ॥ रानिकहाप्रभुमैंनहिंजाना ॥
सुनुतियद्विजसुतताकीआहीं ॥ नीलध्वजबोलेहु मन
माहीं ॥ तुरंतैबालकपकरिमंगावा ॥ पुनिचंडालन
भूपबोलावा ॥ कहतेहिद्विजसुतआनमँगाई ॥ या-
हिबिपिनमहँमारहुजाई ॥ बालकलैचंडालसिधाये॥
समाचारपुनिमातापाये ॥ तबगणपतिकोकीन्हे
सिध्याना ॥ करजोरेबिनवैबिधिनाना ॥ कृपा
करौगणपतिलखिसेवा ॥ विप्ररूपधरिप्रगटदेवा ॥
गयेजहाँनीलध्वजराजा ॥ देखिविप्रनिजअस्तुति
साजा ॥ करिप्रणामनृपसीसनवावा॥ आशिषदैद्विज
वचन सुनावा ॥ दोहा ॥ द्विजसुतकीननपाप

कह्यु, कहिमृदुमीठीबात ॥ बिनअपराधहिंसुनो
नृप, बालककरियनघात ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥
सोसुनिराजातुरतबोलाये॥ विप्रजानिकैसीसनवाये ॥
विप्रतनयनिजमंदिरगयऊ ॥ देखिमातुतबकियो
बधाऊ ॥ धन्यदेवगणनाथगोसांई ॥ दीन्हाबालक
मोरछोड़ाई ॥ नृपघरआवैजायसोबालक ॥ तैसी
प्रीतिकरैनरपालक ॥ सोबालकमतिमंदगोसाई ॥
गणपतिमहिमानाहिंबुझाई॥सोकारणसुनुधर्मकुमारा
जसबालककाभाव्योहारा ॥ एकदिवसनृप को सुत
तहवाँ ॥ ब्राह्मणिसुतचलिआवाजहवाँ ॥ मुख
मज्जनकरिभूपकुमारा ॥ जलभाजनलियब्राह्मणि
वारा ॥ भैअनकृपानाथगणकेरी ॥ ताकरफलअब
सुनोबहोरी ॥ मुखमज्जनछूरीतबभयऊ ॥ जलको
पात्रमाथहोइगयऊ ॥ राजपुत्रतहंभयोअलेखा ॥ य
हकौतुक पुरबासिन देखा ॥ दोहा ॥ द्विजसुतदे-
खिचरित्रयह, मनमहंअतिभयमान ॥ ठाढ़विचारै-

मनहिंमन, काहकीन्हभगवान ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥
सबैकहैंयहभयउअलेषा ॥ जायभूपसोंकहियविशेषा
ब्राह्मणितनयकुँवरकहँमारा ॥ महाराजकाकरिय
विचारा ॥ सुनिकैभूपबिपुलदुखमाना ॥ कहरि
सायतोरलेउँआनो ॥ मारोयाहिवारजनिलावहु ॥
ताकरमुखजनिमोहिंदिखावहु ॥ सुनतवचनतबमारन
धाये ॥ समाचारतबमातापाये ॥ व्याकुल है
सुमिरेउगणदेवा ॥ जोरीपाणिबिनयकरिसेवा ॥ अहो
नाथगणनाथगोसाईं ॥ वालकदानदेहुमोहिंधाई ॥
मोहिंसबभाँतिभरोसतुह्मारा ॥ धावहुनाथन लावहु
वारा ॥ आरतहरणकृपाअबकीजै ॥ संकट काटि
पुत्रमोहिंदीजै ॥ आरतगिरासुनीगणराई ॥ धरि
द्विजरूपप्रगटभयेआई ॥ ब्राह्मणिकहिगणपति समु
झावा ॥ तुमसुतकर्मकेरफलपावा ॥ हमकहँकीन्हेसि
चरणप्रहारा ॥ सोफलभुगतैअधमगँवारा ॥ दोहा ॥
ब्राह्मणिजानेगणपती, परीचरणकर जोर ॥

अस्तुतिकरतअनेकविधि, सुनहुंवचनप्रभु मोर
॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ यहबालकहैपरम अज्ञाना ॥
तापकरकृपाकरौभगवाना ॥ बोलेगणपति गिरा
सुहाई ॥ देहौंबालकतोरछुड़ाई ॥ यहकहि
गणपतिआयेतहवाँ ॥ संकटमेंद्विजसुतहैजहवाँ ॥
चंडालनसोंकहगणनाथा ॥ किमिकारणकाटौशिशु
माथा ॥ सबदूतनसमुझावाभेवा ॥ राजकुमारह-
ताइनदेवा ॥ बोलेगणपतिबचनविशेषा ॥ राजकुमार
मेंखेलतदेषा ॥ धायेतब राजा पहँ आये ॥ माथनायकै
कथासुनाये ॥ सुनिमन अचरज कीन्हभुआरा ॥
कहाबुलावहुराजकुमारा ॥ आयसुपायसोसेवकधाये ॥
नृपसुतवेगिभूपपहँआये ॥ देखितनयभूपतिसुखपावा ॥
दूतनसो सब वचन सुनावा ॥ तेहिंनहिंमारहु बेगि-
सिधावहु ॥ ब्राह्मणितनयइहाँलैआवहु ॥ दोहा ॥
सुनितबधायेविपिनकहँ, जात नलागीबार ॥ ब्राह्म-
णिकोसुतसंगलै, आये जहांभुआर ॥ ३७ ॥

चौपाई ॥ देखिभूपअति आदर कीन्हा ॥ सँगबि-
ठायचरणोदकलीन्हा ॥ यहिकाबधनचहादुइबारा॥
बचियहजायसोकवनविचारा ॥ यहिकी मातुयोग
कछुजाना ॥ तासों बालक बचोनिदाना ॥ अस-
बिचारिकै दूतपठाये ॥ ताकी मातातुरतबुलाये ॥
आइ ब्राह्मणीदेइ असीसा ॥ प्रथमैं भूपनवाये
उसीसा ॥ ब्राह्मणितनयदेखिसुखपाये ॥ तबहीं
राजा बचन सुनाये ॥ कछुचेटकतुमजानुसयानी ॥
सोबिधि हमसों कहहु बखानी ॥ कहै ब्राह्मणीसु
नोहोराजा ॥ मैंजानोंगणपतिकी पूजा ॥ दोहा ॥
गणपतिकी पूजाकरौं, ध्यानधरौं मनलाय॥ परसन
होतेभूपसुनु, सकलकष्टमिटि जाय ॥ ३८ ॥
॥ चौपाई ॥ सत्यसत्यराजा करिमानी ॥ ब्राह्मणि-
सोंबोलामृदुबानी ॥ केहिबिधिपूजोंगणपति राई ॥
तब ब्राह्मणि कहिकै समुझाई ॥ कनकवसन
भरिबिपुलमँगावा ॥ ब्राह्मणिको देपदशिरनावा ॥

तनयसमेतपरम सुखपाई ॥ आशषिदै ब्राह्मणिघर आई ॥ गणपतिकी पूजातबभयऊ ॥ सब सुखभयउ सबैदुखगयऊ ॥ व्रतप्रभावनीलध्वजराजा ॥ सुखपतीसुखसंपतिभ्राजा ॥ दोहा ॥ तातेसुनहु धर्मसुत, व्रतकरिपूजुगणेश ॥ बिघ्नहरणहैनामतेहि, मेटत सकलकलेश ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ सुनिकै कथा जोरिकैहाथा ॥ धर्मतनयतबनायउमाथा ॥ धन्यधन्यतुमधन्यमुरारी ॥ मोपरकृपाकीन्हअति भारी ॥ गणपतिकी सबकथासुनाई ॥ मोरेतनके पापमिटाई ॥ असप्रभुकृपाकरो मनलाई ॥ ताकीबिधि कहिये समुझाई ॥ हरिबोलेसुनुराजभुआरा ॥ व्रतबिधि कहौं सकल सुखकारा ॥ भादोंमासचौथिजब आवै ॥ तादिनव्रत आरंभकरावै ॥ व्रतआरंभिकरै असनाना ॥ बहुरिकरै पूजा भगवाना ॥ काहुदेवकीकरैननिंदा ॥ मनमहँसुमिरैबालगोविंदा ॥ रविअस्ताचलकोजबजावै ॥ तबगणपति पूजामनलावै ॥

॥ दोहा ॥ गौगोवरसौंलीपिकै, चौकाचारुपुराय ॥
कलशधरैवेदीकरै, अच्छतदूबचढ़ाय ॥ ४० ॥
चौपाई ॥ पाटाधोयधरैसोइआगे ॥ पूजैगणपति
मनअनुरागे॥ मूर्तिकनककुंकुमकीहोई॥ की पषाण
पुतरीकीसोई ॥ तेहिमूरतिकी पूजाकरई॥ मालचढ़ा
यपुसुपशिरधरई ॥ धूपदीप आरति करिनाना ॥
विधिसों आनिधरैपकवाना॥ यहसबकरिअँचवनक
रवावै॥ तांबूलपुनिआनि चढ़ावै ॥ जोविधिबारह
मासकीहोई ॥ तिहिंविधिसों आवहिदेसोई ॥ पाछे
कथासुनैमनलावै ॥ जबलगिचंद्रउदयकरि आवै ॥
चंद्रअरघदैकरेप्रणामा ॥ फेरिविसर्जनकरैसुधामा ॥
पुनिब्राह्मणहिंदच्छिणादेई ॥ आशीर्वादताहिसनलेई॥
त्रियापुरुषव्रतधारैकोई ॥ मनवांछितफलपावै सोई ॥
॥ दोहा ॥ यहिविधिव्रतधारणकरै, पूजैदेवगणेश ॥
जोविधिबारहमासकी, सोअबसुनोनरेश ॥ ४१ ॥
॥ चौपाई ॥ भाद्रचौथिपूजामनलावै ॥ सुमन-

तरुवरकेरमँगावै ॥ घृतकेसंगहोम जोकरई ॥ तीनिजन्मभवसागरतरई ॥ मासकुँवार चौथिजब आवै ॥ दूबहरीके दलनमँगावै ॥ घृतसँग होमकरै जोकोई ॥ सबविधिसों फल पावै सोई ॥ कार्तिकमासचौथिजबआवै ॥ उड़ददालिघृतहोम करावै ॥ पूजापूरणताकी होई ॥ सकलसिद्धिफलपावै सोई ॥ अगहनमासचौथिजबआवै ॥ कटसरयाके फूलमँगावै ॥ घृतसोंहोमकरैसुतपावै ॥ रिपुनाश कदुखनिकटन आवै ॥ दोहा ॥ पौसमासकी चौथिको, बंशपत्रघृतहोम ॥ वश्यहोयराजा प्रजा सिद्धहोयँसबकाम ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ माघचौथि अँधियारीआवै ॥ व्रतकरिसांभरनोनमँगावै ॥ घृत-सँगहोमकरै नरकोई ॥ राजावशताकेनित होई ॥ फाल्गुनकृष्णचौथिकीराती ॥ अमिलतास कीआनै पाती ॥ सैंधोघृतमोंहोमकरावै ॥ पटमोहिनीभूप सोंपावै ॥ चैतमासचौथिजबआवै ॥ तबनिंबुवाके

बीजमँगावै ॥ घृतसंगहोमकरै जोकोई ॥ बाँझत्रिया सुतवंतीहोई ॥ मासवैसाखचौथिजबआवै ॥ राईके वलिसुमनमँगावै ॥ घृतसंगहोमकरै नरकोई ॥ होयसिद्धिफलपावैसोई ॥ ज्येष्ठचौथिअँधियारीआवै ॥ सुमनसेवतीकेरमँगावै ॥ घृतसंगहोमकरै चितलाई ॥ ताके बुद्धिहोइ अधिकाई ॥ मास अषाढचौथिजब आवै ॥ कमलफूलकरलेइ मँगावै ॥ युक्तिसमेतहोमजोकरई ॥ सोप्राणीपुनिदेहनधरई ॥ श्रावणमास चौथिजब आवै ॥ कुसुमसेहरुवाकेरमँगावै ॥ सावधानहोमघृतकरई ॥ दैत्यदेवताकेवशहोई ॥ दोहा ॥ यह विधिवारहमास की, कहेउँ भूपसमुझाय ॥ विधिसोंपूजेगणपती, सकलकष्टमिटिजाय ॥ ४२ ॥ ॥ चौपाई ॥ सुनिकै कथाधर्मशिरनावा ॥ धनिगोपालयह कथा सुनावा ॥ जोविधिकृष्ण कहा व्रतनीती ॥ तेहिविधिसोंनृपकीन्हप्रतीती ॥ गणपतिकीभइ कृपाअपारा ॥ माराशत्रुलागिनहिं

बारा॥सुखनसमेतराजतबकीन्हा ॥ गणपतिकेरिद
यालखिलीन्हा ॥ गणपतिकेरिबातचित आई ॥
जोमनसाकरिसोफलपाई ॥ ऋधिसिधिसंपतिसुखहु
अपारा ॥ धरणिधामसुतसंपतिधारा ॥ नारीपुरुष
करैव्रतकोई ॥ सकलसिद्धिफलपावै सोई॥ जोयह
कथासुनै अरुगावै ॥ अंतकाल सुरपुर पहुँचावै ॥
॥ दोहा॥ श्रीगणपतिकी कथायह,प्राकृतमध्यविशाल॥
यथाबुद्धिभाषारचेउ, जड़मतिमोती लाल॥ ४४ ॥

इति श्रीगणेशपुराणं सम्पूर्णम् ॥

अथ श्रीकरुणाष्टकप्रारंभः।

श्रियैनमः ॥ छंदमत्तगजेंद्र ॥ नाथविनयसुनिये
जुदयानिधिजानिस्वदासकृपाकरियेजू ॥ ज्योंजुविभी
षणपैसुढरे रमणेशहुपैअबत्योंढरियेजू॥ कीजियनाथ
अजामिलकीसुधिमोअघकोनहियेधरियेजू ॥ मैं

अघमोचनजा।निगह्योंपदसोकरियेअघकोहरिएजू॥१॥
छन्दद्रुमिला॥ शबरीपरनाथ करीकरुणा वहकौनकु-
लीनकहौंकिनजू ॥ तुमवानरभालुनिहालकिये कि-
तवैदिकयागकियेतिनजू ॥ गतिगीधहिंदीन्हिसुकी-
न्हिक्रिया नितहीनितमांस भख्योजिनजू ॥ रमणेश
पुकारतआरतह्वैसुनिये वहुबीतिगयेदिनजू ॥ २ ॥
जिहिंपापहत्याहरिवालिवही अघनाथसुकंठकरैनित-
जू॥ पुनिसोइबिभीषण कीन्हिकुचालकृपालुननेकु-
धरी चितजू॥ नहिं दासनकोअपराधगिन्यो तुम
दीनदयालुकियोहितजू ॥ अतिआरतदीनपुकारतहै
रमणेशकिबेरगयेकितजू ॥ ३ ॥ छंदचंद्रकला ।
कुबरीप्रभुकौनकुलीनरही जिहिंसोंरतिकीन्हिस्वलोक
पठाई॥ उपनैनभयोकबग्वालनको जिनकोव्रजमें नित
जूठनखाई॥ शुभसाधनव्याधकियोकहजाहि पठाय
हुधामविमानचढ़ाई॥ अतिकोमलचित्तसदाअसक्यों
रमणेश कीवेरधरी निठुराई॥ ४॥ कबगोपबधूपति

धर्मवतीजिनसोंकरिप्रीतिदियोनिजधामा ॥ नय
तीजुअजामिलभक्तकियोगणिकाकबजाइवसीशुभठा-
मा ॥ भरिअंकमिल्योजिहिसोंउठिकै नहिंनाथहतो
धनवानसुदामा ॥ रमणेशकिनाथसुनौविनती फुर-
कीजियआजुदयानिधिनामा ॥ ५ ॥ दुर्योधनके
पकवानतजे छिलकानिजभक्तसुगेहमेंखाये ॥ यह
वानि तुम्हारिसदाअजुहै निहकिंचनहीतुमकोनित
भाये ॥ हरिदीनदयालुगरीबनिवाज सुलोकहुवेदचहूं
युग गाये ॥ रमणेशविभोअतिदीनअहैं नमिलैजगमो-
सम खोजलगाये ॥६॥ अपराधगनौममनोजुखुनौतजिकै
पतिधर्मभईतबमीरा ॥ शुचिताजगमेंसुप्रसिद्धभली
करमाकलिमेंब्रजमेंजुअहीरा ॥ रइदाससुवैदिकपूजक
हैकबनेमगह्योवनमेंबसिकीरा ॥ रमणेशहुयाचतहैहरि
सोंरघुवीरहरौममसंसृतिपीरा ॥७॥ तुमहींगतिहोतुमहीं
पतिहोतुमहींधनहोतुमहींजनहोजू ॥ तुमहींगुणअवगुण
ग्राहकहोतुमहींभगिनीयुवतीजनहोजू ॥ तुमहीममित्र

पितातुमहींतुमहींतनुहौतुमहींमनहौजू ॥ रमणेशकरैं कहलौंविनतीतुमहींमयसर्वसजीवनहौजू ॥८॥ दोहा॥ यहकरुणाअष्टकपढैं, जोजननितमनलाइ ॥ सीता पतिदशरथसुवन, ताकीकरैंसहाइ ॥

इति श्रीकविरमणेशकृतं करुणाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्रीसीतारामचंद्रोजयति ॥



विनती-सवैया।

आजुलगेबहुकीन्हउपाइतहांकबहूंसुखनेकुनपायो॥योग विरागकियेतपतीरथ भांतिअनेकनरूपबनायो॥ जन्म अनेकगयेरघुनाथनरूपतुम्हाररहियेमहँआयो ॥ देखि दशाअपनी दशहूँदिशिहेरिरहेशरणागतआयो ॥१॥
अंगविभूतिलगाइकेचाम बिछाइकेध्यानकरयोकबहूँ ॥ मूंड़मुड़ाइबनाइसुवेषकहावतीसिद्धिफिरयोतबहूँ ॥ ऊरधबाहुतपादिकियेतहँमानकहूंअपमानकहूँ ॥ श्रीरघुवीरदयातुम्हरीविनवौरघुनाथदुखी अबहूँ ॥२॥

डूबतहौंदुखसिंधुमँझारसियावरजूगहिबाहँउबारो ॥
जोनगहोकरजातबहोतवश्रापुहिकोजु परिश्रमभारो॥
तातेनकीजै विलंबदयानिधि नाथपुकारतहौंचितधा-
रो ॥ श्रीनृपराजकिशोरप्रभोकरुणा करिके रघुनाथ
निहारो ॥ २ ॥ रागधनाश्री॥ रघुवरराखहु विरद
तुम्हारी ॥ मैं अतिअधम अधम अधमनते आयों
शरण तुम्हारी ॥ वाल्मीकि आदिक भाषतहरिशर
णागतअघहारी ॥ जोमैंपापकीन्हअघमोचनशारद
सकैन उचारी ॥ तो अवतवशरणै आयों श्रीवरर
मण विहारी ॥ * इति विनती सवैया * ॥

अथ सनेहलीला प्रारम्भ ।

दोहा॥ एकसमयब्रजवासकी, सुरतिकरीहरिआय ॥
निजजनअपनोजानिकै, उद्धवलियेबुलाय ॥ १ ॥
श्रीकृष्णवचनऐसेकह्यो, उद्धवतुमसुनिलेहु ॥ नन्दय
शोदाआदिदै, जाब्रजकोसुखदेहु ॥२॥ ब्रज बासी

वल्लभसदा, मेरेजीवनप्रान ॥ तातेंनिमिषनबीसरौ
मोहिंनंदरायकीआन॥ ३ ॥ हमउनसोंऐसो कह्यो,
आवैंगेरिपुजीति ॥ अबतोरेकैसेबनैं, पितामातुसों
प्रीति ॥४॥ उद्धववेव्रजयोपिता, उनको मेरोध्यान ॥
तिन्हैंजायउपदेशद्यो, पूरणब्रह्मसुज्ञान ॥५॥ पागो
अपनेअंगको, कीटमुकुट पहिराय ॥ श्रुतिकुण्डल
मालादई, अपनो वेषबनाय ॥ ॥ ६ ॥ अरु अप
नोरथसाजिके, सूतसारथीदीन्ह ॥ उद्धवचरणप्रणाम
करि, रथ आरोहणकीन्ह ॥७॥ विद्यावंतविवेकयुत
शीलवंतगुणशुद्ध ॥ चतुरचिह्नजानत सबै,
योप्रवीनश्रीउद्ध ॥ ८ ॥ परमसखा श्रीकृष्ण
को, सुरगुरुशिष्यप्रवीन ॥ तातेलायक पाठयो, ब्रज
को आयसुदीन ॥ ९ ॥ रथहिंजोति उद्धवचले, अति
अनंदमनकाम ॥ दिनकरधरप्रापितभये, गयेनंदके
ग्राम ॥ १० ॥ चहुँदिशि गोधन आवहीं, वृषभानु
कीगाय ॥ बच्छवचन लागत भले, मानोथानसुराय ॥

॥ ११ ॥ अपनी अपनी मंडली, मिलेग्वालकेवृंद ॥ मुरली मधुरवजावहीं, गावहिंगुणगोविंद ॥ १२ ॥ गोदोहनमोहनत्रियाटेरतलैलैनाम ॥ गोरजउड़ि अंत्ररलगी छविपावतनँदग्राम ॥ १३ ॥ तब उद्धवरथहांकिकै, गयेनंदकी पौर ॥ नन्दयशोदादेखिकै, सन्मुखआये दौर ॥१४॥ उद्धवरथतेउतरिकै, मिलेनंद को धाय॥ नयनसजलजलसोंभरे, आनँदउर न समाय ॥ १५ ॥ करगहिलैगृहकोचले, सुतसनेहकेभाय॥ अशनवसनवहुविधिदिये, निजमन्दिरपधराय ॥१६॥ अरुचंदनवहुपुष्पजल, धूपदीपइत्यादि॥ विधिपूर्वक पूजाकरि, सुखशय्याकुसुमादि ॥१७॥ नंदयशोदा प्रेमसों, पूछनलागेबात॥ शूरसेनके पुत्रको, कहो परम कुशलात ॥१८॥ जिनकेषट बालक हते, बन्दिपरेबेकाज॥ केतकदिनदुःखितभये, दुष्टकंसकेराज ॥१९॥ भली भईसेनासहित, कृष्णकियोहतकंस॥ तादिनतेसुखपावहीं, मातुपितायदुवंश॥२०॥जाके अष्टादशत्रिया, राम-

कृष्णसुतदोय ॥ सरव रिता वसुदेवको, कहौकौनपै-
होय ॥ २१ ॥ देवनके मंगल भए वासुदेव जन-
मंत। घरघर प्रति सव सुरनके दुन्दुभि बजे अन-
न्त ॥२२॥ पटरानीदेवक सुता, सुकृतपरमकृपाल ॥
ताकेगृहप्रगटतभये, श्रीकृष्णकंसकेकाल॥ २३ ॥ उद्ध-
वतातेकीजिये, उनकोसुमिरनध्यान॥ अबकी धौंकब-
देखिहौ, अनँदवधायेकान ॥२४॥ सुफलकसुतआयेइ-
ह्यां, रामकृष्णलैजांन॥ तवतेतनुगति दोभई, यहाँ देह-
ह्यांप्रान ॥२५॥ नयननअुदाजल भरे, कंठश्वास नहिं-
लेत॥ कहि कहि वातैं पुत्रकी हीयोभरिभरिदेत ॥ २६॥
निमिष निमिष महँझगरते, मोसोंदोऊभ्रात ॥ अवकी
धौंकबदेखिहौं, चोरिचोरि दधिखात॥ २७ ॥ मोति
नकीमालागरे, राजहँस गतिदोर ॥ यह अंगनकह
देखिहौं, रामकृष्णकीजोर ॥ २८ ॥ पीतांबरको ओ
ढ़नो, अरुबाजत मृदुबेनु ॥ अवकी धौंकबदेखिहौं,
बनहिंचरावतधेनु ॥ २९ ॥ वे तोभूखेहोतहैं, प्रातकाल

कीबान॥तहाँकहौकोराखिहै, घृतसोंरोटीसान ॥३०॥
बातकहौंइकदिवसकी, तुमसोंहेतुसुनाय ॥ गादहि
कतंवनाचलै, चितैचितैरहिजाय ॥ ३१ ॥ उद्धवपय
उफलनलग्यो, हुंदौरीतजिअंग ॥ पीछेतेमेरा लला,
दधिकोभाजनभंग ॥ ३२ ॥ मोहिंदेखिअतिरिसभई,
योरेदधिकेकाम॥उखलसोंआनँदघन, मैबाँधेगहि-
दाम ॥ ३३ ॥ तादिनतेखटकत सदा, मेरोयहअवि-
वेक॥ ऐसी कहौकोसंभवै, सुतसोंअवगुणएक ॥३४॥
तबउद्धवऐसेकहैं, सुतकेसुनौसँदेश ॥ उनकोनाहिं-
नवीसरी, याव्रजकोआवेश ॥३५॥ तुमहिंपायँलागन
कह्यो, जलसौंनयनभराय ॥ मैयामोहिंनाबीसरो,
बड़ोकियोपयप्याय॥३६॥जादिनते आयेइहाँ, छाँड़्यो
गोकुलगाँव ॥ तादिनतेकोउनाकहै, कान्हाकहंब-
लिजावैं ॥ ३७ ॥ जबहमतुमतेबिछुरके, आयेमथु-
रामाँझ ॥ मैंकबहूंनाहीं पियो, घियाप्रातअरुसाँझ॥
॥ ३८ ॥ अरुतुमबाबानंदसो, ऐसीकहियोजाय ॥

वेतुमनीके राखियो, धोरीधुमरीगाय ॥३९॥ मनवचक-
र्मसहेतधरि, करिहौं पूरणकाम॥ आवेंगेदिनपाँचमें,
हमभैयाबलराम ॥ ४०॥ राजपाटसिंहासनो, खान-
पानसुखदेत ॥ याब्रजसुखपावतभले, बनमेंबटसंकेत
॥ ४१ ॥ बातकहतबीतीनिशा, तमचरकीन्होगान ॥
मानोगर्जनमेघकी, घरघरदधीमथान ॥ ४२ ॥ उद्ध-
वउठियमुनागये, कीन्हयमुनअस्नान॥ सेवासुमिरनस-
बकियो,जोअपनोउनमान ॥ ४३ ॥ करिकृतआये-
घोसमें, उद्धवभरआनंद ॥ याब्रजसुखपावतभले
पूरणपरमानंद॥ ४४ ॥ अपनेअपनेधामते, बाहर
निकरींग्वाल॥ रथदेख्यो श्रीकृष्णको, नंदमहरके द्वार
॥४५॥ यूथयूथएकै भईं कीन्यों याहिविचार॥ यहना-
हींसुतनंदको, हैकोऊप्रतिहार ॥४६॥ उद्धवपैगो-
पीगईं, कीनावंदनपान ॥ शीश नांइआदरकियो,
सखाकृष्णकोजान ॥ ४७॥ उद्धवब्रजआयेभले,
कहौकृष्णकुशलात ॥ वहाँजाइ कीन्हींभली, कहुक-

छुउत्तमवात ॥ ४८ ॥ तुमसांचेउत्तमसखा, मनवच-
कर्मसहेत ॥ प्राणन कोहरिलेगये, पिंडदानतुमदेत
॥ ४९ ॥ उद्धव हमतोबावरी, करैंकवनसोंप्रीति ॥
वहाँजाइछांडीसवै, नंदगांवकीरीति॥५०॥याब्रजकबहुँ
नआइहैं, मैंयाकेहितकाज ॥ ब्रजयुवतिनकेनाभये,
भयेवहांके राज ॥ ५१ ॥ हमश्रवणन छांड़ी सुनी,
मोरपच्छवनपात॥सुरभीसांचीचित्रकी, नाहिंदेख सकु-
चात ॥ ५२ ॥ तवउद्धव ऐसी कही, सुनौसकल
ब्रजनार ॥ बातकहो परब्रह्मकी, आतमतत्त्व विचार॥
॥ ५३ ॥ तवतुमपर करिहैंकृपा, प्रभुतजिजानिपर्म॥
तजियेनातोगांवको, भजियेपूरणब्रह्म ॥ ५४ ॥
छायामायारहितहैं, नहींहोतउनमान। हरितुमसोंऐसो
कह्यो, भजिये श्रीभगवान ॥ ५५ ॥ जापदको
योगेश्वर, लगे रहतअनुराग ॥ साधनसोइ कीजै
सदा, नामधरे वैराग॥५६॥ नयनमूंधिमुखमौनगहि,
त्रिगुण रहितनिजधाम॥ तुमसबहीमें देखिहौ आपुहि

आतमराम ॥५७॥ मधुकरअंतरकठिन है, कठिन बात कहिजात ॥ भूखमरैदिनसातलौं, सिंहघासनहिंखात ॥ ५८ ॥ यद्यपियोगप्रसिद्धहै, तोतुमहीलैजाव ॥ बहुखो नाहिंन पाइहौ, ऐसोउत्तमदाव ॥ ५९ ॥ उद्धवतातेदेखिहौं, तत्त्वरूपतनुमाहिं ॥ सोहमकासिख वतकहा, तुमहींसाधतनाहिं ॥ ६० ॥ यहतौउनको चाहिये, जिनकेअंतरराय ॥ दादुरतौ जलविनजिवै, मीनतुरतमरिजाय ॥ ६१ ॥ हैंदोउएक ठौरके, दादुरमीनसमान ॥ वेजलविनमारुतभषै, वें बिछुरततजि प्रान ॥६२॥ उद्धवइतनोअन्तरो, ब्रजमथुराकेलोग ॥ विमुखकरैवारूपको, जारिद हैसोयोग ॥ ६३ ॥ पठये आयेकवनसौकहोमित्रको जानि ॥ यहांतुम्हारी कौन विधिकहहुकवनपहिचान ॥६४॥ वचनवचनवाढ़ीव्यथा, हियजानतपरहेत। मधुकरदाहेअङ्गपर, कहालोनघसि देत ॥६५॥ तनकारेमनसांवरे, कपटीपरमपुनीत ॥ मधुकरलुब्धौवासके, निमिषएककेमीत ॥ ६६ ॥

तुमतौस्वारथकेसगे, नहीं वेलिसेभाव ॥ भावैयह गह्वरवढ़ौ भावैजरिवरिजाव ॥ ६७ ॥ तुमतोचर णाजनिछुवौ, ऐसीगतिकेवीर ॥ मधुरकररसश्र्प्रतिला लची, नहिंजानतपरपीर ॥ ६८ ॥ रहतनिकटनित श्यामके, तातेनिपटनपीर ॥ बिछुरोगेहरिसंगते, तब जानौगेवीर ॥ ६९ ॥ उद्धवहरिविछुरनव्यथा, तुम पैवीतीनाहिं ॥ विछुरोगेजबश्यामते, तबजानौमन माहिं ॥ ७० ॥ हमतुमतेकैसैकहैं, मधुकर सुनौसँ देश ॥ नाहरिजातिनपांतिके, कहाकरोउपदेश ॥ ॥ ७१ ॥ कितविधनासिरजीहमैं, कितबिछुरनकी वास ॥ कितमिलापश्रीकृष्णसों, कितविछुरनकी श्र्प्रास ॥ ७२ ॥ नयनहमारेमधुकर श्र्प्राननकृष्ण- सरोज ॥ ब्रजछांडेतादिवसते; वैरीभयोमनोज ॥ ७३ ॥ मनमोहनवेनामहै, मोहननयनविशाल । मोहनपढ़िकछुमोहनी, लैमोहीब्रजवाल ॥ ७४ ॥ सब श्र्प्रँगमोहनरूपहै, मोहनवेणुरसाल ॥ मोहनमूरतिमा

धुरी मोहनवचनमराल ॥ ७५ ॥ वचनवचन-मोहीत्रिया, हमतुमकेतिकबात॥ सुरन सहितसुरयो-षिता, थकितधामनहिंजात ॥ ७६ ॥ एकसमयनि-शिशरदकी, मोहनवेणुवजाइ ॥ वैनसैन दे सांवरे, लीन्हीसबैबुलाइ ॥७७॥ अरसपरस हमसोंमिले, कुंजनकियोबिहार॥ सोसुखनाहीं वीसरे, सुमिरतवा रंबार॥७८॥ एकसमयजल केविषे, करतकेलिअस्ना-न॥ चीरचोरितरुपैचढ़ै, वेयशुदाकेकान ॥ ७९ ॥ बहुस्योनाहिंनवीसरै, भुजवलकीअनुहारि ॥ राखि लियेब्रजकुलसबै, नखपरगिरिवरधारि ॥ ८० ॥ एकसमयवनकेविषे, कुंजकुंजवनधाम ॥ हरिहमसों-क्रीडाकरी, पलपलपूरणकाम ॥८१॥ एकदिवस-इकगोपिका, गई गेहकेद्वार ॥ दधिचोरतरोंकेहरी, चलेचपेटामार ॥ ८२ ॥ एकदिवसहरिआमिले, मोहिंसांकरीपोर॥मटुकीपटकीभूमिपर,हँसेहारको तोर ॥ ८३ ॥ ऐसीदिनदिनकीकथा, वर्णतनाहीं और ॥

हमरी वेजानतसबै, मोहनचितकेचोर ॥ ८४ ॥ लीलागोकुलगांवकी, हमजानतमनमाहिं ॥ उद्धव तुमश्रवनन सुनी, नयननदेखीनाहिं ॥ ८५ ॥ जो तुमलायेयोगको, यदुपतिकेपरधान॥हरिरसकीसींची सबै, नहिंभावतरसआन ॥८६॥ पतिव्रताहूरूपकी, साखिभरतसबगाउं ॥ यदपिभजेकोउभूपको, तो व्यभिचारीनाउँ॥८७॥ सीपरहतसागरविषे, मनमिलापनहिंलेत ॥ मधुकरयहउत्तममतो, स्वातिबूंदसों हेत ॥ ८८ ॥ मानसरोवरतेउड़ैं, आन भूमिचलिजाहिं ॥ विधिवाहनचुग्यारथी, तोउच्छिष्टनखाहिं ॥ ८९ ॥ जलनाहिंनथोरोकछू सागरनदीनिमान ॥ स्वातिबूंदचातकपियै, औसबजूठसमान ॥ ९० ॥ येदोउनयनविराटके, निगमकहतहैंनीत ॥ उड़िचकोरअंतरकियो, दिनकरअरुशशिमीत ॥ ९१ ॥ वेलि होतवोसमयमहं, करेवृक्षसोंप्रीति॥प्राण गयेछोड़ेनहीं अपनीउत्तमरीति ॥ ९२ ॥ हमतोनरदेहीधरी, इत-

नीजानतनाहिं ॥ रस तजिभजियेयोगको, भंगहोत-
व्रतमाहिं॥६३॥करतेआयेसोकरत,ऊंचनीचसोंसंग॥
हमकबहूं नाहिंनकिये, इष्टभावव्रतभंग ॥ ६४ ॥
यद्यपि कुवजाचतुरहै, तहूंकंसकीदास॥ भवनगवन-
कीनो हरि, तुमसेसेवकपास ॥६५॥ अपलक्षणतेना
डरी, बड़ेभूपकेपूत ॥ कीवेसाँचेरावरे, कीतुम
साँचेदूत ॥ ६६ ॥ याहिकठिनलागतहमें, सुनो
श्यामकोहेत॥ वहाँजायकुवजारमी, हमेंयोग सिखदेत
॥ ६७ ॥ जोकछुलिखोलिलारमें, विछुरनमिलन
संयोग ॥ दोषकवनकोदीजिये, जानतहैंसबलोग
॥ ६८ ॥ देहधरीजाकारने, लगिहैंताकेकाम ॥
मनघटयहरससोंभरो, एहींयोगको काम ॥ ६९ ॥
मोरमुकुटकटिकाछनी, कुंडलतिलकसुभाल ॥ पीतां
बरक्षुद्रघंटिका, उरवैजंतीमाल ॥ १०० ॥ करलकुटी-
मुरलीगहे, घुंघरवारेकेस ॥ वेहमरेनयननबसे, श्याम
मनोहरवेस ॥ १०१ ॥ तबउद्धवऐसीकही, धन्यधन्य-

व्रजनारि ॥ प्रेमभक्तिरसवशकिये, श्याम भुजाउरधा-
रि ॥१०२॥ यह लीनीतुमकारणे, गोपवेशऔतार ॥
निर्गुणतेसद्गुणभये, तुमतेकरनविहार ॥ १०३ ॥
निगमजाहि योहतरहे, अगमनपावतअंत ॥ सोतुम्ह
रेजूठनगहे, श्रीपतिश्रीभगवंत ॥ १०४ ॥ योगेश्वर
पावैंनहीं, सिद्धिसमाधिलगाइ॥ सोतुम्हरेरसवशभये,
वनचारावतगाइ ॥ १०५ ॥ कहतसुनतऐसीकथा,
वहाँरहेषट्मास॥ तवउद्धवआज्ञालही, हरिचरणनकी
आस ॥ १०६ ॥ नंदमिलेयशुदामिली, मिले गोपि
अरु ग्वाल ॥ वंदनकरिकरि सवहिं सों, उद्धव
चलेउताल ॥ १०७ ॥ नंदकहीयशुदाकही, गो
पिन कहीबहोरि ॥ वेरजधानीरमिरहे, व्रजकोनातो
तोरि ॥ १०८ ॥ अबकबहूँ करिहैंकृपा, सेवकअपनो
जानि ॥ हरिहमतेनहिंबीसरो, पूरवहितपहिचान
नि ॥ १०९ ॥ तबउद्धवआयेइहां, कृष्णचंद्रकेधाम ॥
म ॥ पायँलाग वंदनकियो, बोलतलैलैनाम ॥११०॥

ग्वालबाल सबगोपिका ब्रजकेजीवअनन्य॥ तुमहिं पाँय लागनकह्यो, सुनहुदेवब्रह्मण्य ॥१११॥ नंद-यशोदाहेतकी, कहियेकहाबनाय ॥ कीवेजानत तुम-भले, मोपैकहोनजाय ॥ ११२ ॥ वेचिततेटारतनहीं रामकृष्णकीजोर ॥ मधुनायकमुरलीगहे, मूरतिमधुर किशोर ॥ ११३ ॥ अरुगोपिनकेप्रेम की, महिमाक हूँअनंत ॥ मैंपूछीषट्मासलौं, तऊनपायोअंत ॥ ११४ ॥ देहगेहसबछोड़िकै, धरत रूपकोध्यान ॥ उनकोभजनबिचारिये. औसबफीको ज्ञान ॥ ॥ ११५ ॥ संतभक्तभूतलजिते, तेसबब्रजकीनारि ॥ चरणशरणलागीरहैं, मिथ्यायोगविचारि ॥ ॥ ११६ ॥ उनकोगुणनितगाइये, करिकरिउत्तमप्री ति ॥ मैंनाहींदेखीसुनी ब्रजबासिनकीरीति ॥११७॥ तबहरिउद्धवसेकही, हूंजानतसबअंग ॥ मैंकबहुंछो ड़ौंनहीं, ब्रजवासिनकोसंग ॥ ११८ ॥ ब्रजतजिअंत नजाइहौं, मेरेतोयेटेक ॥ भूतलभारऊतारिहौं, धरि

हौंरूपअनेक ॥ ११६ ॥ उधवतुमजानौनहीं; प्रेम भक्तिकीरीति.॥ गोपिनकेसम्बन्धते, उपजैप्रेमप्रतीति ॥ १२० ॥ कृष्णभक्तसोंजानिये, जाकेअंतर प्रेम ॥ राखेअपनेइष्टको, गोपिनकैसोनेम ॥ १२१ ॥ यहलीलाव्रजवासकी, गोपीकृष्णसनेह ॥ जनमोहनजोगावहीं, सोनरउत्तमदेह ॥ १२२ ॥ जोगावैसीखैंसुनै मनवचकर्मसहेत ॥ रसिकरायपूरणकृपा, मनवांछितफलदेत ॥ १२३ ॥ गोपीअरुऊधवकथा, भूपरपरम पुनीत ॥ तीनलोकचौदहभुवन, वंदनीयशुभगीत ॥१२४॥ नाशतसकलकलेसऔ, सुखउपजतमनमोद॥ युगलचरणमकरंदमन पावतपरमविनोद ॥ १२५ ॥ श्रीमुकन्दमनमधुपजहँ, सकलसंतअनुराग ॥ यशुदाप्रेमप्रवाहमें, पड़ेरहतबड़भाग ॥ १२६ ॥

इतिश्रीसनेहलीलासमाप्ता।

अथ दानलीला प्रारम्भ ।

दोहा ॥ चलौसखीतहँ जाइये, जहाँबसतब्रजराज ॥
गोरसबेंचतहरिमिलैं, एकपंथदोकाज ॥ १ ॥
चौपाई ॥ प्रभुपूरणब्रह्मअखंडा ॥ जाकेरोमकोटि
ब्रह्मण्डा ॥ सबसद्गुणब्रह्मकहाए ॥ मथुरातेवृन्दावन
आए ॥ जहँदेवलोकमुनिजेते ॥ सबगोपगुआलि
नितेते ॥ देवकीसुतनामधराए ॥ वसुदेवहिरूप
दिखाए ॥ जबगोकुलइच्छाकीन्ही ॥ वसुदेवहिं
आज्ञादीन्ही ॥ जिननन्दभवनपहुँचाए ॥ तहँनंद
केलालकहाए ॥ छंद ॥ जन्मलियेवसुदेवकेगृहनंद
केबालकभए ॥ छपनकोटियदुवंशमायायूथगोपीग्वा
लके ॥ श्रीकृष्णकेसँगबहुतबालकगोचरावनवनगए ॥
हर्षिगावहिंदानलीलासुनौसज्जनकानदे ॥ चौपाई ॥
सबघरघरकीब्रजनारी ॥ दधिगोरसबेचनहारी ॥ मि
लियूथमतोसबकीन्हो ॥ यमुनातट मारगलीन्हों ॥

आगे मोहन धेनु चरावैं॥ मधुरेस्वरवेणु बजावैं ॥
जहँ बाट सबनकीसोई॥ मुरलीसुनिआनँदहोई ॥सब
घाटउपरचलिआईं ॥ पहिचानिलियेयदुराई ॥ एक
बालक कहत पुकारी ॥ तोहिंसूझत नाहिंगँवारी ॥
छंद ॥ तोहिंसूझतनाहिंगँवारि गूजरिकृष्णठाकुरघा
टके ॥ आइकाहेनकरोबिनतीअजहुँवर्षकसातके ॥
हृदयसमुझिविचारिग्वालिनिकृष्णछांडिकहाँचली ॥
दानदेहुनिवारिअपनो हरिभलेतुमहूभली ॥ चौपाई
मिलियूथगोपिकाआई ॥ पहिचानलिएयदुराई ॥सुनि-
निबातसबै मुसुकानीं ॥ हम आजु सुने हरिदानी॥
हमकौनकहांतेआई ॥ हमकोहरिचीन्हतनाईं ॥
तुमगोकुलकीब्रजनारी ॥ तुमहौ वृषभानुदुलारी ॥
तुमरे शिर गोरस भारी ॥ हमहैं यमुना घटवारी ॥
कछुदान हमारो लागै॥ हंसि कै मनमोहन मांगै
॥ छन्द ॥ तीनहुलोकमें कौनजानेघाटयमुनातीरको
॥ जातआवतकुञ्जवनमें रहतलालअहीरको ॥

दानदेवृषभानुलाडिलिसुयशहमसों लीजिए॥ नंदके
सुतजानिहमसोंगर्बवहुतनकीजिए ॥ चौपाई ॥ तब-
ग्वालसखामिलिघेरे ॥ अरिकामटुकीमहँतेरे॥ कोइ-
हाथडारिदधिकाढैं ॥ तबद्वंद्वचहूँदिशिवाढैं ॥ इक
ग्वालिनिउठीरिसाई ॥ प्रभुकायहरीतिचलाई ॥ कछु
मांगदहीभरिलीजै॥ नइदानकीरीतिनकीजे ॥ जो-
कंसराजसुनिपैहै ॥ तुमहूँकोउदेशपठैहै ॥छन्द॥ जो
कंसराजकेराज्यमें प्रभुनईरीतिनकीजिए ॥ नंदके-
गृहद्वन्द्वउपजेदुखपरे तनुछीजिये ॥ सदाआवतजात
मथुरादानहमसोंकिनलिए ॥ दहीमांगतछांछदुर्लभ-
नीरयमुनापीजिए॥ चौपाई॥ जबग्वालिनिकहिअस-
बाता ॥ हँसिबोले त्रिभुवनदाता ॥ तुमतीनलोकमें
देखो ॥ हमकोजनिमानुषलेखो ॥ हमहींसबदैत्यसं-
हारा॥इककाकरैंकंसविचारा॥तुमकंसकोकरहुगुमाना॥
तेहिकालकरौंपिसमाना॥अबउग्रसेनभएराजा॥ हम-
हूँअवताहिनिवाजा ॥ हमसोंहठवादनकीजै ॥ हंसि

दानहमारोदीजै ॥छन्द॥ जाकोवेदपुराणगावैंमनमानै सोईकरै॥ पर अधीन वलहीनजोनरकंसकेडरसोंडरै॥ दहीगोरसकोनबूझैदेखआभारआपनो॥ जटितहीराला लकञ्चनमांगसोतिनसोंवनो ॥ चौपाई॥ कितमोतिन-मांगविराजै॥कितपावननूपुरछाजै॥ कितकंठरतनकेमाला हीरामणिहूंनँदलाला ॥ वाजूवन्दकँगनभलसोहै ॥ नकवेसरसोंजगमोहै ॥ शिरबेणीगुथीवहुभाँती॥ तहँ लागिरतनकीपांती॥मणिमाणिककंगनडोलै ॥मधुरी-कटिकिंकिणिवोलै॥ कितपाटपीताम्बरपहिने ॥ कित षोडशभूषणकीने॥ छन्द ॥ हृदयदेखिविचारिग्वालि-निकुंजवन की बाट है ॥ लूटिलेईकोउ सवै भूषण-कोतुम्हारेसाथहै ॥ इहाँसवकोदानलागै हठनकीजे-सुन्दरी ॥ कंसतेहमडरतनाहींसुनतबात सवैडरीं ॥ ॥ चौपाई॥ इक कंगन लै जव दीन्हा ॥ हरिसों विनतीवहुकीन्हा ॥ प्रभुथोरवहुतकछुलीजै ॥ अब पारसवनकहँ कीजै॥ इकग्वालकरीचतुराई॥ तिन-

औघटनावछुपाई ॥ जबआइकृष्णसो भाखा ॥ प्रभु नावकहांकोइराखा ॥ अकुलाइउठी सँगसाथी ॥ प्रभु सांझपरीयहिभाँती ॥ तवकृष्णसबैसमुझावैं ॥ अब नावकहांकोउपावैं ॥छन्द॥ औघट घाटजुभीरयमुना रातको नहिंपथचलै ॥ बाघसिंहवटपारवनमेंकवन तुमभकाभलिकहै ॥ झूठ मायामोहपरिजनस्वप्नहैंदिन चारिकै ॥ कोउकाहुकेसंगनाहींअन्तदेखुविचारिकै ॥ चौपाई ॥ जबग्वालिनिकेमनमाना ॥ धिगजीवनकै जगजाना ॥ धिगजीवनधनपरिवारा ॥ तुमहींप्रभु नाथहमारो ॥ अवचरणशरणप्रभुदीजे ॥ तनमनअ पनोकरिलीजै ॥ अवचरणशरणसवलागीं ॥ हमहैं प्रभुपरमसभागीं॥ पथरातिपरीअँधियारो ॥ जनिछां ड़ियरातमुरारी ॥छन्द॥ जन्यहमरोसफलकरिएलाज तजचरणनपरी ॥ कुलकिलाजगवायग्वालिनिजन्म जन्मसेवाकरी ॥ रहसिमोहनसंगहिलिमिलिमणिन केदीपकबरैं॥ श्रीकृष्णराधेयूथग्वालिनिकुंजवनक्रीड़ा

करैं ॥ चौपाई ॥ यकरहसमंडलप्रभुठाना ॥ सबगो
पिनकेमनमाना ॥ कोइगन्धधूपलैआवैं ॥ नैवेद्यकि
जुगुतिबनावैं ॥ तहँराधेजीपानखवावैं ॥ कोइमाथे
चमर डुलावैं ॥ कोइ तालमृदंग बजावैं ॥ कोई
आरति मंगलगावैं ॥ सुरनारद अमृतबानी ॥
रहसमंडल करत बखानी ॥ जहँ बाजत तालमृदंगा ॥
मधुरीध्वनिवेणुउपंगा ॥ करतालबजे करिघोरी ॥
रहसमंडलकीघनघोरी ॥ तहँमाझकिशोरकिशोरी ॥
दोउकृष्णराधेकीजोरी ॥ छंद ॥ श्रीकृष्णघंटबजाय
आरतियूथमिलिसेवाकरैं ॥ गिरिजानंदप्रसादपावैं
जन्मजन्मनदुखहरैं ॥ जोनरगावहिंदानलीलासुनहिं
जोचितलावहीं ॥ सोतो पावहिंप्रेमभक्तीविष्णुलोक
सिधावहीं ॥

इति दानलीला समाप्त ॥

करुणाबत्तीसी प्रारम्भः ।

श्रीगणेशायनमः ॥ कवित्त ॥ गिरिकोउठायव्रज गोपकोबचायलियो,अनलउबारच्योपुनिबालकमंजारी को ॥ गजकोअरजसुनग्राहतेछुटायलीनो, राख्योव्रत नेमधर्मपांडवकीनारीको॥राख्योगजघंटातरबालकवि हंगमको, राख्योपनभारतमेंभीष्मब्रह्मचारीको ॥ त्रि धातापहारीनिजसंतसुखकारीमोहिंएकहीभरोसोभारी ऐसोगिरिधारीको ॥ १ ॥ कमलानिवासनिजदासन कीपूरैआश, ताकेविशवासविषभख्योमीराबाईहै ॥ केशवकमलनैनसंतनकरनचैन, सैनहितभयोभूपमंज नकोनाईहै ॥ इन्द्रजूकोहरयोमानसुदामाकोदियोदान, भक्तजानिछानिनामदेवजीकीछाईहै ॥ नंदकेकन्हा ईनिजसंतसुखदाई, बलदेवजूकेभाईसोहमारोहूसहाईहै ॥ २ ॥ काहुकेआधार सेवावणिजव्योपारहूको, काहूकेअधारथितवित खेतगाँवको ॥ काहूकेआधार

तनसारभ्रातबंधुनको, काहूकेअधारप्रियसारनिजनाम को ॥ काहूकोआधारविद्याबुद्धितनबलकोहै; काहूके अधारहाथी घोड़ाधनधामको ॥ मैंतोनिराधारमेरेहरि हीकरोगेपार, मेरेतोअधारएककेवलहरिनामको ॥३॥ केऊकर्मवादीकेऊअनुभवप्रसादीभयो, केतनकी मती भईन्यायसांख्यमतकी ॥ केतेजगदानीयमनेमकोप्र माणकरैं केतेपरतीतकरैतीरथहूव्रतकी ॥ केऊब्रह्म चारीकेऊयोगी जटाधारीभये, वानप्रस्थकेतनकूंदया सांधसत्यकी ॥ मैंतोहूंपतितमेरीकौन द्योसह्वैहै गति रमापतिराखोपतिमोसेहूपतितनकी ॥ ४ ॥ के ऊकरैसेवाकेऊराखतहैलेवादेवा, केउकरिखानताकेखेत हीकोहोलाहै ॥ केतेकर्मवासी केतेदानहूकेआसीकेते, गानतानविषयकेविविधरसोलाहै ॥ केतेमहाक्रूरकेते- सबगुणपूरघोर, केतेअतिबांकेरणखेतमेंअरोलाहै ॥ मैंतोमहाक्रूरताकेउद्यमन मूरएक, यशुमतिवारेकेरो हमरोवमीला है ॥ ५ ॥ केऊ प्रेम लक्षणा

भगतिको विलक्षणहै, नीकी भांति सेवाकरजानै विधि ज्ञानकी॥ केऊ तत्त्व बोधसेतीआतमकोशोधकरैं; साधैनित्ययोगगतिजानैरोधपानकी ॥ केऊतनशासनाएबासनायतनमहैं, केऊकउपासना गणेशशिवभानकी, ॥ हूंतौहूं अजान ताके काहुसों पिछाननाहीं, कोऊकछु जानैहूंतौ जानूंनाथजानकी ॥ ६ ॥ जैसे खगबालककोराखिलियोघंटातले, लाक्षागृह बीचराख्योपांडवनसाथको॥ राख्योजुपरीक्षितको माताकेउदरमाहिं, राख्योग्वाल बालगिरिधार्योनिजहाथको॥पारथकेस्वारथकोसारथीभयेहोतुम, सखानिजजानकैजितायोहैभारथको ॥ पावकप्रजारीतहांराखीहैमंजारीहूको वैसा भांतिराख्योनाथमोसेहूअनाथको ॥ ७ ॥ केऊध्यानधारणासमाधिविषेलीनभये, मिलावैंपरमात्मामेंआतमविचारको॥ केतेनिषकाममनअजपाकोजपजपैं, केतेभजैंशंकरधतुरकेअहारी को ॥ केतेसकाममंत्रअठौयामजपैं केते, लोभ

गतिदामकोगणेशसुखकारीको ॥ तेरोध्यानज्ञान तेरोआसरोतिहारो मोहिं, कोऊ कछु ध्यावो मैतो ध्यावौंगिरिधारीको ॥ ८ ॥ लीलाहैअगाधब्रजबासिनकेहेतुसेती, धनाजूकीखेतीबिनबोयेनिपजाई है ॥ भीषमकोप्रणऔरद्रौपदीकीलाजराखी, अशरणशरण कीर्तिवेदमध्यगाई है॥ बूड़तबचायो ब्रजकरगिरिधारयोनाथ साहबनरसीकीहुंडी सकराई है । करियेनवारअबसुनियेपुकारमेरी, मौपैब्रजराजगजराजकीसीआई है ॥ ६ ॥ दीनबन्धुदयासिंधुमेटदुखद्वंद्वनके, ऐसेतोअनेकबिरद ग्रन्थनमेंकहीहै ॥ गोपमहतेउबारेराजावंधतेनिवारे, भारतमेंपार्थहितएतेशरसही है॥ नाभाओकबीरगीधगणिकातरुकरितारे, चीरबाढ़िद्रौपदीकोजक्तयशलहीहै॥बेंड़ामांझधारमेरोदुःखवारपारदेके, एहोनाथदयानिधिमेरोहाथहीहै ॥ १० ॥ छंदमत्तगयंद॥ आरतनेकगुहारसुनीतबदीनदयालुकिरीतखरीकी ॥ दौरतहैतजिकैनिजधामसुबात सुनी

तबभीरपरीकी ॥ मेरियबेरविलंबरहेसुकहातकसीरक
रीजुहरीकी ॥ धायसबेरसुनीजबटेर करीनहिंबेरसुबेर
करीकी ॥ ११ ॥ तादिनटेरसुनीततकालसहायककका
जकेआनखरेहो ॥ संतन हेतअनंतनपारजुआपसबै-
अवतारधरेहो ॥ मेरीगुहारकरौनहिकानसुकान्हकहो-
किनवानपरेहो ॥ पौढ़रहेवटपातमेंनाथकि वौरभये
किजुराजकरेहो ॥ १२ ॥ कवित्त ॥ तबतोहेभक्तन-
सहायकाजव्रजराज, कंसको विदारमति धरीनाहिंमामा
की ॥ बादलभरल्यायेजुलाहाकेदयालुहोय, गवुही
जिवाइअरुछानछईनामाकी ॥ संतनकोप्राणराख्यो
ग्वालगनव्यालसेती, विपतिहरीसंपतिअमितसुदामा
की ॥ अहोबलवीरतुमद्रौपदीकोबाढ्योचीर, हरैक्यों
नपीर अबमोसेनिहकामाकी ॥१३॥ द्रौपदीकीलाजका
जद्वारकासोंदौरआये, चीरकोबढ़ायटेकराखी सत्त
शीलकी ॥ पुत्रहेतुनारायण नामलेततकाल, काटेय
मजालगतिभईअजामीलकी ॥ मूठीएकचावलकीखा-

तहीनिहालकियो कैसीदशाभई उनब्राह्मणकुचीलकी ॥
मेरेहू करोवीढीलहोतहोकहावमील, तबतोनकरी ढील
टेरसुनी पीलकी ॥१४॥ कबके पुकारतहौंसुनतनएको
बात, एहोनंदलालतुमकैसेप्रतिपालहो ॥ कहतेदया
लुसोतोदयाऊनदेखियत, मेरीमतिऐसीश्राछेनीकेपशु
पालहो ॥ धास्योहैनृसिंहरूपतबैप्रहलादकाज, अबतो
लाजकछुगोधनमेंग्वालहो ॥ डास्योतेलकाननमेंब
सेजायकीधौंबन,शेषशैनलेटकीधौंपैठेधौंपतालहो १५
बेरबेरटेरटेरजीभहूशिथिलभई, हरौनाहिंमेरीपीरकैसे
अभिमानीहो॥कृपणभयेहोकीधौंमौनकोगहेहो कान्ह
दयाऊन आवै अबकैसे उनमानीहो ॥ कैसे कैउदारतुम
होतहोमुरारगोपगोपिनके प्यारेछाछदूधहूकेदानीहो
बकिबकिथकीबानीकछुहून चित्तआनी, जानीहमजा-
नि बूझिकरौ आनाकानीहो॥१६॥वेद और पुराणनमें
करतबखान ऐसे, सतयुगबीचभ्रुवप्रहलादकोतूठेहो ॥
त्रेताहूकेबीचनीचकुलकीनकरीकानि, भीलनीकेहाथ

प्रभुभखेबेरजू ठेहो ॥ द्वापरके अंततुमद्रौपदीकीलाज राखी,पांडवकेकाजदलकौरवकूरुठेहो ॥अबकलिकाल में जो करोनासहायमेरी, सब लोगहँसके कहैंगे हरि झूंठेहो ॥१७॥ हमै बनैगाढ़ीअतिहीवयसबाढी,ताको करोकौनसोनिबेरो अबन्यावरो ॥ टेरतहूँमेरसांझता कीपरवानकछु, जानतहोएसेजूबकैहैकोऊबावरो ॥ मैं तोमहादीनतुमनायकहोदीननकेनामसोंप्रणाम अबक रौंक्यौंनचावरो ॥ वृद्धकोविचारकेमुरारीमेरीलाजराखो मेरीलाजखोयेजाइबिरदहूरावरो॥१८॥ जादिनबहोत भईतबकीकहीजानतनहींसुनोकानदेकैज्योंहैं बाततंत की॥भयेहोकठोर जोरकियोकहाचाहतहो, नंदकेकिशोर लाजराखोक्योनसंतकी ॥ करोगेसहायकबदुःखितभये होंअति मोपैयदुरायहायपरीहैदुदंतकी ॥ टेरत होंबेरबे रभोरमाँझमेरीअर्ज, एहोहरितोकोकछु खबरहैवसंत की ॥ १९ ॥ एहोयदुरायमैंकहत होंसुनायअब, नीकेचितधारिप्रभुनेकनारिसायहो। हूँतोपर्योगैलता-

कीकियेहीबनेंगीटैल सबसोंबसायप्रभुमोसेनाबसाय
हौ॥ दयावंतकहावैतोदयाहूकोकाजराखि, मोसेपति-
ततीनलोकमें नपायहौ॥ खेवतहौंविपत्तियेकघेरल
ईचहूं ओर, मेरीकरिहोसहायकीधौलोकनहँसायहौ
॥२०॥ जगतकेस्वामीअंतर्जामिहूकहावतहो, हर
तना मेरीपीरएतेअभिकूकेपर ॥ सुदामाविभीषण
कोत्तणमांहिराजीकिये, अरीकरियेवोकहामोसे एक
टूकेपर ॥ मोपैपरीभीरतुमदेखतहौविना पीर, ऐसे
घनश्यामघनवृथाखेतसूखेपर ॥ करनी सहायतातोवे
गहीसहायकरो, पीछेकहाहोतकिये औसरकेचूकेपर
॥२१॥ कहाभयोजोपैतुमद्वारकाकेराजाभये, गोकुल-
केवासीखासीछाछिकेपिवय्याहो ॥ कभूंमच्छवाराह-
नृसिंहपरशुरामभये, कभूंभयेवामनआछेस्वांगकेभर-
य्याहो ॥ धेनुकेचरैया गुञ्जमालकेधरैयापुनि बँसी
केवजैयाअरुवनमेंरहय्याहो ॥ टेरतहौंप्रातरातबूझी-
नाहिंमेरीवात जानीहमतातभृगुलातकेखवय्याहो॥२२॥

कौरवकोवंशबोरयो, कंसजू कोकंधतोरयोगोपिनकोद-
धिचोरयोबड़ेबटपारेहो॥वृन्दाअरुवकीबोरीकुबजासो
प्रीतिजोरी, दानदेतबलिबोरयोचोरचीरवारेहो। कबहूँ
कुलीनकीसहायकरीसुनीनाहिं,वेश्याअरुकीरगीधऐसे
नकोतारेहो ॥ जरासंधसेतींहारेजायद्वारिकापधारे,
तुम कौनकेकाज सारे औरके बिगारेहो ॥२३॥ गौत
मकीनारीताकीकथाबहुविसतारी, यद्यपिउधारीतनु
छिद्र उघरायकै ॥ दुःशासनद्रौपदीकेसभाबीचकेश
ऐंचे, तबलाजराखलईलाजकोगमायकै ॥ भयों बल-
हीन अतिही अधीर छीन तबगजकाजहरिआयेवेगी
तुमधायकै ॥ दीनकेदयालुप्रभुयामेंतोसन्देह नाहिं
करत सहाय आपनीकेतनतायकै ॥ २४ ॥ काहू-
केतोहेतकरिखेतहूनिरायदियो, काहूपरप्रीतिकाजमें
घमरिल्यायेहैं॥ काहूके मजूर होइछानहूछवायदई,
नाईहोईनृपतीकोआरसी दिखाए हैं ॥ काहूपैंदयालु
होइदारिदविदारिदियोकाहूहेतसाहबनिहुंडी सकराए

है ॥ करीहैमजायकसोतोदेखतहौंआयसब, मोसोंतो तिहारेनईबातहीवनाईहै ॥ २५ ॥ जानतहौंभली विधिवड़ेविशवासीपर छलकोकरैयाऐसोदेख्योकोई धूर्तना ॥ पाँडुपुत्रहेतु कुरुक्षेत्रमेंमचायोयुद्धकौरोवंश वोरवेकोऐसेकोऊदूतना ॥ महानिरदयीकछुबातहून जातकहीयदुवंशबोरबेकोऔरकोउसपूतना॥ स्तनको-पानकरप्राणनकोपानकियो पूतनासुपूतनापुकारतमोपू-तना ॥२६॥ दासखुदामाकोसंपतिदी चुटकीभरिचाव लपैलंहिलीने॥ सागकेपातपचोलिकेखाइतवेअपिभो जनदीनेनवीने॥ कंसकीदासीपैचन्दनलै पटरानीक रीकैहौमानकरीने ॥ क्षारजयाजगमेंयदुराय अकोर लियेविन कौनको कीने ॥२७॥ याही जगहेतुप्रभुके तेअवतारेधरे, ताके अब पालवेकोकैसेमनमोरोगे ॥ एहोजगजीवनजगदीशपोषन भरन, विरदनिबाहन में कैसेदिलचोरोगे॥ विरदकेकाजअतिही अधीरभये जात होसो, कहाश्रेष्ठसेतीनेहतिनकासोंतोरोगे॥धरिके

वराहरूपअवनी निकारीआप, अब कहा पृथ्वीकूंवि नाहीमेंहवोरोगे ॥ २८ ॥ ब्रह्मामहेशशेषनारदग णेशकहैंभक्तनकेकाजहरिआपदेहधारीहैं ॥ मंगलक रनदुःख द्वंद्वकेहरनपुनि, पोषनभरनऐसेरटैंनरनारीहैं विरदभक्तवत्सलसोवेदऔपुराणकहैं जातहाँजाकेअ बखोवेकीविचारीहै ॥ द्वारकाकेवासीजातकेमेवासी अबमेरीहोतहाँसीयामैंहाँसीतोतिहारी है ॥ २६ ॥ पीपासों पापीअजामीलसोखुरापीअरुव्याधसोंअधम- तास्योअहल्याउधारीहै ॥ राँकावाँकाकीरतारे केतक अहीरतारे हाथीसेहजारवारपुनिवारन्यारी है। कूब रीदासपीपाधनानामदेवझीपाऐसेतोअनेक तारे तास्यो नागकारीहै ॥ केतेअधमतारेकेऊअधमीउधारे सबकाजसारे अबबारीहीहमारीहै ॥ ३० ॥ करुणा निधिकान्हसुनौ विनती सुनवेके विना प्रभु कैसे सरैगो। दीनदयालुदयाकरियेविमला करियेतोपलाउ घरैगो । मोसेकुपूतकेकामकृपानिधियाजगमेंकहोको-

नकरैंगो ॥ तातेमैनाथकोहाथ गहोरघुनाथविनादुख
कौनहरैंगो ॥ ३१ ॥ करत अपराधभोरसाँझतरकौ
रनित अतिहीकठोरमति वौरकौनकामहौं ॥ आतुर
अधीरतातेधीरजधरत नाहिंऊँचनीचबोलिगतिबकूंआ
ठौंयामहौं ॥ अरचानजानूंकछुचरचानवूझतहौं करि-
हेतप्रातसेलेतहरिनामहौं ॥ सबतक्सीरबलवीरमेरी
माफकरौ कहेमाधोदासप्रभुतोरहीगुलामहौं ॥ ३२॥
दोहा—याकरुणाबत्तीसिको, पढ़ैसुनैंनरनारि ॥
ताके सब दुखद्वंद्वको, काटैंकृष्णमुरारि ॥

इति मुन्शीमाधोदासकृत करुणाबत्तीसी संपूर्ण ।

अथ नरसीमेहताकी हुंडी ।

चौपाई ॥ श्रीगणपतिकोपहिलेध्यावौं॥जब नर-
सीकीहुंडीगावौं॥ परमभक्तमेहताहैनरसी । रामभ-
जनमेंबुद्धिहैसरसी ॥ १ ॥ निशिदिन रामकृष्ण
चितधरै । झूठीदंतकथानहिंकरै॥ जाकोहैजूनागढ़

बासा । रामभजनमेंरहैहुलासा ॥ २ ॥ जहँआये
साधूजनदोय । बासोलेकररहिया सोय ॥ प्रातजाग
पूंछतहैंतहां । कौनलिखतहैंहुंडीयहां ॥ ३ ॥ एकमस
खरेकीनीहांसी । सुनियोहोतीरथकोवासी ॥ घरमेह
तानरसीकेजावो । चाहेजितनीहुंडिलिखावो ॥ ४ ॥
उनकेधनकोछेडोनाहीं । बहुतेरीलक्ष्मीघरमाहीं ॥ जब
साधूपूछतघर आये । नरसीजीघरबैठेपाये ॥ ५ ॥ राम
रामसाधूबोलेजब । उठिप्रणामनरसोकीनो तब ॥ उज्ज्व-
लजलसोंपावंपखारे । ऊंचेआसनपरबैठारे ॥ ६ ॥ पावंप-
खारलियोचरणामृत । धनधनअपनो भाग्यबखानत ।
श्रद्धामाफिककरीरसोई । पाये सुखसाधूजनदोई ॥ ७ ॥
चलकरिएआरामकरायो नरसीपगचापनकोंआयो ॥
साधुनसोंपूछतहैऐसे । मो परकृपाकीनप्रभुकैसे ॥ ८ ॥
साधूबोलेबातबनाय । नरसीजी सुनियोचितलाय ॥
संगतमिलेचलेनहिंसाथा । हमपासेरुपयासैसाता ॥ ९ ॥
रोक रुपैयाघरमेंधरो । नगरद्वारकाहुंडीकरो ॥ शोचत

नरसिकहाकहुंइनको। करमभोगभेजेहैंजिनको॥१०॥
मेरेतोहरिनामअधारा। येहीवणिजकरौंज्योपारा॥अ-
बहरिकीअस्तुतीकरतहौतेाुसुमिरेसबकामसरतहैं॥११॥
गजसहायकीन्हीततकाला। गरुडछांडिधायेगोपाला॥
परसीशिलाचरणरजधारी।गौतमनारिअहल्यातारी१२
पृथ्वीअसुरडुबोईजबै। धरिबराहतनुआनीतबै॥ हि-
रणाकुशलजबखरोरिसायो।हैनृसिंहप्रह्लादबचायो१३
चारमासतुमबलिकेद्वारा। आपुपधारे श्रीकरतारा॥
मार्योपापीरावणराई। लंकविभीषणकोतुमदई॥१४॥
सुतसनेहहरिनामउचार्यो। अजामीलसोपापीतार्यो॥
आठौयामपढातीकीर। गणिकातारीश्रीरघुवीर॥१५॥
जूठेबेरभीलिनीहाथ। आपअरोगेश्रीरघुनाथ॥ भेजी-
कंसपूतनाआई। बनीरूपअतिसुन्दरताई॥१६॥ श्री
मुखमेंजबअंचलदीनो। ताकोप्राणसोखतबलीनो॥श
कटासुरराक्षसजबआयो।बैठोगाड़ेवदनछिपायो॥१७॥
दीन्हीलातकन्हैयालालो। मार्योपापीकोततकाला॥

तृणाअसुरअतिगरदउठाई। नंदगावमेंधूममचाई॥१८॥ लेकरकान्हगयोआकाशा। मुष्टीमारकियोतवनाशा॥ बालपने तुम माटी खाई। मातु यशोदा मारन आई ॥१९॥ देखमातुमैंकछुहुनखायों। तीनलोक मुख में दरशायो॥ देख यशोदा विस्मय भरी॥पल में माया दूरीकरी ॥२०॥ दोहा ॥ पयउफनातो देखकर, गईयशोदादौर॥ पीछेदधिकीमाथनी, फोरी नंदकिशोर ॥२१॥ रीसभरीमाताजबै, सुतकोपकरचो धाय॥ ऊखल संबांध्योतबै, नँदनंदनब्रजराय ॥२२॥ दोरूखनके बीचमें, ऊखलखैंच्योजाय॥ नलकूबरपर कटभये, टूटपरचोवृक्षराय ॥२३॥ नारदजीकोशा पहो, दूरभयोततकाल॥ चटविमानसुरपुरगयो, तिन कोकियोनिहाल ॥२४॥ वत्सासुरबच्छोभयो, रूप कपटकोधार॥श्रीकृष्णवाकोमारियो, पटक्योपांवपछार ॥२५॥ बरुणलेगयोनंदको, यमुनामाहिंडुबोय ॥ पितासाचजानीतबै, कृष्णछुड़ायोमोय ॥ २६॥चौ-

पाई ॥ चोरेचीरजबैघनश्यामा। ब्रजवासिनकेपूरण
कामा ॥ ऋषिपत्नीकेघरकेतीवण। आपअरोगेयुग
केजीवण ॥२७॥ जलयमुना कोमोटोभाग। जामें
नाथ्योकालीनाग ॥ वत्सग्वालब्रह्माहरलीना। नंद
लालफिररचेनवीना ॥२८॥ वर्षएकलागीसबमाया।
ब्रजबासीकछुलखनहिंपाया ॥ कोप्योमघवाब्रजपर
जबहीं। गोपीग्वालबचायेतबहीं ॥२९॥ धनधन
ब्रजकेगोपी बाल। सदाखेलेतुमउनसँगख्याल॥नि-
शाशरदअरुबालासाथ। रासरमेश्रीगोपीनाथ ॥३०॥
साथअक्रूरमधुपुरीआये। नगरलोकअतिहीसुखपाये॥
कुबजासँगतुमरमेकृपाला। क्रीडाकीन्हीश्रीगोपाला ३१
हाथीहत्योकुबलयापीड। जिनकोकंसचढ़ायोभीड़।जा-
नबूझकैभलोखिलायो। पकड़शुण्डकरिदूरभगायो ३२
मुष्टिचाणूरहतेदूमल्लाकुस्तीकरिमार्योयकपल्ल ॥ पा-
पीकंसहत्योमहराज। उग्रसेनकोदीयोराज ॥३३॥
आठभईतुमपैपटरानीएकतेएकअधिकमनमानी॥ अं-

तर्यामिद्वारिकानाथ । उनकोहैशिरमेरेहाथ॥२४॥दोहा
अतिसुन्दरिहैरुक्मिणी लक्ष्मीको अवतार॥सतिभामा
कोमानहै, जाम्बवतीसूंप्यार ॥२५॥ कालिंदीनाग
नजिती, भद्राजीसोहेत ॥ मित्रविंदाअरुलक्ष्मणा,
कुलकोशोभादेत ॥२६॥ चौपाई ॥ पारिजातसुरपुर
सूंल्यायो॥सतभामाघरआनरुपायो॥भ्रमउपज्योंनारद
को जबै । महलोंमहलपधारेतबै ॥२७॥ विपतिसुदा-
माकीतुमहरी॥घरमेंऋद्धिसिद्धिबहुकरी॥अग्निअजीर्णहो
गईजबै । बनखंडीमेंचराईतबै ॥ २८ ॥ यज्ञराजपांड
वकोकियो। थालीभाजनकोतुमरह्यो॥जबजबबोल्यो
जोशिशुपाल । थालीफेंकिहत्योततकाल ॥ २६ ॥
जबैद्रौपदीकीनीभीर । वस्त्रबढायेघट्योनचीर ॥ शाप
देनपांडवकोआये॥ बनमेंऋषिकोबहुतअघाये॥४०॥
दासविदुरकोमोटोभोग । अतिहिप्रीतिसोंपायोसाग ।
भीषमकोप्रणराख्योजबै । भीरपड़ाभारतमेंतबै ॥४१॥
परीक्षितकीतुमकीन्हिसहाय। गर्भवासमेंलियोबचाय॥

भारतमेंअतियुद्धमचायो। भारदूलकोअंडबचायौ४२॥ मित्राचारकियौहैपारथ। जाकोआयजितायोभारथ॥ पांडव कोअश्वमेधकरायो । अतीप्रीतिसोंहेतुजिताये ॥ ४३ ॥ मद्यपियेयादवमिलिसबही । तोइच्छासोंप्रगटेतबही ॥ उद्धवकोतुमज्ञानसिखाये । कृष्णरूपप्रभुधामसिधाये ॥ ४४ ॥ तेरेगुणकोकहाविचारा । सुरतेतीसनपायेपारा। मैंहूंदीन औरनहिंहाथ। आपकहीजेदीनानाथ ॥ ४५ ॥ तुम अनेकभक्तनकोतारे। संतहेतुबहुकारजसारे॥ मैंशरणागतआयोंतेरी। तुमहिंप्रतिज्ञाराखोमेरी ॥ ४६ ॥ गद्गदहोयप्रेममेंपाग्यो। अबहुंडीलिखनेकोलाग्यो। नगरद्वारिकासिद्धिसिरी। सुभगसुथानजहांबसैंहरी ॥४७॥ श्रीसाहाजीसाँवलनाम । जिनकोनरसी करैप्रमाण ॥ तुमपरतापचैनहैयहां। अतिआनन्दचाहियेवहां ॥ ४८ ॥ पानकपूरअरोगणलीजे। डीलांकाबहुजतनकरीजे ॥ डीलांपाछेसारीबात। मुदारगिणज्योडीलांसाथ ॥ ४९॥

अपरंचसमाचारसोंकाम । हुंडीसिकारदीजोदाम ॥
हमराखा साधूजनपासा । साहयोंगतुमदीजोखासा ५०
सातसैकरारुपयालीना । नेमेजाकासाढातीना ॥ पौ
नादोयचौगुनाकीजो । देखतसवैदामगिनिदीजो ॥
५१ ॥ मितीमासअरुसंवतदीनू । लिखिसिरनामों
कोटोकीनू ॥ हुंडीसाधूलीनीजवै । नरसीउनको बोल्यो
तवै ॥५२॥ हाथेसांवलसाहकोदीज्यो । तुरतरूपयाअ
पनालीज्यो । काटिमैंजलपहुंचेतहां । नगरद्वारका
सांवलजहां ॥ ५३ ॥ जाकरभेटश्रीरणछोड़ ॥ पाप
गयेसबतनुकेकोड़ ॥ तोरथवासी पूछतजहां ॥ सांव-
लसाहरहतहैकहां ॥ ५४ ॥ कोई बतावेउनकोवास ।
सांवलपरहुंडीहमपास । लोगनगरकेऐसीकहैं । सां
वलसाहयहांनहिंरहै ॥ ५५ ॥ कोउठागारेपासठगा-
ये ॥ तुमतो हुंडीखोटीलाये ॥ देर न करो
बेगितुमजावो । उसठगारेकूंपकड़बंधाओ ॥ ५६ ॥
उपजीजीवकोबड़ीउदासी । पीछाचाल्यांतीरथवासी ॥

कोसदोयतीनकजबआय।वैठेताकवृत्तकीछाया॥५७॥गया
जीवसेवर्षउछाह।जबहींआयोसाँवलसाह॥ रामरामक
रवैठोआगे। हालहकीकतपूँछनलागे ॥ ५८ ॥ सा-
धूवोलेमधुरीवाणी। कहाकहूँकछुअगतनजाणी॥साँव
लपरहुंडीहमल्याये । जाकेदामकछूनहिंपाये ॥५९॥
अवपीछानरसीपैआवाँ॥ ईजतउसकी खूबगमावाँ ॥
तववोलेतुमसारोकाम। साँवलसाहहमारोनाम॥६०॥
वसूंद्वारकाअतहीछानै । कोइकहरीकोसेवकजानै ॥
हुंडीकाढौरुपयालीजै। खरचोखावोदेरनकीजै॥६१॥
अवसाधुजनभये खुशाल । हुंडीकाढ़दीनततकाल
गांठीरुपयावांधा जवै । सांवलकोपूछतभेतवै ॥६२॥
कहासाखअरुकहापिछान । नरसीकातुमकरोवखा
न ॥ सांवलकहेसाधुसुनलीजै । नरसीमेरासखागि
नीजै ॥ ६३ ॥ मैंसेवकनरसीकोतनी। उसकीमो
परकिरपाधनी ॥ उसकोबेच्योहूविकजाऊँ । अधि
कीऔरकहादरशाऊँ ॥ ६४ ॥ मनमेंआयेअनंद

उछाह । कागजलिखतहैंसांवलसाह ॥ सिद्धिश्री
जूनागढ़वास । विराजमानहोहरिकेदास ॥ ६५ ॥
सर्वऊपमालायककरूं । तापरश्रीअष्टोत्तरधरूं ॥ जि-
नको हैनरसीजीनाम । चरणकमलपर करूंप्रणाम
॥ ६६ ॥ कृपातुम्हारीसुखहैयहां । अतिआनँदचाहि-
येवहां ॥ खानपानचितनीकेआनूं । मुद्राडीलांपाछे
जानूं ॥ ६७ ॥ सदाकरतहोहमपरदाया । याहीभाँ
तिराखियोमाया ॥ हुंडीतुम्हरीसाधूलाये । जिनको
दामदियेपरखाये ॥ ६८ ॥ हेतकरोतुमअनँदअपारा
हुंडीलिखिजोवारंवारा॥इसविधिकागजलिखियोजबै।
सौंप्योसाधूजनको तबै ॥६९॥ यहदीजोनरसीकेहाथ ।
एकजबानी कीजोबात ॥ दूजीचितमेंकभीनआनो ।
सांवल को सेवकही जानो ॥ ७० ॥ ऐसीबातपर
स्परभई । विदाहुयेसाधूजनसई ॥ फिरतगिरतजू
नागढ़ आयो । सैंदआगलीचितमेंल्यायो ॥ ७१ ॥
साधूजनकरआगोकीनो । कागजसांवलतुमको दी-

नो ॥ इसकासमाचारतुमबांचो । मित्रतुम्हारो सांवल
सांचो ॥ ७२ ॥ कागजलियेजबैततकाल । बांचत-
नरसीभयेखुशाल ॥ धनधनसाधूतुम्हरोहियो । तुम
सांवलकोदरशनकियो ॥७३॥ इसविधिकरीभक्तकी
साह ।-हुंडीसिकारीसांवलसाह ॥ कबीरकेघरबादल
ल्यायो । धनाभक्तकोखेतनिकायो ॥ ७४ ॥ राणैहै
विषकोप्यालोभरयो । चरणामृतकोनामजुधरयो ॥
मेल्योदासीसाथेजबै । मीराबाईपीगईतबै ॥ ७५ ॥
सुखउपज्योपीवतपरमान । करीसहायश्रीभगवान ॥
खीरअरोग्यो श्रीयदुराय।नरसीकीहुंडीसिकराय॥७६॥
॥ सोरठा ॥ नगरनागपुरवास, नामजेठमलजा
निये ॥ हरिभक्तनकोदास, संवतसतरासोदशक
॥ ७७ ॥ समयबैठगुरुवार जेठशुक्लपछअष्टमी ॥
हरिगुणकियोउचार, जोबांचैसीखैगुणै ॥ ७८ ॥

इति श्रीनरसीमेहताकी हुंडी समाप्त ॥

अथ हनुमानविजय प्रारम्भ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ स्वस्ति श्रीपतिपशु
पती, गणपतिमृगपतिमाय ॥ श्रीधरजगपति खग
पती, वंदौंनगपतिराय ॥ विजयहनूवर्णनकरूं,
हृदयघनूंआनंद ॥ श्रीधरमारुतनंदको, दर्शनपर
मानंद ॥ २ ॥ छंदकरखा ॥ ॐनमः शारदासुम
तिमनमें बसो कुमतिकेअंधकोफन्दतोरैं ॥ ह्रींनमः ह्रां
कहनुमानमहावीरकी भीरकादुःखकोमुख मोरैं ॥
श्रींनमः सर्वदासंपदाआपश्रीलक्ष्मीनाथ केहाथपा
वै ॥ क्लींनमः क्लेशसंतापदुःखदूरको विजयहनुमानन
रनामगावै ॥ १ ॥ प्रथमजानामसूंकाम जगमेंकरैंदुः
खकेहरणसुखकरणगन्ना ॥ बुद्धिकेसिंधुश्रीगिरिसुता
पुत्रकेचरणपदशरणकोधरणमन्ना ॥ गुरूपदकंजकरि
जमकरंदमन भ्रमरयोंसुमरकरशीश नाऊं ॥ कोटितेंती
समिलिदानआशीशद्योहृदयहनुमानको ध्यानपाऊं
॥ २ ॥ जगतमेंजगमगैज्योतिज्वालामुखी जाहिपद

पंकजमेंशंकनाहीं ॥ हनुमानहकारटंकारकीशक्तिगुरु शिष्यकीभक्तिलहिहुँ लोकमाहीं ॥ चलतहैमंत्रश्रीवक्त्र नईश्वरतणाटरतदुखरोगव्हैसुखलतभोगा ॥ हृदयह नुमानकोध्यानसुखगानकरमानसन्मानसबकरतलोगा ॥ ३ ॥ विजयहनुमानविस्तारसंसारमें जीति गढलं कनिःशंकगाऊं ॥ बुद्धिकोहीनअतिदीनगुणतीनप ण वीरमहावीरकीभीरपाऊं ॥ मातुश्रीअंजनीअंश ईश्वरतिनों दानवरदानसुरईशदीयो ॥ अरुणप्रति विंबकोउदितदृगदेखकर फलमखतूल ज्यों ग्रास कीयो ॥ ४ ॥ वालिकीविपत्सेवसेऋषिमूकपैतहां रणधीरर घुवीरआये ॥ जहांतुमआयकेभक्तिपद पायके मित्र सुग्रीवसोंप्रीतिलयाये ॥ गयेगढलंक पै पवनकेवेगआ काशमेंयक्षिणीत्रासखाई ॥ मुद्रिकाआपरघुवीरकेहा थकी बातकरजानकी खबर पाई ॥ ५ ॥ बैठिकरबा- टिकाताहिखंकारिअरि पुत्रकोमारिकपिनामपायो ॥ दनुजदलतोडकपि पुंछकोमोड़पुनि मातुढिगदौड़पद

शीशनायो ॥ होतहहकारगढ़लंकदरबार लंकेशकेपास
कपिश्रापश्राये ॥ वचनसेमोहवशभयेसबराक्षसालंक
पुर जारजगजयति गाये ॥ ६ ॥ पड़े हैं श्राय रघु
वीरके पांयमें वीनतीबहुतकरजोरकीनी ॥ लंकपुरजारि
तापुत्रको मार श्रीजानकीनाथको खबरदीनी ॥
चढ़ेरणधीरबहुफौजकीभीर तब दाहिनीबांहपर श्रनु
जसोहै । दक्षणीकोण पर कोपकोनेत्रजबसहाय
कोकरणश्रबश्रौरकोहै ॥ ७ ॥ गयोगढ़लंकपरडंक
हनुमानको रंककीशंकनहिंश्रंकजेती ॥ द्विविद
सुग्रीवनलनील ऋषिराजपुनि श्रवरयुवराजहनुमंतने
ती॥सिंधुपरसेतुधरपोजपाषाणकर नामपरतापकपिक
टकपारा ॥ जयशब्दउच्चरैभूमिसबहरैफरहरैध्वजादश
ग्रीवद्वारा ॥ ८ ॥ कोटपरकूदकरकांगरेकांगरेनागिरैना
डरैवीरहनुमन्तकूदै॥उमँगमनमाँहरघुनाथकेवचनराजा
यदाखलभयेमहलसूदै। रामकेछुवतपदश्रावहोलंकप-
दनाथबखसीसदेलंकघेरी ॥ कहतमंदोदरीपीवसुनपा

पियारामदलआयकेलंकघेरी ॥ ६ ॥ दशाननको पकरकहतसुनकामिनीभामिनीदामिनीजातचपला ॥ दामिनीचपलघन मेघमें चलपलेभासनीहलपलै भुवन प्रबला ॥ सूरनरघरपलैसमरसंग्राममेंशत्रुकेशीशभुज दंडतोड़ै ॥ कहतदशग्रीवसुनराजमंदोदरीलाजकेकाज क्यूंमुक्खमोड़ै ॥ १० ॥ कोटगढ़लंकआखातदरियावसे मेरुसमबंधुहैकुंभकर्णा ॥ हारकेजायँगेवनचरामानवा युद्धमेंजीतिहैंलंबकर्णा ॥ जानकीहेतुउद्योगनृपराम को मनुजकहजीतिहैदनुजहीते ॥ कहतदशग्रीवसुन रानिमंदोदरीरामकेअनुजकोतनुजजीते ॥ ११ ॥ रा मकोदासआरामकोनाशकर लंकसीधामनिष्कामझां पै ॥ अंजनीपूतसोरामकोदूतहै छूतकीहूतसेभूतकांपै एकहीवनचरैकियो विपरीतपुरछांडअभिमानसुखठा नजीजे ॥ कहतमंदोदरीपीवसुनप्रीतसेजनकजारामकी भेंटकीजै१२नठ्यो निशिराजमनरठ्योगौरीशकोकठ्यो तनुचाहियेरामशस्त्रै ॥ शठ्योजबसेनमेंघठ्योजूमेघमें

लख्योज्यंलेतललकारवत्रै ॥ चापशरकरनमेंधस्योतनु धरणिमें वरस्योमनचरनमेंशरनकाजै ॥ जनकजाहीय मेरामकोवासरघुनाथकेहीयब्रह्मांडराजै ॥१३॥ अखिल ब्रह्माण्डकोभारलेसमरमे रामकेसंगदशग्रीवजूझै॥ वीरहनुमानसंदेहकरमोहसेनाथकेकानमेंबातबूझै। कीजियेसहायसबसृष्टिकीकृपानिधिदुष्टकेबाणहियटालमारो। शत्रुकोवद्धकरकार्यकोसिद्धकरभरतकेशीशपरहस्तधारो॥१४॥ वीरकीविनयसुनवीररघुवीरशरचंडकोदंड ध्वनिभूमिजागी ॥ ईशकीशक्तिघननादकेहाथसेअनुजकेआयअनमोघलागी॥सिंधुकोकूदकरपलमेंपहाड़धर प्राणसंजीवनीवीरआनी ॥ लषणकोप्राणदैराम कोनामलेसेनजीवंतकरसिंहवाणी ॥ १५ ॥ रामको अनुजलेधनुकोश्रवणलगतानशरचंडरिपुवत्तभेद्यो ॥ रामशरचंडलेखैंचकोदंडकोमेरुघटकर्णकोशीशछेद्यो। समरमेरुंडमुंडावलीभटनकी सुभटनरवानराशस्त्रमारैं चढ़ेनभयानसुर सिद्धगंधर्वमुनिसुमनकीवृष्टिआशीश

धारैं॥१६॥ होतहुंकारध्वनियुद्धमें क्रुद्धसेरामशरसा
धदशग्रीवमास्यो ॥ वीसभुजशीशदशअंगप्रतिअंगस
बकाटलंकेशकोभूमिडास्यो ॥ कस्योनिष्कंटलं-
केशहरिदासको चमरशिरछत्रगढलंकदीन्हो॥ राम-
कीकृपातेतेलसिंदूरलेवीरकोरूपहनुमंतकीन्हो ॥१७॥
पुष्पकेयानचढ़िजनकजावामभुजदाहिनीबाहपरअनुज
राजैं। भालुकपिकीशसुग्रीवकोआदिलेअजंनीपूतहनु
मंतगाजैं॥ भरतकोसंगलेअवधकोदरशदेराजको ति
लकमुनिराजकीन्हो॥ रामकोराजकातिलकरघुनंदको
दासकोतिलकहनुमंतलीन्हो ॥ १८॥ रामकेनामसे
सिंधुशिलातरीरामकोदासआकाशलांघ्यो॥ रामकेदा
सके रामहिरदैबसैरामके दासनिजनाम मांग्यो॥ राम
केनामसेपापकोनाशहैदासकेनामसंतापछारी ॥ राम
केदासकीराममहिमाकरेरामसेरामकीदासभारी॥१६॥
रामकोचरितशतकोटिविस्तारहैप्रीतिसोंनित्यऋषिराज
गावैं। रामकेचरितको श्रवणकेकाज श्रीरामकेदूतह

नुमंतआवै॥ वीरमहावीरहनुमान कीहांकसेमरेमरघट्ट
केजीवजागैं॥ डंकिनीशंखिनीवीरवैतालभयमारुती
नामसेभूतभागैं॥ २०॥ सालइकवीसउगणीशतऊप
रैजेठवदिदशमिशुभकाव्यगावैं॥ प्रीतिसोंप्रगट श्रीधर
दखेडापती रीतिसोंपठनधनधान्यपावैं॥ गौडश्रीधर
कहेसलेमाबादमेंसुबसशुभनगरकेसर्वलोगा॥ दुष्टकेचो
टदेपुष्टसोंरोटलेभावमेंबरतियेभावयोगा॥२१॥ दोहा॥
श्रीधरविजयकपीशकी, पढ़ैसुनैंमनलाय॥ महावीर
खेड़ापती, पूरैंमनकोचाय॥ २२॥

अथ इक्कीसकवित्तोंकी अनुक्रमणिका।

ॐनमः प्रथमजाजगतमेविजयहनुवालिकी विपतिवे-
फिकरबांटी॥ पढ़ैहैगयोगढकोटपर दशानन कोटगढ़
रामकोदासघाटी॥ नव्योनिशिअखिलहीवीरकीराम
को होतहूँपुष्पकेयानसाटी॥ रामकेनामसेरामकोच-
रितहैसालइकवीसकबिकाव्यछांटी॥ १॥

श्रीधर कह्यो जो हनुमानविजय ताको पाठक-

रैया मंत्रको मयूरके पत्नसों झाड़देवै तौ दुष्ट मुष्टि भूत प्रेतादिक दूर होजायँ, अन्न धनप्राप्ति होय ग्रहपीडा दूरिहोय, राजमान्य होय.॥इति फलम् ॥

॥ इति श्रीधरकृतश्रीहनुमानविजयसंपूर्ण ॥

अथ श्रीकृष्णमङ्गलप्रारम्भ ।

छन्द ॥ जनमें श्रीकृष्णमुरारी भक्तहितकारने ॥
मथुरा लियो अवतार गोकुलझूलैपालने ॥
तिथिअष्टमीबुधवारभादोंवदिकरी ॥ रोहिणीनच्छत्र आधीरातजनमलियोशुभघरी ॥ धनिदेवकीवसुदेवज हांप्रभुअवतरे॥धन्ययशोदाबाबानन्दमहरघरपगधरे॥ धन्यधन्यसुरनरमुनिसवजयजयकरैं॥दुंदुभिवजतआका शसुमनवर्षाकरैं।व्रजवासीगोरसभरिभरिकरिल्यावहीं दधिकांदौबाबानंदसुकीचमचावहीं ॥ बाजततालमृ दंगवीनऔबांसरी ॥ निरततगोपीग्वालचरणचितचा वरी ॥ यशुमतिचीरपहिराय नौरंगभईग्वालिनी ॥

सुन्दरवदननिहारिचकितभईभामिनी॥ श्रीबलभद्रजी केबीरअसुरदलखंडना॥ वक्तवत्सलमहाराजयादवकुलमंडना॥ शंकरधरतहैं ध्यानसुगोदखिलावहीं॥ सोमुखचूमतिमाइसुपलनाझुलावहीं॥ श्रीनँदयशुदासेनेहचरणचितल्यावहीं॥ हरिगुणमंगलगाय गोविंदगुणगावहीं॥

॥ इति श्रीकृष्णमंगलसंपूर्णम्॥ शुभम्॥

अथ राधामङ्गलप्रारम्भ।

श्रीगणेशाय नमः॥ चौपाई॥ वरसानेवृपभानुदुलारी॥चन्द्रवदनिमृगलोचनिप्यारी। पङ्कजवपुगुणरूपरसाला॥खेलनगईजहांनँदलाला॥ निरखतरूपनंदकीरानी॥गोदउठायभवनमेंआनी॥छंद॥गोदउठायभवनमेंआनी आभूपणपहिराइयां॥मांगमुक्तापीतपटउरतारसुमनसुहाइयां। बिंदुकाजलकीदईकुलदेवमानमनाइये॥ सूरकेप्रभुसाजिनखचखकुंवरिघरांपठाइये॥१॥ चौपाई॥ आवोमेरीप्रणजुप्यारी।मेरहि

खेलनकहांजुसिधारी ॥ कुमकुमभालतिलक किन-
कीन्हो ॥ किनमृगमदकोबिंदादीन्हो ॥ छन्द॥ विंदा-
मृगमददियो मस्तकनिरखशशिसंशयपरयो एकशर
दनिशिकीकलापूरणमानमनगँध्रबहरयो॥हँसिहेरमुख
सौंकहतजननीअलकवेणीकैंगुही ॥ सूरके प्रभुमोह
व्यापैसांचिकहमोढेमईउही ॥२॥ चौपाई ॥ नंद
जीकेघरनीयकसोहै। मेरोवदन तनुफिरिफिरिजोहै ॥
खेलतिडोलतनिकटबैठारी। मनमेंआनँदकियोहैभारी॥
छंद॥ आनँदमनमे कियोभारीनिरखमुखबलिवलिग
ई॥वावाजूको नामलेलेतोहिंहँसगारीदई ॥ पाटीतो
पारीडारभूषणगोदलेमेवाभरी॥ सूरकेप्रभूहर्षहियमन
मेविधिनासोंविनतीकरी ॥३॥ चौपाई ॥ सुनतबात
कीरतिमुसकानी ॥ मैंनँदरानीजियकीजानी ॥
मेरीसुतारूपगुणरासी॥ कान्हउदासीबनकोबासी ॥
छंद ॥ कान्हउदासीबनकोबासीरंगढंगयहक्योंबनै॥
इकरत्नअमोलनीलमणियजुकांचकंचननहिं जुड़ै॥

ललिताविशाखासूँकहैतेरीललीकहँपे रही ॥ सूरके प्रभुभवनवादरजानमतिदीजोसही ॥ ४ ॥ चौपाई। दिनदशपांचहटकजव कीन्ही॥कुंवरिकोकृष्णदिखारी दीन्ही ॥ मूर्छिपरीजव तनु न सँभारयो ॥ लाड़लीको डस्योभुजंगमकारयो ॥ छंद ॥ लाडिलीडस्यो भुजंगमकारोगारदूहारयासवै ॥ नंदनंदकेमंत्रको जूयहविपदाप्यानर्निदवै॥ पठयेसखी गोपालको जाल्यावअआनंदकंदको॥ सूरकेप्रभु लहर उतरै मिलेव्रजकेचंदको ॥५॥ चौपाई ॥ करमनुहावे-रकृष्णजवल्याये ॥ देखतहीविपदूरहोजाये । उठ वैठीमनकियोहुलासा ॥ कीर्तिचलीअपनेपतिपासा ॥छंद॥ कीरतिचलीअपनेपतिपासेप्रीति रीतिवधा रिये ॥ व्याहकायकमंत्रकीनोसखियमंगलगाइये । बृन्दा तोवनमेंरच्योस्वयंवरकुंजमंडपछाइये। सूरके प्रभु श्याम घनश्रीराधिकावरपाइये ॥६॥

इति श्रीललितराधामंगलंसमाप्तम् ॥ श्रीराधाकृष्णापंगमस्तु ॥



अथ जानकीमंगलप्रारम्भ ॥

छंद ॥ प्रथम सुमिरि गुरुदेव गणेश मनाइये ॥ शारदकोशिरनाइरामगुणगाइये ॥ प्रभुगुणसिंधुसमानकौनवर्णन करै ॥ जैसीजाकीबुद्धितैसिहिरदय धरै ॥ तबबोलेऋषिरायअवधपुरजाइये ॥ रामभयेअवतारयज्ञहितलाइये ॥ करिसरयूअस्नाननृपति गृह आइये ॥ बहुविधिपूजाकरिसिंहासनबैठाइये ॥ कहततपोधनअवधपतिदोउकुंवरहमकोदीजिये ॥ यज्ञपूरण होइहमरोविप्रकोयशलीजिये ॥ सुनिऋषिकेवचननृपशोचकीनोघनी ॥ कीजेकौनउपाय बातगाड़ीबनी ॥ तबबोलेगुरुवशिष्ठनृपतिशोचनहिंकीजिये ॥ येपूरण अवतारयज्ञहितदीजिये ॥ प्रेम कोउपकारकरनृपसुत दोऊगोदीलिये ॥ महामुनिकोभेंटलै श्रीरामअरुलक्ष्मणदिये ॥ रत्नजड़ितपटबाँध धनुषलियो हाथसों ॥ कीनो बहुतप्रणाम पिता अरु मातुसों ॥ नयन रहे

जल पूरि पिता अरु मातके॥ इनके नीके राखि
यो ये पुत्र जानि अनाथके॥ आगे आगे विश्वामित्र
महामुनिपाछेलक्ष्मणरामजी॥ सजलघनश्यामतन
सुन्दरसकलपूरणकामजी। राजतवदनविशालबांके
दृगसोहना॥ नाशापरमसुढार मदनमनमोहना॥
यहछबिबिविधप्रकाररामगुण गाइहैं॥ गौरश्यामदो
उभ्रातमुनिकेमनभाइहैं॥ उठीराक्षसीघोरमहाप्रभुबा
णएकैसोहनी॥ विप्रको मखकियोपूरणकृपाकरिको
शलधनी॥मारोगर्व गुमानध्यानेहरिसों धरो॥
च्यौंकिपरीजियमांझरामशरसोंडरो॥ब्रह्मअस्त्रकरधारि
मारीचकोमारिये॥सोयोजनतनुपख्योसुरतिबिसराइयो॥
मारीत्रटारिसुबाहुमारे मुनिनकेमंगलभये॥सुरविमान
पुष्पवर्षहिंहर्षभरिजैजैकियो॥रच्योहैस्वयंवरजनकराम
चलिदेखिये॥ आयेहैंबहुभूपसबैमिलिपेखिये॥ भली
कहीऋषिराजजनकपुरजाइये॥ शिवधनुकठिनकठोर
कोदरशदिखाइये॥ चरणकीरजलागिअहिल्यातुरतही

छबिसोंभरी करजोरिअंजलिभईठाढीरामकीअस्तुतिक
रीचरणपरसिकुलतारितुरतपतिपुरकोगई। ऐसोकौतुक
देखि केवट कालई। टेरतहैंरघुनाथतीरनौकाल्याउरे॥वे
गि उतारोजुपार डरो जिन बावरे॥करजोरिकेवटयोंकहै
प्रभुबाहनपैपार उतारिहों।शिलाज्योंउड़िजायनौकाकुटुं
बकिसबिधिपालिहों॥ जोनौकाउड़िजायधूरिलगिपाँ-
वकी॥तातेदूनी देहुंगढ़ाई नावकी॥केवट चरणपछालि
श्रीरामबैठइया॥ क्षणमहँनौकाखेयकेपारलगाइया ॥
करुणासिन्धुदयालुरघुवरताहिदासआपनोकियो ॥
योगीसुरनको होतदुर्लभसोपदरीझकेवटकोदियो ॥
नौकाउतरेपार श्रीराम जनकपुरको चले ॥ तोरेंगे
शिवधनुषशकुणभेटभले ॥ वनउपबनबहुबागविबिध
बैठकबनी॥कंचनहूँमैंजटितहेमरचनाबनी॥ ठौरठौरब
हुभूपउपमाजनकपुरअतिसोहना॥बसेजनकपुरलोगसु
न्दरमदनकोमनमोहना । जनकसभाकेमध्यभूपलखि
छकिरहे। ठगकेलड्डूखायमनोसबथकिरहे। पूंछतहैं

मिथिलेशकुंवरऋषिकौनके ॥ पूरणजिनकेभाग्यदोउ सुतजौनके ॥ महासुभटरणधीर दोउ गुणलायके ॥ रघुवंशीमहाराजश्रीदशरथरायके ॥ नरनारीयों कहैं ये दोउवयसकिशोरहैं ॥ शिवधनुकठिन कठोरकैसे करितोरिहैं ॥ ये छविश्यामलगौर हरषिनिरखिकर लीजिये ॥ वारैकामकोटिस्वरूपसुन्दरनयन भरिभरि पीजिये ॥ अष्टसौमलकष्टकरिकैधनुसभामहंआनि-यो ॥ लागेहैं बडेबडेभूपयोधाधनुषकाहुन तानियो ॥ कहत सिया सुन तात धनुषप्रण जिन करौ ॥ नातर तजिहौं प्रणकेजेईवरमैंबरौं ॥ करुणासागररामजीय कीजानिये ॥ पीताम्बरकटिबाँधिधनुषलैतानिये । जयजयकारभईतिहुँलोकभूपसबैमुरझाइये ॥ श्रीराम चन्द्रमुखनिरखिसियाकेसुमनमालपहिराइये ॥ सोहत सीतारामकञ्चनमंडपतरे ॥ शिरसोनेकोमुकुटमंजु मु-क्तागरे ॥ राजतअमलकपोलकिमुक्तामोलके ॥ सु-न्दरलोचनलोलकमलजनुभोरके ॥ सुरँगचूनरीनिपट

पीटपटछारही ॥ मानोअरुणघनश्याम चपलताह्वै र
ही ॥ यहभूषणप्रतिबिंबरामछवि उरधरैं ॥ मनोयमुन
जलमध्यदीपकवरैं ॥ रामभुजाकेनिकटसियाभु
जसोंलसे ॥ मरकतमणिकेखंभमनोकंचनकसे ॥ राम
भयेतनुगोर सियाभइसाँवरी । सादरसोबुधिवन्तवधू
भइबावरी॥रामभयेघनश्यामसियाभईदामिनी॥ मुनि
भयेचन्द्रचकोरचकितभइभामिनी॥ पुष्पनवर्षतमेघमु
नीसबथरहरैं॥ होतजनकपुरब्याहराममामरिकरैं ॥
रामसियाकोध्यानसदाशंकरधरैं ॥ ब्रह्मारूपनिहा-
रिइंद्रपूजाकरैं ॥ सुरनरमुनिआनंदसुमनवर्षाकरैं ॥
ब्रह्मादिकसबदेवमुदितजयजयकरैं ॥ तुलसीसीता
रामसहित उर आनिये ॥ रामभजन बिनु जन्म
सुमिथ्याजानिये ॥

इति श्रीजानकीमंगलसंपूर्ण ॥



गोंपियोकाउद्धवकेप्रतिउत्तर ।



ऊधो कमलनयन विनु रहिये॥ इक हरि हमैं अनाथ करि छाँड़ी दूजे विरह किमि सहिये ॥ जैसे ऊजर खेरकी मूरति को पूजे कोमानै॥ ऐसी हम गोपालबिन ऊधो कठिन व्यथाको जानै॥ तनुमली नमन कमलनयनसों तामिलवेकी आस। सूरदास स्वामी बिनु देखे लोचन मरत पियास ॥ इति ॥

श्रीकृष्णचन्द्रकीगोपीप्रतिहांसी।



ऐसे जनिबोलो नँदलाला॥ छांडिदेहुअँचरामेरा मोको जानत और सी वाला॥ बारबार मैं तुमहिंक हतिहौं परिहो वहुरि जंजाला ॥ योवनरूप देखिलखाने अवहींते येख्याला ॥ तरुणाई तनु आवन दीजै कत जिय होत बिहाला ॥ कृष्णबिहारी तेरउ करटारहुटूटैगी मोतिनमाला ॥ १ ॥ इति ॥

वृषभानु ललीका यशोदाप्रति उरहना।

कवित्त।

माखन चुरावै मेरो दही ढरकावै कान्ह गारी मोंहिं गावै करै निज मन मानकी॥ अंग माहिं लपटिके अँगियाको नोचलेत यशुदाजी साँची कहौं बातमैं प्रमानकी॥ यामें झूंठी है न सौंह ककाकी कृष्णविहारी सुनि नँदरानी कह्यो एरि वृषभानकी॥ मैं नहीं प्रतीत करौं तेरी है सहजबानि मुरी मुसकानि औ कका की सौंह खानकी॥ १॥

गंगाजीकी स्तुति।

कवित्त।

छूटी शिव शीशते प्रचण्ड सेज धाराधँसी काटत अघ ओघनके पातक हितै हितै॥ कृष्ण बिहारी गङ्ग तेरीही तरंग देखि गये सुरलोक सब पातक बितै बितै॥ सुरसरि महारानीकी महीमा बखानै कौन वेद औ पुराण यश गावत नितै नितै॥ यम आगे

पाप रोवैं पाप आगे यमरोवैं चित्रगुप्त आप रोवैं कागज़ चितैं चितै ॥ १ ॥ इति ॥

अथ विज्ञाननौका प्रारभ्यते।

श्रीगणेशायनमः ॥ तपोयज्ञदानादिभिःशुद्धबुद्धिर्विरक्तोनृपादौपदेतुच्छबुद्ध्या ॥ परित्यज्यसर्वंयदाप्नोतितत्त्वंपरंब्रह्मनित्यंतदेवाहमस्मि ॥ १ ॥ दयालुंगुरुंब्रह्मनिष्ठंप्रशांतं समाराध्यमत्याविचार्यस्वरूपम् ॥ यदाप्नोतितत्त्वंनिदिध्यासविद्वान्परंब्रह्म० ॥ २ ॥ यदानंदरूपंप्रकाशस्वरूपंनिरस्तप्रपंचंपरिच्छेदशून्यम् ॥ अहंब्रह्मवृत्त्यैकगम्यंतुरीयंपरंब्रह्म० ॥ ३ ॥ यदज्ञानतोभातिविश्वंसमस्तंविनष्टं च सद्योयदात्मप्रबोधे ॥ मनोवागतीतंविशुद्धंविमुक्तं परं ब्रह्म० ॥४॥ निषेधेकृतेनेतिनेतीतिवाक्यैः समाधिस्थितानांयदाभातिपूर्णम् । अवस्थात्रयातीतमद्वैतमेकंपरंब्रह्म ॥५॥ यदानंदलेशैःसमानंदविश्वंयदाभातिसत्त्वेतदाभातिसर्वम्॥ यदालोचनेरूपमन्यत्समस्तंपरंब्रह्म० ॥ ६ ॥ अनंतंवि

भुंसर्वयोनिंनिरीहंशिवंसंगहीनंयदोंकारगम्यम्॥ निरा
कारमत्युज्ज्वलंमृत्युहीनंपरंब्रह्म० ॥७॥ यदानंदसिंधौ
निमग्नः पुमान्स्यादविद्याविलासः समस्तप्रपंचः ॥
यदानस्फुरत्यद्भुतंयन्निमित्तंपरंब्रह्म० ।८। स्वरूपानुसंधा
नुरूपांस्तुतिंयः पठेदादराद्भक्तिभावान्मनुष्यः॥ शृणो
तीहवानित्यमुद्युक्तचित्तोभवेद्विष्णुरत्रैववेदप्रमाणात्॥
॥ ९ ॥ विज्ञाननावंपरिगृह्य कश्चित्तरेद्यदज्ञानमयं
भवाब्धिम्। ज्ञानासिनायोहिविभिद्यतृष्णांविष्णोः
पदंयातिसएवधन्यः ॥ १० ॥

इति श्रीविज्ञाननौकासंपूर्णा।

अथ सुदामाजीकी बारहखड़ी।

श्रीगणेशायनमः ॥ ककाकमलनयननारायणस्वामी
॥ बसैंद्वारकाअन्तर्यामी ॥ वासुदेवसंकर्षणछाजैं ॥
प्रद्युमनअनिरुद्धबिराजै ॥ ककाकलियुगनाम अधा
रा। प्रभुसुमिरोउतरौभवपारा ॥ साधुसंगतिकरि
रसपीजै ॥ जीवनजन्मसफलकरिलीजै ॥ १ ॥

खखाखोजोसकलजहाना॥ जाको गावैंवेदपुराना ॥ निर्भयनामहरीको लीजै ॥ चरणकमलकोध्यानधरीजै ॥ २॥ गगागुणगोंविंदके गावो ॥ मायाजाल भूलिजनिजावो ॥ धनयोवन तनुरंगपतंगा ॥ छिन मेंछारहोतयहअंगा ॥ ३ ॥ घघाघटघटबोलेभाई ॥ जलथलमेंप्रभुरहेसमाई ॥ ऊँचरुनीचज्ञानकरिदेखो ॥ एकैब्रह्मसकलमेंलेखो ॥ ४ ॥ ननानिमिषखोजकरि देखो ॥ दूजोऔर नहींकोइलेखो ॥ सातोंद्वीपअवर ब्रह्मंडा ॥ नामहिछायरह्योनवखंडा ॥ ५ ॥ चचा चितनिश्चयकरिराखौ ॥ मिथ्याबातझूठमतिभाषौ॥ सत्यशब्द तपहोउप्रमाना ॥ झूठवचनसोपापसमाना ॥ ६ ॥ छछाछलबलतजोविकारा ॥ निर्मलनाम जपौयकसारा ॥ कामक्रोधकोतजोप्रसंगा ॥ सदार होसंतनकेसंगा ॥ ७ ॥ जजाजपोजगतपतिईसा ॥ जाको ध्यावैंसुरतेंतीसा ॥निशिवासरजुरहोलवलाई॥ हरिपदकमलसदासुखदाई ॥ ८ ॥ झझाझेरनकी

जोभाई ॥ शिरपरकालरह्योमड़राई ॥ चेतनह्वै
हरिशरणैरहिये ॥ कालत्रासकाहेकोसहिये ॥ ९ ॥
ननानिमिषहरिरूपनिहारो ॥ चिततेध्यान पलक
नहिंटारो ॥ आठौयामरहौलवलाई ॥ चित्त-
चरणमेंरहोसमाई ॥१०॥टटाटोरुयहिंजगतकोनाता ॥
नहिंकोईमातुपितासुतभ्राता ॥ हरिसोंहितूनहीं कोइ
अपना॥जगव्यवहाररैनिकोसपना ॥ ११ ॥ ठठाठा
कुरपरमसनेही॥ जिनयेदीनीसुन्दरदेही ॥ नरदेही
कालाकोलीजै ॥ प्रेममगनह्वै हरिरसपीजै॥ १२ ॥
डडाडामाडोलचितजनिकरो।हृदयेध्यानहरीकोधरो॥
आनदेवकाहेकोध्यावो॥ दृढ़विश्वासविष्णुगुण गावो॥
॥१३॥ढढाढूंढनकोकहँजइयेभाई॥रोमरोमप्रभुरहेसमाई॥
पीडब्रह्मांडोदरहौंसबपूरा॥सदानिकटहरिनाहिंन्दूरा
॥ १४ ॥ नानानामहरीकोलीजै । हरिभक्तनकी
सेवाकीजै ॥ सांचिभक्तिभगवानकोभावै ॥ प्रेम
सहित रसनागुणगावै ॥ १५ ॥ ततातेरीसफलकमाई

॥ नरदेही सुमिरनकोपाई ॥ हरिभजिगर्भवासतेछूटो रामनामऐसोधनलूटो ॥ १६ ॥ थथाथोराजीव नभाई ॥ हरिबिनिजन्मअकारथजाई ॥ चेतनह्वै हरिनामउचारो ॥ तनकोत्रिविधातापनिवारो ॥१७॥ ददादेखजगकोव्यवहारा ॥ मायाजालबँध्यो संसारा ॥ बँधनतेछूटनजोचहिये ॥ शरणजाइ संत नकेरहिये ॥ १८ ॥ धधाधरणीधरहिरदैधर भाई॥ संतनकेप्रभुसदासहाई ॥ सदासमीपनिमिषनहिंटर ही ॥ भक्तजनौंकीसेवाकरहीं ॥ १९ ॥ ननाने हहरीसोंलावो ॥ प्रेममगनरसनागुणगावो ॥ दुवि धाभर्मतजोमनभ्राता ॥ सन्तजननकोकीजे साथा ॥ २० ॥ पपापरेपरेसबजन्मगमायो ॥ गुणवादप्रभु कोनहिंगायो ॥ मायाभर्मभूलिरहोअंधा॥जन्मगमायो करिकरिधंधा ॥ २१ ॥ फफाफिरिपरेमोहकेफन्दो ॥ अजहुँनचेतैमूरखअंधा ॥ गुरुचरणनकीधरुमनआसा॥ हरिभजमेटौयमकीत्रासा ॥ २२ ॥ बबाबोलोअमृतबा

नी ॥ स्नेहप्रीतिरसनागुणसानी ॥ हरिहीगहिरद
यधरिराखो ॥ कटुकवचनमुखतेजनिभाखो ॥ २३ ॥
भभाभूल्योमनसमुझावो ॥ जासोंभवजलफेरिनआ
वो ॥ ऐसीभक्तिकरोमनमेरा ॥ जरामरनहोवैनहिंते
रा ॥ २४ ॥ ममामोहजालभवसागरभारी ॥ झीमर
कालमीनसंसारी ॥ जाल लियेयमफिरतअहेरा ॥
हरिविमुखनपरदेतदरेरा॥ २५ ॥ ययायहअवसरनहिं
वारंवारा ॥ तातेपुनिपुनिकरतपुकारा॥मानमित्रतुम
चतुरसुजाना ॥ विषरसछांडिभजोभगवाना ॥२६॥
रराररटनहरीसोंलावो ॥ हीराजन्मजनिवांदिगमावो॥
ऐसा हीराजोगमजाई ॥ अवसरचूकेफिरपछिताई ॥
॥ २७ ॥ ललालालअमोलमनमलहरना ॥ तनुभंडा
रजतनकरिधरना ॥ प्रभूलालगुरुदेवलखाया॥ तृष्णा
लोभसबदूरिगमाया ॥२८॥ ववावारवारनावौंपद
माथा ॥ उनपदकमलचरणचितदाता ॥२९॥ स-
सासतगुरुकीकरौंबड़ाई ॥ महिमामुखतेवरणिनजा

ई ॥ चितलागोसतगुरुकेचरणा ॥ रसनाएककहाँल-
गिवरणो ॥३०॥ षषाखींचिलियेगुरुअपनीओरा ॥
मायाफंदपलकमेंतोरा ॥ निर्भयभयेपापसवत्यागे ॥
जवगुरुचरणोंमें चितलागे ॥३१॥ शशाशोचवि-
चारमिटेजियतवते ॥ दीपकज्ञानदियेगुरुजवते ॥ ना-
श्येतिमिरभयोपरकासा ॥ मानोरविपूरणकरिभासा
॥३२॥ हहाहरिगयेपापपराजितआपू ॥ श्रीगुरुचरण
कमलपरतापू ॥ जैसेधुन्धचहूंदिशिघेरा ॥ प्रगटभानु
जवभयोउजेरा ॥३३॥ लेवेकोहरिजी कोनामा ॥
देवेकोअन्नदानसमाना ॥ धरनेकोप्रभुजीकोध्याना ॥
सेवनकोगुरुचरणसमाना ॥३४॥ त्तत्ताछांडनविष-
यवदनसोंचहिए ॥ सन्तगुरुचरण निहोरहिए ॥ ना-
ममधुररसपिवोसुजाना ॥ गर्भ वासनहिंहोयपयाना
॥३५॥ वाराखड़ीअनन्दगुणगावों ॥ सवसंतनकोशी
शनवावों ॥ दीनपतितहैदाससुदामा ॥ नमस्कार
गुरुदेवसुनामा ॥३६॥

॥ इति श्रीसुदामाजीकावारहखड़ी समाप्त ॥

अथ षट्त्रिंशद्वादित्राभिधान।



छप्पय।

मंडल वीन रबाब अनूप तम्बूर उपंगह ॥ वर वसु सुन्द पिनाक कुमायचपुंग मुरङ्गह॥ बंसी परिगह बास काएटक ताल सुपिंगी॥ तूरभेरसहनाय पावणु रण संग दरसिंगी॥ करणाटक पणव आनक मुरज डफ सुडाक डमरूलजे ॥ जलतरंगझांझमञ्जीर मिलि षट्त्रिंश बाजनबजे ॥

षट्त्रिंशदायुधाभिधान।

चक्र शूल धनु वज्र बाण कैबान तुफंगह ॥ परशु कटारह छूरा शेल खेटक गद खंगह ॥ तोम रपाश भुशुण्डि बाक खंजर जंबूलट॥ यंत्र सु अं-कुशभाल हलह मूशल खगवरवट॥ जंजाल जहर गुप्ती गुजर दाव पटा पिस्तोल लिय॥ आयुध षडाङ्गषट् त्रिंशयुत नीतपालसेना चलिय।

गणेशस्तुति ।

सवैया ।

शैलसुसिंदुर आनन सुन्दर संरकट गंज सदा शिव नन्दा। एकरदी सुरदी वरदीवर वंदन भाल विराजित चन्दा॥ मूषकरूढ़ प्ररूढ़ महातमगायकगूढ़ गिरा गण छंदा॥ नायक देव महासिधि दायक पायक पच्छ विनायक बन्दा॥

मन शिक्षा ।

कवित्त ।

छारसम काया सब माया धूम छाया जैसी तमो गुण तजरे तू तजि देवो गारीको॥ तजि दे बड़ाई तू आदर अनादर तज तज शोक मोह चिंता झूठ नेहनारीको॥ जप तप दान पुण्य विना किये बैठ रह्यो जानत न तेरे शिर दण्ड दण्ड धारीको। अहो मनमूढ़ तोसों कहाकहों बेर बेर राखरे भरो सो एक कुंजके बिहारीको॥

राधिका छविवर्णन।

सवैया।

साजि शृँगार चढ़ी है झरोखन ठाढ़ी है भानुसुता सुखदाई॥ हारन के दबि भारनसे कुच दोउनपाई मनो लघुताई॥ चूरन भार उतार मनो मनमत्थन हत्थ किये सुघराई॥ सोहत है त्रिवली सुमनो कच के लचके कटिहै दरकाई॥

शनिफलम्।

छन्दतोटक।

चतुरं सुवसे खगमन्द जिहीं, अति उन्नत थानहरम्य तिही॥ उन ग्राम घनेवनबागलता, सबसे अरुची मन व्याकुलता॥

भृगुफलम्।

भृगु सप्तमथानक जासुरहैं, अतिचातुरता पति तासुकहैं॥ वह दंपति को मन एक सदा, सुख होइ लखे अलखेदुखदा॥

केतुफलम् ।

षटमें गृहकेतु जिहीरहतं, अति चातुरताइ उदार चितं ॥ तनु व्याधि न व्यापत तासु यथा, भय आतुर मानसि आधि विथा ॥

भौम फलम् ।

संपतगृहमें पुनि भौम रहै, मन कंत मिले तनु ना मिलिहै ॥ विरहा तनु ताप सआतुरता, सुरतंन प्रियं सुरता सुरता ॥

बुधफलम् ।

नवमे शशिसूनु सुशीलवती तपतीरथ सेवित पुण्यमती ॥ गुणवानसुमंत्र सँगीतपढ़े, रतिसंसृति देवनसेव वढे ॥

रविफलम् ।

दशवें रवि उच्चग्रहे गतिहै, परतापबढ़ेदिनही प्र-

ति है॥ विविधं वह राजसुनीतलहे, क्रमकीरति योग विशेषकहै॥

शशिफलम्।

दशएकमें जासु शशी सुबसे, रतनाबरईभ अनेकअसे॥ बुधि दीनदयालुकमी न धनं, शुचितारुचि प्रेम प्रकास मनं॥

राहुफलम्।

बसि द्वादश राहु रह्यो जिनको, अनुराग विराग बढ़ै तिनको॥ भयभीत सुचित्त नहीं थिरता, ग्रहएफल जातक उच्चरता॥

शरदऋतुवर्णन।

दोहा—अम्बरजरी सुसोसनी, पनासू भूषणधार।
चंद्रोदय जल कमलछवि, शरद सुकरत बिहार॥

हेमन्तऋतुवर्णन।

नील निचोल सु अंबरी, माणिक भूषण सार।

अतिहि उष्ण उपचार तनु, हेमंत करत बिहार ॥

पुनःहेमन्तऋतुवर्णन।

छप्पय ॥ भूमि भुवनमय भोग तैल मर्दन तनु तापन। है जलकेलि हमाम तप्त भोजन तरुणीतन ॥ बहु मृगमद तंबोल तल्पघन तूलतलाई। सुजनी सुभग दुसाल सदल सरपाउ सुहाई ॥ शुभ माणिक भूषण सकलकोक कुतूहल रसकवित। विलसे विलासनिशिदिनविविधरससागरहेमंतऋतु ॥

शिशिरऋतुवर्णन।

दोहा—अवसरसैपीतिमबसन, नीलमणीसुअपार ॥
दंपति प्रेम अनन्त उर, शिशिर सु करत विहार ॥

वसंतऋतुवर्णन।

श्वेत विचित्रित तनु बसन, सकल अंग शृंगार।
केसर चन्दन कुमकुमा, करत वसंत विहार ॥

वर्षावर्णन।

सुदी कसूँबी पट सकल, नीक जटित शृङ्गार।
अटा घटा निरखन नवल, वर्षा करत विहार॥

ग्रीष्मवर्णन।

चेल गुलाबी केसरी, सब शीतल उपचार।
मुक्ता मंडन बाग वसि, ग्रीषम करत विहार॥

स्वरनाम।

छंद चन्द्रायण।—षड्ज ऋषभ गंधार सुमध्यम जानिये॥ पंचम धैवत और निषाद बखानिये॥

सप्तस्वर अनुमान भेद।

छप्पय॥ बरहि बान सुर षड्ज ऋषभचातकी उचारन॥ अंगुचार गंधार मध्य कुरची कल धारन॥ पंचम कोकिल शब्द बाजध्वनि धैवत जाने॥ घन गर्जन सुनिषाद सप्तसुर भेद बखाने॥ षट सुरफिरन्त पंडव वहैं पंच सुओड वधारिये॥ स्व

र सप्तसोय पूरण कहे रागन धाम विचारिये ॥ भैरवहरते भयो मालकोशहू विष्णुमुख ॥ ब्रह्मपात हिंडोल और दीपक दिन मणिरुख ॥ शेषहुते श्री राग मेघगाजत अकाश हुव ॥ इक इक इक प्रतिराग पञ्च रागिनी प्रकट भुव ॥ सुत पंच पंच प्रतिरागिनी पंच पंच पुत्री कहे॥ विस्तार बढ्यो सम्बन्धसे तीनलोक फैल्यो वहै।

श्रीभैरवपंचरागिनी नाम भेद।

चौपाई–भैरू राग भैरवीनारी ॥ बैरारी माधवी विचारी ॥ सिंधू बंगाली सुकहावे ॥ यहै रीत संगीत बतावे ॥

श्रीमालकोशपंचरागिनी।

मालकोशहूकी यह बाला ॥ टोडी गोडी रूप रसाला ॥ पुनि गुणकली खमायचिनारी ॥ कुंकुम युक्त पंचो हितकारी ॥

हिंडोर पंचरागिनी नामभेद ।

चौ० रामकली देसाख सुवामा । ललिता अरु बि
लावली नामा ॥ पठ मंजरी पंचमी नारी ये हिंडोर
की आज्ञाकारी ॥

दीपक पंचरागिनी नाम ।

देशी और कमोद कहावे । नरकेदार दार गुण
गावे ॥ वहुरिकान्हरारूपविशाला ॥ यहै पंचदीप-
ककीवाला ॥

श्रीराग पंचरागिनी ।

मालसिरी मारू शुभनामा । धन्यासरी वसंत सुवा
मा ॥ आसावरी युक्त यह जानी । श्रीरागके पंच
मनमानी ॥

मेघरागपंचरागिनी नामभेद ।

टेक मलार कुञ्जरी नारी । पुनि भूपाली अति हित

कारी॥देशकार युत पंचगनाई। मेघ रागहूके मनभाई

दशदोषाभिधान।

छप्पय—प्रथम काक सुर कहत तालहीनहु सुरभंगा। कूसुख ग्रीवडुलंत और पुनि डोलत अंगा॥ सुरभेदन जानंत और सुरग्रहत कपालहि॥ समय विना संगीत राग उपजे नरसालहि॥ दशदोष राग संगीतमत गावत गुणी बचावहीं॥ श्रोता प्रवीन तब सुखलहैं मंगन मोजसुखपावहीं॥

शठलक्षण।

मुख सुमिष्ट हृदिकपट अडर अपराधि सदाही॥ स्थूल भुजाउर पृथुल श्रोणि बड़ तनु कठेराई॥ कूर्मोदर दृग चपल भूरि देहो लज्ञातनु। लंपट काम सुकेलि अतिहि आतुर मर्कट मनु॥ साँचहीसमान कूरहि कहैं निज स्वारथ नितहीचहे। अतिहानि वृद्धि अनुमाननहिं शठ सुजान तासे कहै।

अथ शिवस्तुति अष्टकप्रारंभ ।

श्री ॥ असारेध्यानशिवहरीहरकाहरकरआसन वाघंबरका । अगडवं अगडवं डिमाकडिमाकडिम् ॥ वाजेडमरुशिवशंकरका ॥ टेक ॥ अंगविभूतिल गावसदाशिवहाथलिये निशिदिनगोला ॥ कैलास छोड़करलौटेमशानमोऐसोहैशंकरभोला ॥ १ ॥ असारे० ॥ अगड० ॥ खोंपरीमें भोजनकरतागिरिजा हैंसोअर्द्धंगा ॥ सुरनरमुनिध्यानधरेकोइदेवता हैअद्भू ता ॥ असारे० ॥ अगड० ॥ त्रिशूलसे त्रिपुरासुरमा रयोतीनलोकमें अधिकारी ॥नागनकेरोकुंडलविराजैं चढ़ें बैलकीअसवारी ॥ ३ ॥ असारे० ॥ अगड० ॥ कुंडीसोंटालेकरगौराघोटपिलावैं निशिदिनभंगा ॥ गलेरुंडकीमालविराजै जटाजूटशिरहैगंगा ॥ ४ ॥ असारे० ॥ अगड० ॥ विषसेकंठहुवाजबनीलाराम नाममुखसेंबोला ॥ ठंढाशीतललहरहुवाजबप्रेममगन

मेंशिवडोला ॥ ५ ॥ असारे० ॥ अगड० ॥
जोकोइमाँगेउनकूंदे वेऐसेहैंसंकरभोला ॥ आकष
तूरोआपअरोगेदूध भातकोइकूंदेता ॥६॥ असारे०
॥ अगड० ॥ भृङ्गी शेलीशिवकूंसोहैहाथलियाम्मो
लीचंगा॥वहुरंगकरशिरछत्रविराजैओढेगुदड़ी नवरं
गा ॥७॥असारे०॥अगड०॥ यकरानीतोरेगौरापा
र्वतिदूजीरानीशिवअर्द्धंगा ॥ तीजीरानीअसलमिखा
दे जटाजूटशिरहैंगंगा ॥८॥ असारे० ॥ अ-
गड०॥ यकरानीतोरेचन्दनघसतीदूजीजलभरलावें
गी ॥ तीजीरानीधूपदीपलेचौथी ज्योतिजलावेंगी
॥ ६ ॥ असारे० ॥ अगड० ॥ तुकारामउस्तादनाम
मो साहेबहैसोवहुरंगा ॥ देखदाखलेपोथीपुराणमेंम
तकरवांतांअडभंगा॥१०॥ असारे०॥ अडगबंअगड
गवंडिमाकडिमाकडिम्बाजे डमरू शिवशंकरका॥

इति शिवस्तुति अष्टकसमाप्त।



अथसंकटमोचन हनुमदष्टकम्।

श्रीगणेशायनमः ॥ मत्तगयंदछन्द ॥ बालसमै
यरविभक्षिलियो तबतीनहुँलोकभयोअँधियारो ॥
ताहिसुत्रासभईजगको यह संकटकाहुसोंजातनटारो ॥
देवनिआनिकरीविनती तब छांड़ि दियो रविक-
ष्टनिवारो ॥ कोनहिंजानतहैजगमेंकपिसंक
टमोचननामतुम्हारो ॥ १ ॥ बालिकित्रासकपि
शावसेगिरिजातमहाप्रभुपंथनिहारो ॥ चौंकिमहा
मुनि शापादियोतबचाहियकौनविचार विचारो ॥ कै
द्विजरूपलिवायमहाप्रभुसो तुमदासकुशोकनिवारो ॥
कोन० ॥ २ ॥ अंगदसंगगयेसियखोजनवैनकपीश
तवाहिउचारो ॥ जीवतनाबचिहोहमसोंजू विनासु
धिलेइयहां पगुधारो ॥ हेरिथकेतटसिंधुसबैतबलेसिय
कीसुधिप्राणउबारो ॥ कोनहिं० ॥ ३ ॥ रावणत्रास
दईसियकोतबराक्षसिसोंकहिशोकनिवारो ॥ तहिस
मयहनुमानमहाप्रभुजाय महारजनीचरमारो ॥ चाह

तिसीयअशोकसुदैप्रभु मुद्रिविषादनिवारो ॥
कोनहिं० ॥ ४ ॥ बाणलग्योउरलक्ष्मणकेतबप्राणत
जे, सुतरावणमारो ॥ लेगृहवैद्यसुषेण समेततबीगिरि
द्रोणसुवीरउपारो ॥ आनिसजीवनिहाथदईतबलक्ष्म
णकेतुमप्राणउबारो ॥ कोनहिं० ॥ ५ ॥ रावणयुद्ध
अजानकियोतबनागकिपाशसबैशिरडारो॥ श्रीरघुना
थसमेत सबैदलमोह भयो तब संकटभारो ॥ आनि
खगेशतबै हनुमानजुबंधनकाटिसुत्रासनिवारो ॥
॥ कोनहिं० ॥ ६ ॥ बंधुसमेतजबैअहिरावण
लैरघुनाथपतालसिधारो ॥ देविहिपूजिभलीविधि
सों बलिदेहुसबैमिलिमंत्रविचारो ॥ जायसहाय
भयेतबहीअहिरावणसैन्यसमेतसंहारो ॥ कोनहिं०
॥ ७ ॥ काजकियेबड़देवनके तुमवीरमहाप्रभुदेख
विचारो ॥ कौनसुसंकटमोरगरीबकोजोतुमसोन
हिंजातहैटारो ॥ बेगिहरोहनुमानमहाप्रभुजोक-
छुसंकटहोयहमारो ॥ कोनहिं० ८ ॥ दोहा ॥ लाल

देहलालीलसै, अरुधरिलालँगूर ॥ बज्रदेहदानव दलन, जयजयजयकपिशूर ॥१॥ यह अष्टकहनुमानको, विरचिततुलसीदास ॥ गंगादासजुप्रेमसों, पढ़ैहोय दुखनास ॥२॥

इति श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृतसंकट मोचनहनुमदष्टकं संपूर्णम् ॥



अथ भद्रनारायणाष्टकं प्रारभ्यते।

वामेभागेराधयाराजमानं श्यामेरूपेपीतवासोवसानम् । शश्वद्भद्रंभावयंतंजनानांदेवंबंदे भद्रनारायणाख्यम् ॥ मूर्ध्निभ्राजद्बर्हिपिच्छंदधानंकाश्मीरेणोद्भासितंभालदेशे। गुंजापुंजैर्मञ्जुकर्णावतंसं वंदेदेवंभद्रनारायणाख्यम् ॥ २ ॥ बक्षोदेशेवन्यपुष्पच्छदाद्यैःक्लृप्तांमालांधारयंतंविशालाम् । तद्वत्कंठं कौस्तुभेनोद्भिभान्तं वंदे देवंभद्रनारायणा० ॥ ३ ॥ केयूराभ्यांरत्नभाभासिताभ्यांबाहुस्थाभ्यां जातरूपोद्भवाभ्याम् । बिभ्राजंतंस्निग्धवर्षाघनाभं देवंवन्देभद्रना०

॥ ४० ॥ भूपावृन्दैर्भूपिताशेषगात्रंकंदर्पाभंयोगिभि र्योगगम्यम्।।भक्ताभीष्टापूरकंराधिकेशं देवंवंदे भद्रना० ॥ ५ ॥ क्वापिप्रेम्णावंशकं वादयंतंगोपीवृंदैर्वेष्ट्य मानंवनान्ते । ताभिर्गीतं गीयमानं मनोज्ञं देवं वंदे भद्रना० ॥ ६ ॥ गोपैर्युक्तं क्वापिगोवर्धना ख्येगोत्रोपांतेगाःसवत्साघटोध्नी। नाना रूपैश्चारयंतं सरामं देवं वंदे भ० ॥७॥ वृंदारण्येत्र्वालकैःक्रीड मानं नानावेशैश्शुद्धभावानुरक्तैः । क्रीडामक्तैः सा कमेभिर्हसंतं देवं वंदे भद्र० ॥ ८ ॥ स्तोत्रेणानेनये देवं भद्रनारायणं हरिम् ॥ संस्तुवंति नरास्तेषांका र्यसिद्धिः पदे पदे ॥ ६ ॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशोद्भवचहोतरग्रामनिवासिश्रीपंडितराम नारायणशुक्लविरचितं भद्रनारायणाष्टकस्तोत्रं समाप्तम् ॥

पुष्पविननलीलावर्णन ।

फूल बिनन नहिं जाउं सखीरी हरि बिन कैसे बीनों फूल । सुनरी सखी मोंहि राम दुहाई फूल

लगत तिरशूल॥ वेजोदेखियत राते राते फूलनफूली डार॥ हरिविन फुलझारीसी लागत झरि झरि परत अंगार॥ कैसेकै पनिघट पै जाउं सखीरी डोलो सरितातीर॥ भरि भरी यमुना उमड़ि चली है इन नयननके नीर॥ इन नयननि केनीर सखीरी सेज भई घरनाउं। चाहतहौं याही पर चढ़िकै श्याममिलनको जाउं॥ प्राण हमारे विन हरिप्यारे रहे अधरन पर आय। कृष्णबिहारीके प्रभुसों सजनी कौन कहै समुझाय॥ इति॥

प्यारेका विदेशपयान वर्णन।

कवित्त।

रोकहिं जो तो अमंगल होय औ प्रेमनसे जो कहैं पिय जाइये॥ जो कहैं जाहु न तो प्रभुताजो कछू न कहैं तो सनेह नशाइये॥ जो हरिचन्द तुम्हारे विना जिय है नहिंतो यह क्यों पतिआइये। ताहीपयान समैंतुम्हरे हमकाहकहैं हमको समझाइये॥१॥इति॥

हनुमानयुद्धप्रशंसा।



नाचि नाचि कूदि कूदि किलकि किलकि कपि उछरि उछरि राहलेत आसमानकी। बलकि बलकि बल करि करि छरि दरि छरत छरेद भेद कृतगत भानकी॥ रुण्डन सो रुण्ड अरु मुण्डनसो मुण्ड करि भारी भट झुण्डन घुमण्ड यातुधानकी॥ शाबस कहत राम हिय हरषात जात देखो वीर लषण लड़नि हनुमानकी॥ इति॥

वर्तमान दशा।

कवित्त।

दानी कोउ नाहिंने गुलाबदानी पीकदानी गोंद दानी घनी शोभा इनही में लहैहै॥ मानत गुणी को गुणहीमै प्रकट देख्यों याते गुणी जन मन सावधानी गहैहै॥ हयदान हेमदान गजदान भूमिदान किशुनबिहारी ये पुराणन में कहैहै॥ अबतो कलम

दान जुजदान जामदान खानदान पानदान कहि-
बेको रहैहै ॥ १ ॥

वर्तमान दान उपहास।

कवित्त।

पौरिके किवार देत घरे सबै गारिदेत साधुन को दोषदेत प्रीतना चहत हैं। मांगनेको ज्वाब देत बात कहे रोयदेत लेत देत भांजिदेत ऐसे निबहत है ॥ बागेहूके बंत देत बाहनको गाठिदेत पर्दनकी काछ देत काममें रहत है॥ येत पै सबैई कहै लाला कछु देत नाहीं लालाजूतो आठो याम देतही रहत हैं ॥ १ ॥ इति ॥

अथ पुरातनकथाप्रारंभ

चौपाई ॥ पौढ़ोलालकहतिमहतारी । कहौंकथाइक श्रवणनिप्यारी ॥ हर्षेयहसुनिमनवनवारी ॥ पौढ़ि गयेहंसिदेतहुंकारी ॥ नगरएकरमणीकसुहावन। नाम अवध अतिसुन्दरपावन ॥ बड़ेमहलतहंअगमअटारी । सुन्दरबिशदचारुगचढारी ॥ बहुत गलीपुरबीच

सुहाई। रहैसदासवसुगंधसिंचाई॥ भांति भांतिबहु बाटबजारू। अतिसुन्दरजनुविश्व शृंगारू ॥ तहांनृप-तिदशरथरजधानी। तिनकेनारितीनपटरानी ॥ कौ-शल्याकैकईसुमित्रा । तिनजन्मेसुत चारपवित्रा ॥ रामभरतलक्ष्मणरिपुहंता। चारोंअतिसुन्दरगुणवंता॥ तिनमेंएकरामव्रतधारी।अतिसुन्दरजनकेहितकारी ॥ विश्वामित्रएकऋषिराई। तिनहिंसतावैंनिशचरआई॥ तिननृपसोंढैसुतलियेमांगी । अपनीरक्षाकेहितलागी ॥ दोहा ॥ रामलक्ष्मणलैगये, दनुजहतेतिन जाय । सुनि विदेह संदेशको गवने अति सुखपाय ॥ सोरठा ॥ तहांजनकइकभूप, धनुपयज्ञतानेरच्यो। कन्यातासुअनूप, जुरेतहांभूपतिअमित ॥ चौपाई ॥ ऋषिलैगयेकुंवरतहँदोऊ । जनकसवनसनमाने सोऊ ॥ धनुषतोरिभूपनमुखमारी । रामविवाही जनककुमारी ॥ चारहुकुंवर व्याहतहँ आये। भये अवधपुर अनंदवधाये ॥ रामहिं देन लगेनृपरा

जू। सज्योसकल अभिषेकसमाजू ॥ ताही समय कैकयीरानी। चेरीकीमतिसों बौरानी ॥ बचनमाँगि राजासों लीनो ॥ बनकोवासरामकोदीनो॥ सुनिपितुवचन धर्महितकारी ॥ नारीसहित भयेबनचारी ॥ तिन्हैंचलत भ्रातासँगलाग्यो ॥ उनकेजातपितातनु त्याग्यो॥ चित्रकूटभयोभरतमिलनजब ॥ दैपदपांवरिकृपाकरीतब ॥ युवतीहेतुकपट मृगमारा। राजिव लोचनरामउदारा ॥ रावणहरणकियोतबनारी ॥ सुतश्यामघननींदविसारी ॥ चौंकिकह्योलक्ष्मण धनुदेहू ॥ देखभयोयशुदहिसन्देहू ॥छन्द ॥ संदेहजननीमनभयोहरिचौंकिधौंकाहेपर्‌यो ॥ कहुँदीठ खेलनमेंलगीधौंस्वप्नमेंकान्हरडर्‌यो॥ बहुभाँति देवमनायपढ़िपढ़िमंत्रदोषनिवारई॥ लैपियति पानीवारि पुनिपुनि राइलोन उतराई॥ दोहा ॥ सांझहिते विरुझायहरि करीचन्द्रहितआरि॥ झिझक उठ्योधौंताहेतें, रह्योसुरत उरधारि ॥ सोरठा ॥ बड़भागिनिनँद

नारि, महिमावेद न कहिसकैं॥ हरिकोवदननिहारि,
बिसरावतित्रयपापदुख ॥

इति पुरातनकथालीलासम्पूर्णं ॥

अथ लँगड़ी रंगतकी।

श्रीगणेशाय नमः॥ रागलावनी ॥ नेहकरोमत
नारीसेनारीमेंनखशिखकपटभरा ॥ राजाभर्तरीयो
गलेयकेजंगलकाउनराहधरा ॥टेक॥ सोमनामइक
ब्राह्मणथा वो उज्जैननगरीका वासी ॥ गेहत्यागिके
गयावोवनकूंबनके संन्यासी॥ प्राणायाम चढ़ाय स
माधीखैंचगयावोतोखासी ॥ देखतपस्याहोगये प्रसन्न
उसपैअविनासी ॥ नारदजीने अमृतफलइक ल्याय
के उसके हाथधरा ॥ राजाभर्तरी० ॥ १ ॥ अमृत
फलकूंदेखविप्रने अपने मनमें सोचकिया ॥ मेरे तो
लायकनहिं है जायभूपकूंभेट दिया॥ सोफललखि भर्त-
रीभूपका अन्तरसेहुलसाजुहिया॥ उसी समयमें वहां पे
अपनीप्राणप्रियाकूंबुलालिया॥ इसकूंतुमखाजाहु सु

न्दरी ये अमृतफलरसका भरा ॥ राजा० ॥ २ ॥
घोड़े का इकसहीसथा दोरानीकादोसतभारी ॥ उसकूं
जायकेदियाफलप्रेमसूँप्रीतमकीप्यारी ॥ सहीस
औवेश्यादोनोंकी आपुसमेंथीबहुतयारी ॥ दियाउसे
फलइसेतुमखालेनासुन्दरिनारी ॥ वेश्याकीथी लगन
भूपसेसोफलनृपकोदियाखरा॥ राजा० ॥ ३ ॥ देख
अमरफलनरेशअपनेमनमेंअतिअचरजपाया ॥ पूंछा
उस्सेसांचकहुतेरेपासकहांसेयेआया ॥ वेश्यानेदहसत
केमारेनामसहिसकाबतलाया॥ छोड़उसीकूंएकदमच
वेंदारकोबुलवाया॥ उससेजबपूंछाराजानेउसनेरानीका
व्यानकरा॥ राजा० ॥ ४ ॥ जिसकोमैंदिनरैनचहौं
उसकेचितचवेंदारबसा ॥ चवेंदारकाचित्तचंचलचातुर
गणिकासेजूफँसा। उसवेश्याबेवकूफकादिलमेरीदोस्ती
दरम्यानठसा ॥ मुझकोतोअबआकरवैराग्यरूपअज
गरनेडसा ॥ धिकरानीवेश्यानौकरधिककाममोहिंधि
क्कारपरा ॥ राजा० ॥ ५ ॥ ऐसीकरचिन्ताराजाने

आसारसवसंसारतजा॥ जाकरवनमेंभलातनमनसेसी
तारामभजा॥श्रीरामानुजसंप्रदायगुरुतुलसीदासचर
णोंकीरजा॥ साधूगंगादासनेइसलोकक्केऊपररच्यालस
जा॥ जोकामिनिसेवंचेजगत्‌मेंउसकाअंतः कर्णखरा॥
राजा० ॥ ६ ॥

इति लंगड़ी रंगतकी समाप्त।

अथ रागलावनी छन्दचौपैया।

श्रीगणेशायनमः ॥ जयतिजयतिजयजयतिजयतिजय
रामानुजसुकृतपालं॥ जयति जयतिजयजयजगदीश्वर
जयजगकारणकरुणालं ॥ टेक ॥ वंदेअस्मद्देशिकगुरु
श्रीरामानुजनिजजनपालं ॥ जगतजनमियतिराजय
तनकरि कुतसुवोधकृतजगजालम् ॥ जिहिजिहियुग
विनविनशतसुधर्मजगहोइअधर्मअघविकरालम्॥तव
तवप्रगटस्वधर्मथापिअनधर्मउथापिततत्कालम्॥निज
आश्रिततितिहिदेतअभयपददुष्टसमूहनकहंकालम्॥जय
ति० ॥ १ ॥ सतयुगमेशेषावतारकृतसहसरसनधृत-

सुखआलम् ॥ त्रेतामेंलक्ष्मणलक्षणयुतधरिशरीरखल दलकालम् ॥ द्वापरमेंवलरामधामवलधरिवपुवहुवलि वलशालम् ॥ कलियुगमध्यप्रगटरामानुजकृतप्रवत शुभश्रुतिचालम् ॥ शक्तिजैनशांकरकृपालमतमत्तग जगंजनहरीवालम् ॥ जयति० ॥ २ ॥ शीर्षशिखा सितवसनसवेष्टितशशिसममुखोर्ध्वगसुविशालम् ॥ उ-दितप्रातमार्तंडअखंडितऊर्ध्वपुंड्रविलसितभालम् ॥ यज्ञ सूत्रकटिसूत्रमेखलाकंठनलिनतुलसीमालम् । योग युक्तियुतयज्ञक्रियाभययज्ञरूपजनभयटालम् ॥ काषांबर कौपीनकमंडलुकरत्रिदंडतरमृगछालम् ॥ जयति० ॥ ३ ॥ करिदिगविजय विजयकियेदुर्जन आपुअजयअविग तलालम् ॥ मायावादि विवादनिरतमनदहन प्रवल-अगनीज्वालम् ॥ वृथावादवेदांतिध्वांतिविध्वंसिभ्रांति भ्रमजंजालम् ॥ प्रवलप्रतापनगारिसमग्रसनग्रासकरन दुर्जनव्यालम् ॥ श्रीगुरुतुलसीदासदयाते जाह्नविज ननिगदितख्यालम् ॥ जयति० ॥ ४ ॥

आषाढ़मासवर्णन।

सवैया।

आई अषाढ़कि कारीघटा घहरानलगे बदराचहुँफेर के॥ दूजे जोकंत विदेश गये सुधिपाईन नेक रही मग हेरिके॥ उमराय स्वभावविहंग कहै मृदुबैनकहै जो सखी कहै टेरिके॥ सोनेसो चोंच मढ़ैहौंतेरी ब-लिजैहौंपपीहा पियाकहु फेरिके॥ १॥

सावनमासवर्णन।

कवित्त।

कूकै लगीं कोकिलैं कदम्बनपै रातो दिन मोर पिक शोरहूसुनात चहूँ पास है। मन्द मन्द गर्जत घनेरी घटा घूमि घूमि वहत समीर धीर संयुत सुवा सहै॥ जित तित नारी नर गावैं सुखपावैं अति झूलत हिंडोरे लाल बाढ़तहुलास है। हिय सरसा बनकी काम सरसावनको बूंद बरसावनको सावन सुमास है॥ इति॥

हारचोरनलीला।

कहु राधाकेहि हारचुरायो। ब्रज युवती सबहीमें जानति घर घर लैलै नाम बतायो॥ श्यामा कामा रसिका चतुरा नवला प्रमदा नारि। सुखमा शीला अवधअनन्दा वृन्दा यमुना सारि॥ कपिला तारा विमला चद्रा चन्द्रावलि सुकुमारी। अमला अबला कुब्जा मुक्ता हीरा नीलाप्यारी॥ सुमना बहुला चम्पा जुहिला ज्ञाना भाना भाम। प्रेमा दामा रूपा हंसा रंगाहरपा नाम॥ द्रुमिला रम्भा कृष्णा ध्याना मैना नैनारूप। रत्ना कुमुदा मोहा करुणा ललना लोभानुप। इतनिनमें कहु कौने लीन्हेउ ताको नाम बताव। कृष्ण विहारी चोर तुम्हारे मैं जानति सब दांव॥ १॥ इति॥

विरहिनीविलाप।

कवित्त।

कारे कारे बादर डरवाने लगत अब दादुरकी

धुनि सुनि भूलै दशा तनकी । बूंदकी झकोर झकझोर पुरवाई करे हरै मन मोर शोर चहुँ ओर बनकी॥ हरीहरी लतिका करावैं घरीघरी याद इन्द्रगोपलखि लाज गुंजमाल गनकी । कृष्णविहारीबीन लागैं उर आर ऊधो पपिहा पुकार झनकार झींगुरनकी ॥ इति ॥

रागलावनीछंदचौपैया।

श्रीगणेशायनमः ॥ भूरिभाग्यगुरुदेवमिलेश्रीरामानुजमंगलकरणम् ॥ मंगलमूलसकलमंगलनिधिअखिलअमंगलदलदरणम् ॥ टेक ॥ द्राविड देशदिनेशउदितहोयदशहुदिशादीपितकरणम् ॥ प्रबलप्रतापतापतीक्षणलखिलगेदुष्टजन तनजरनम् ॥१॥ मायाबादिकुहरअतिसंकुल वेदविरोधि तिमिरतरणम ॥ तत्क्षणतिनकहँकियेबिनाश निजवाक्यप्रकाशनिकरकिरणम् ॥ भूरि० ॥ २ ॥ जैनउलूकअनेकअंधभयेबौद्धमुकुटमुदितकरणम् । शैवशाक्तस

वचक्रवाककापालिचकोरलगे इरणम् ॥ अभिमानी-अद्वैतनिरंतररचैलगेसबदुखभरनम् ॥ हिमपाषाणसकलनिंदकजन परशप्रभातत्क्षणगरणम् ॥ भूरि० ॥ ३ ॥ करत्रिदंडसुप्रचंडअखंडनदंडनपाषंडीबरनम्॥ खंडनअघमंडनभूमंडलपंडितमुखअमृतभरनम्॥ पाषंडद्रुमखंडसघनदावानलहोमदहनकरणम् ॥ चारवाकशठशैलसमूहहतिभाष्यवज्रपातितधरणम् ॥ भूरि० ॥ ४ ॥ भक्तभृंगआनंदकरनअतिअंबुजसमकोमलचरणम् ॥ चरममंत्र उपदेशकरतभवभीतजुजनआवतशरणम् ॥ श्रुतिविचारआचारनिरतअनचारभारतत्क्षणहरणम् । श्रीगुरुतुलसिदासपदआश्रितजाह्नविजन पोषण भरणम् ॥ भुरि० ॥ ५ ॥

इतिलावनीछंदचौपैयासंपूर्ण।

अथ शिक्षाबत्तीसी प्रारंभ।

श्रीः ॥ ककारेकर्मधर्मकुलरीतिसँभारो ॥ १ ॥ खखारेखाडैखूंचैंपगमतिधारो ॥२॥ गगारेगर्व छाँडबेग

वोरहिज्यो॥ ३ ॥ घघारे घरआयांको आदरकीज्यो
॥ ४ ॥ ङङारेनमस्कारनित्यसूरज देवन॥५॥ च-
चारेचतुरपुरुषकीसंगतिसेवन ॥ ६ ॥ छछारेछलीव
लीकेसंगनहिंफिरियो ॥ ७ ॥ जजारेजगतसुहायो
कारजकरज्यो॥८॥ झझारे झगड़ैजायझूठमतिबो
लो ॥ ९ ॥ ञञारेञाञा ञाञायोंमतिडोलो ॥१०॥
टटारेटकापैसा भेलाकरिये ॥ ११ ॥ ठठारेठाकठोक
बोवणीकरधरिये ॥ १२ ॥ डडारेडाकनकीनिंदानहिं
कीजै ॥ १३ ॥ ढढारेढगढंमनसोदूरारहिजै ॥१४॥
णणारेनातेजातें पहिलीजइये ॥ १५ ॥ ततारे ताती
भोजन कबहुँ न खइए॥ १६ ॥थथारेथरकण विना
दूध नहिंपीजै ॥ १७ ॥ ददारेदयाधर्महित चितसूं
कीजै ॥१८॥ धधारेधनदेकरनिर्धननहिं होजै ॥१९॥
ननारेनारायननयननितजोजै ॥२०॥ पपारेपरमेश्व
रकीआशाकरिये॥२१॥ फफारे फलवंतातरुवरपगध
रिये ॥२२॥ बबारेबणड बुरारचरोदेखिजे॥२३॥भभारे

भणवामें आलसनहिंकीजै ॥ २४ ॥ ममारेमातपिता
की आज्ञापालो ॥२५॥ ययारेयादकरोगुरुदेवसँभालो
॥ २६ ॥ ररारेरमवामेवेलामतिखोवो ॥ २७ ॥ ल-
लारेलाभहानितनमनसूंजोवो ॥ २८ ॥ ववारेवर्तमा
नकीविद्यालीजै ॥ २९ ॥ शशारेशस्त्र परायेहाथ
नदीजै ॥ ३० ॥ षषारेषटकहैआराधन कीजै॥३१॥
ससारेसमभ्फबूभफपगआगै धरजै॥ ३२ ॥ हहारेहँस
तांहँसतांरारनकरिये ॥ ३३ ॥ ललारेलच्चणसीखकु
लच्चणहरिये ॥ ३४ ॥ च्चारेच्चमाकरैजासोंमितबो
लो ॥ ३५ ॥ त्रत्रारेतृणसमानसूरखमनतोलो ॥३६॥
ज्ञज्ञारे ज्ञानविनापशुपूंछविहाणो ॥ ३७ ॥ अआ-
रे अर्थ विनाविद्याधनकाणो ॥ ३८ ॥ आआ-
रे -आदरभावसबनसोंकीजै ॥ ३९ ॥ इ ईरेईश्व
कोसुमरणचितदीजै ॥ ४० ॥ ईईरेईर्षाद्वेषमाग जो
मनकी ॥ ४१ ॥ उउरेउधरइधरतोदेखो तनकी ॥ ४२ ॥
ऊ, ऊऊरेऊंचीपदवीपरमेश्वरदेसी ॥ ४३ ॥ एएरेए

कवारसुखदुखकीकहसी ॥ ४४ ॥ एऐरेएसीकर
णीतोकबहुँनकहिये ॥ ४५ ॥ ओओरेओलंभोप्रभुको
क्यूंसहिये ॥ ४६ ॥ औऔरेऔरकामतोमबहीदू
णा ॥ ४७ ॥ अंअंरे अंगहीनहरिभक्तिविहूणा
॥ ४८ ॥ अः अः रे अः करतोजलनहिपी
जै ॥ ४९ ॥ ऋऋरे ऋणमाथेकबहूँ नहिंकीजे
॥ ५० ॥ लृलृरेलृलृ करतोघरघरनहिंफिरजे
॥ ५१ ॥ ॠॠरेऋद्धिसिद्धिदाताहियधरिजो॥ ५२ ॥
दोहा ॥ यह शिक्षाबत्तीसको, जो कोइबांचैसार ॥
श्रीधरसांचाहेतसूँ, परजाकरैजुहार ॥ १ ॥ इति ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीकी विनती।

छप्पय।

जयतिराम सुखधाम काम अरिचाप विभंजन ॥
जयतिबहुल अतिविमूढ नृपकुलमदगंजन ॥ जयति
सत्यव्रत जनक कठिनतर प्रणपरिपालक ॥ जयति
देव दुष्करचरित्र माया नर पालक॥ जयतिजयति मो

हनी सहज छवि विवश नारि नर मनहरण॥ जयति जयति नवल घन वरण श्रीराम चन्द्र करुणाकरण॥ १॥ इति॥

अथ श्रीकृष्णचन्द्रजीकी बिनती।

छप्पय।

जयति यशोदानन्द सुखद सुर मुनि द्विजत्राता॥ जयंतिदेव वसुदेव देवकी अभिमतदाता॥ जयति रासमण्डल विलास मण्डन गुणमण्डित। यजति मत्त कन्दर्प दर्प भञ्जन अतिपण्डित। जय जयति तृस महिपाल मिप प्रबल दितिज कुलदलदरण। जय जयति कृष्ण प्रभु वपुधरण मम इच्छापूरण करण॥ १॥ इति॥

अथ श्रीविष्णुजीकी विनती।

छप्पय।

जय जय धृत बटुरूप जयति सुरकारजपटुतर॥ रणमख बलिकृत दैत्य जयति बलिदैत्य दर्पदर॥

जयति तीनपग भुवन करन भयहरन भरन सुख। अशरण शरण दयालु दरणदुख अति सुन्दर मुख। जय जग पावन रावण दुखद वर अभीष्ट रस अघ हरण। जय वामन वपुधर विष्णुप्रभु ममइच्छा पूरणकरण॥ १॥ इति॥

अथ चीरहरण लीला।

हमरो अम्बर देहु मुरारी॥ टेक॥ लै सब चीर कदम चढि बैठे हम जल मांझ उघारी॥ तटपर विना वसन क्यों आवैं लाज लगति है भारी। चोली हार तुमहींको दीनो चीर हमहिं देव डारी॥ सुन्दरश्याम कमलदललोचन हम हैं दासि तुम्हारी। जो कछु कहौ सोई हम करिहैं चरण कमलपर वारी॥ अँग अँग कम्पत कृष्णविहारी विनती सुनहु हमारी। सूरश्याम कछु छोह करोजू शीत भई अति भारी॥

अथ जलविहार लीला।

राधे छिरकत छल छबीली। कुच कुंकुम कंचुकि

बंद टूटे लटकि रही लट गीली ॥ वन्दन शिरताटंक गंडपर रत्न जटित मनि लीली । गति गयंद मृग-राज मुकटिपर शोभित किंकिणि ढीली ॥ मचो खेल यमुना जल अन्तर प्रेममुदितरस झीली ॥ नन्दसुव नभुज ग्रीव विराजत भाग सुहाग भरीली ॥ वर्षत सुमन देवगण हर्षित दुंदुभि सरस वजीली ॥ सूर श्याम श्यामा रस क्रीडत यमुना तरंग थकीली ॥१॥

अथ चुगुलखोरनको कवित्त ।

चूकजात जौंहरी जवाहिर परख जानैं चूकजात पण्डित पढ़ैया वेद चारीके॥चूकजात घोड़ेको चढ़ैया असवार पूरो चूक जात वाजे रोजगार रोजगारी के। चूक जात मेघराजनकी वातहूमें कैवो चूकजात या लिखैया लेख धारीके । वाणकिरपाणको चलैया पूरो चूक जात नहींचूके है चूकै है चुगुल कर्म्म खारीके ॥ इति ॥

अथ बांसुरीलीला।

बांसुरीदीजेहोव्रजनारि ॥ १ ॥ कृष्णवचन ॥ काल्हिसखीयहठौरबासुरीभूलिविसारी ॥ लेजुगईतुम घामढाकहमसुनीतुम्हारी ॥नाहिंनतुम्हरेकामकी,वंशी हमरीदेउ॥ हम आतुर ह्वै मांगहींतुमनाहिजुनाहिंक रौ ॥ २ ॥ सखीवचन ॥ लंगरकन्हैयाढीठतोहिंअव कौन पतीजै ॥ डारिदियोकहिंऔरदोष हमहीको दी जै ॥ तुम ऐसे लंगर केतके, मांगतहमसोंछांछ ॥ चतुराईप्रभुछांडिकैतुमकहानचाओहाथ ॥ ३॥ कैसी वंसीहोतहमनयननदेखी॥ बापतुम्हारेसाधुलालनहीं तुमवड़ेविवेकी ॥ इतउतखेलततुमफिरो, कहिं खेलत विसरिगई ॥ तेरी सौं बाबाकिसौंह, हममुरली नाहिं लई ॥४॥ कृष्णबचन॥ बंसीदेहु गँवारिकाहे कोरारिव ढावो ॥ मनमें समुझिविचारिकाहेको लोगहँसावो ॥ लोंगहँसेचरचाकरैं, मनमेंसमुझिविचारी॥ बंसीहमारी प्रेमकी तुमकाहेनदेत गँवारी ॥ ५ ॥ सखीवचन ॥

हमकोकहतगँवारिआपनीकरतवड़ाई ॥ मारोंगुलचा तानितवैवाद्याकीजाई ॥ लैलकड़ीमुखपैधरी, बंसीता कोनास ॥ जाघरतुमसेपुत्रहैं, उजरतवाकोगाम ॥६॥ कृष्णवचन ॥ बसैकिऊजरहोयनहींपरवाहतिहारी ॥ तुमसीहैंलखचारनंदघरगोवरहारी ॥लाखरहैदरवार-खड़ी, लखआवैंलखजायं ॥ लखनितउठिदरशनकरैं सुन्दरमनपछितांय ॥७॥ सखीकावंसीदेना ॥ ग्वालि-नचतुरसुजानबांसुरीआपहिदीन्ही॥मोहनचतुरसुजा-नसांवरेहँसिकेलीन्ही ॥ लैवन्सीग्वोलिनमिली, घूंघु-टवदनदुराय ॥ सूरदासप्रभुहारी ग्वालिनि, जीतेयदु पतिराय ॥ ८ ॥ (श्रीकृष्णकामुरलीवजाना) लै-वंसीयदुरायजाययमुनातटकीन्हीं ॥ सुरतैंतीसौकोटि वहांसरवनजोलीन्ही ॥ भक्तवत्सलसुखदायक, राखो सवकोनाम ॥ तिनमेंतुम प्रभुआपहो गुणगावतसूर सुजान ॥ ९ ॥

इति श्रीसूरदासकृतवंशीलीलासमाप्त ॥

अथ नागलीला।

छंद॥ शुभघरीशुभदिनमुहूरतनंदकेलालाभयो ॥ लाइयेब्रजराजपंडितसुरनरनकोदुखगयो॥धनिधनिय शोदाभाग्यतेरेगोकुलाकोसुखगयो ॥ कंसआज्ञाफूल कारणकृष्णवनमालीभयो ॥मारोगेंदगिरोयमुनामेंकू दिकालीदहगयो ॥ जहँनागसोवैनागिनिजागेकृष्ण पहुंचेजाइके ॥ करजोरिबिनतीकरतनागिनिजाहुला लनभागिके ॥ नहिंनागतुमरोशब्दपैहैजागउठिहिरि साइके ॥ नागजागैहमैंलागे अवतोभागेनावनै ॥ होनिहोइसोहोयनागिनिनागअवनाथेवनै॥ करजोरि बिनतीकरतनागिनि ऐसोलालनमतिकहो॥जाकेसहस फनदोसहसजिह्वातासेसरवरिमतिलहो॥ कंस केसँग पंसखेलैंनागकोसंहारिकै॥नागनाथवफूललादवगोकु लाकोजाबरे।पीठठोंकिजगायनागिनिनागउठोरिसाइकै। अवसहसफनफुफुकारछांडे कृष्णकालेहो गये। कृष्णउठि जबगरुड टेरोगरुड पहुंचोधाइकैगरुडआवतनागदेखो

नागकेमूर्छाभयी ॥ नागकेमूर्च्छाभयीतबकृष्णपहुँचेधा
इके॥लादलीनाकमलडंडीनागनाथेउजाइके ॥ कर
जोरिविनतीकरतनागिनिमांगिप्रीतमपाइहौं ॥ अहि
वातदेयजशुदाकेनंदनबंदिछोरकहाइहौ ॥ तबतो
नागिनिसोंयोंबोलेअबतुविनतीक्योंकरे ॥ तेरोनागछी
नहिं सकेकेऊचरणचिन्हलखातरे ॥ कंसमारिनिजय
शकीन्हसंतसबसुखपावहीं॥ अबसूरकेप्रभुनागलीला
रहसमंडलगावहीं ॥

इति श्रीनागलीला समाप्त।

अथ विद्याबत्तीसी।

दोहा॥ श्रीकृष्णकीशरणहू सुधिबुधिदेततकाल ॥
विघ्नहरणसबसुखकरण, नमोनमोगोपाल ॥१॥ गादी
कोसलनगरकी, राजेश्वररणजीत ॥ यहविद्याबत्तीसि
को, म्हेताकरीअजीत ॥ २ ॥ प्रातहिउठगुरुध्यानधर
प्रभुके चरणसंभार ॥ सादरगणपतिसुमिरिकै, करवि
द्याउपचार ॥ ३ ॥ काननसूंगुरुवाक्यसुन, मुखसोंकरो

उचार॥फेरिहृदयधरकरलिखो, अक्षरनयननिहार॥४॥
पंचवर्षसेआदिलै करविद्याअभ्यास ॥ जबलग कारे
केशहों छांडनविद्याआस ॥ ५ ॥ अक्षरमात्राअंक
सिख, फिरसंयोगविचार॥इसविद्याका पारनहिं, होय
अपारअपार॥ ६ ॥ तनछलआलसअंगते, ढीलापन
मतधार॥विद्याश्रमअरुलगनसे, सदा सँभारसँभार॥७॥
एकचित्तह्वै बैठकरि, पूरणगुरुसेपाय ॥ सुधिविद्याकूंस
मझकै, सीखोनितप्रतिजाय ॥ ८ ॥ थोड़ोहीपढ़बोभ
लो, श्रद्धासेनरश्रेष्ठ ॥ बेश्रद्धाकेविरुधहोय, बहुतपढ़ै
फिरकष्ट ॥९॥ क्रमक्रम विद्यासीखियां, मूरखपंडितहो
य॥ बूंदबूंदजलबरसियां, सागरपूरण सोय ॥ १० ॥
विद्याकोसंग्रहकरो, विद्यारत्नरसान ॥ विद्याजगमेंगु
प्तधन, लोहाकंचनभान ॥ ॥ ११ ॥ कामधेनुयाज
गतमें, जाहिरविद्यायोग॥ मूरखनरसमझैनहीं, भुग-
तैअपनोभोग॥१२॥ विद्यारूपीव्यसनरख, राखहर्षहिय
माहिं॥विद्यादेशविदेशमें, मंत्रहोयकरिसाहिं॥१३॥ हि

स्मातकम्बहुंनहारिये, विद्यापढिवेमाहिं ॥ हिम्मतसे
कीमतवड़े, देखविद्याकीछांहि॥ १४ ॥ पढवेमें कबहुं
नहीं, खालीदिनमतखोय ॥ पीछेपछताना घणा,
कांरीलगेंनकोय ॥ १५ ॥ भलिविद्याकी त्रासना,
जासेसवसुधहोय ॥ विद्यासेभलपनमिलै, पाछेबहुसु
खहोय ॥ १६ ॥ विद्याकोसुखबहुतहै, त्रीसे अधि
काय ॥ वाघरमाहेसुखकरै, औघटमेंसुखथाय ॥ १७ ॥
मोटेकुलमेंजनमले, विद्या सीखीनाय ॥ धृकली
नोवाकोजनम, पशुसंज्ञामें आय ॥ १८ ॥ विद्या
सवकुलरीतिहै, नीचहिउत्तम दीख ॥ कुलकोकारणना-
हिहै, विद्यासोंनरतीख ॥ १९ ॥ राजकाजविद्यावि
ना, कहाकरोपरवंध॥न्यायरीतिगुणरीतसब, बिनविद्या
नरअंध ॥ २० ॥ विद्यासेबुद्धीवढ़ै, विद्यारोजीसार
॥ विद्या विनभागनखुलै, बड़विद्याउपकार ॥ २१ ॥
विद्यासे आदरमिलै, विद्यामेसन्मान ॥ विद्यासेयु
क्तीवढ़ै, विद्यायुक्तीज्ञान ॥ २२ ॥ विद्याविनबुद्धी

नहींविद्याबिननहिंसिद्ध ॥ विद्याबिनवृद्धीनहीं, विद्या
बिननहिंरिद्ध ॥ २३ ॥ विद्यानूचोरनलगे, वरत्यां
खूटेनाहिं ॥ ज्यूंखरचैत्यूंबहुवढ़ै,है यशजगकेमाहिं
॥ २४ ॥ विद्यासागरहैवड़ो, विद्याकोनहिंछेह ॥
जोचाहोसोफललहो, विद्याबड़पनएह ॥ २५ ॥ वि-
द्यारूपसभानमें, विद्यारूपविवाद ॥ विद्यारूप वि-
रूपकी, विद्यारूपसंवाद ॥ २६ ॥ वैद्यकज्योतिषत
रकमत, सबविद्याआधीक ॥ विद्याविननरबेसुरत,
कहाकरैपरवीन ॥ २७ ॥ कुलमें विद्यावंत इक, दी-
पकहोयउजास ॥ अंधेरोसौशठनसे, कहाकरैपरकास
॥ २८ ॥ द्दष्टीविद्यावानकी, चहुँदिशिपहुँचैजाय ॥
विद्यामेंसबगुणबसैं, विद्याविनानकाय ॥ २९ ॥
विद्यामेलज्ञातजो, देखोग्रंथ अनेक ॥ तंतसारसेप्यार
कर, ऐसीधारोटेक ॥ ३० ॥ गुरूकृपाखातिरजमैं,
भइजोबारंबार ॥ आछीबुधिभइशिक्षकी, विद्यासारं
सार ॥ ३१ ॥ विद्यासोंदिग्विजयहै, विद्यासेसबजी

त ॥ विद्यासे पूरणपुरुष, होयअजीतअजीत ॥ ३२ ॥ वातां चतुराईविद्या, आसीकेदिनयाद ॥ जाताजुगांन जावसी, निसरीआदिअनाद॥ ३३ ॥ धन हैं विद्यावानकूं, धनजननी धन तात॥ धनध नहैगुरुदेवकूं, धनहैंउनकीजात ॥ ३४ ॥ अरज करत अजीतये, वहुतनमोमेंबोध॥ भूलचूककूं जांचकर, शुद्ध करो कविशोध ॥३५॥ उगनीसौअट्ठारवें, दीपमालशनिदिन्न॥ कियोसँपूरणग्रन्थकूं, पढ़िमन कुवैप्रसन्न ॥३६॥

इति श्रीविद्याबत्तीसीम्हेताअजीतकृतसंपूर्णम्।

प्रलम्बासुरबध लीला।

कवित्त॥ एक ओर श्याम सुखधामसंग सखा लीन्हे राम अभिराम दूजोग्वालगनि लीन्हो है। फलको वुझावलागे खेलन सुमेल मिलि बाल केलिखेलि में सरस रस भीनो है। असुर प्रलम्ब तहां ग्वालरूप आय मिलो बलाहीं चढ़ाय पीठ जाहैछल कीन्होहै॥ कसिकै मसकि बलि हँसिके यों वशाकीन्हों चसकि सक्यो न ससकनि प्राण दीन्हो है॥

दावानलपान लीला।

कवित्त॥ एकदिन महर महरि गोपी ग्वालनि शिवमनवसि मति गति आरसमें भीनीहै। दावानल दुष्ट तहां आय चहूँ ओर छाय जाय लाय वनको जरायराखकीनीहै। लखिभयपाय ग्वाल पाहि त्राहि भाषी सुनि आंखिन मुंदाय आगि पान कीन्ही हीनी है। जहांज्योति जोमतम तोमहि गिलत देख्यो हरिदास तमजाने ज्योति गिलि लीनी है॥ इति॥

पनघट लीला।

कवित्त॥ गोकुलकी नागरी लै गागरी उमंगि चलीं रूप गुण आगरी उजागरी सुभायकै॥ नागर नवलनट ठाढ़ो पनिघट घाट पीतपट मुकुट लकुटि अटकायकै॥ आवैं जे भरनघाट ताको ढरकाइ देत लेत अपनाइ घटलाजनि घटाय कै। निमिष विसारिकै निहारैं व्रजनारी पतिव्रत पनिहारी पै निहारैं तट जायकै॥

चकई भौंरा खेलन लीला ।

चौपाई॥ देमैया भौंरा चक डोरी । खेलत रहि हौं ब्रजकी खोरी॥ हर्षि जननि आरे पर भाषे। तुमहितनये मोल लै राखे॥ लै आये हरि तुरत निकारी। भये मगन हरिरंग निहारी॥ विहँसि चले फेरत चक डोरी॥ खेलत सखन संग ब्रज ओरी गोपिनकेयह ध्यान सदाई। नेक न अन्तर होहिं कन्हाई॥ मारग चलति तिन्हैं हरि रोंके । खेलतमां भ जहाँ तहँ टोंके॥ चकई भौंरा डोर फिरावैं। तिन के भूषणसो अरुझावैं॥ गेंदउरोजन मांहि दुरावैं ॥ यहि विधि हरिसों अंग छुवावैं॥ कंचुकि फारि आप ही लेहीं ॥ यशुदहिं जाहि उरहनो देहीं ॥ इति॥

अघासुरबध लीला ।

दोहा—गावत खेलत हँसतसब, सखावृन्दगो साथ ।
पहुंचे वृन्दाबन सघन, वृन्दाबनके नाथ ॥

कवित्त ॥ अघओघ अघ नाम पापी अजगरतनु धारि मुखफारि उन बाट सवै रोकि लीन ॥ मंदरकी कन्दरसो सुन्दर निहारि ताके अन्तर गवाल सब गायन गमन कीन ॥ वहर दहनजोदहन लागो तबै अहि धुनि सुनि श्याम ताके मुख माहिं भये पीन ॥ मुख नहिं सक्योमीच भयोमीच वश नीच आपै प्रभु कीन्हों ताको जीव निज ज्योति लीन ॥ इति ॥

माटीखान लीला ।

कबित्त ॥ आनि नँदरानीसों कह्यो है काहू आनि आज माटी खात देख्यो अवैं तेरोरी नँदन मैं । सुनत रिसाय सुत बोलिमुख खोलि देख्यो एकैब्रह्म दूनो भेद तीनोंदेवतनमें ॥ चारो वेद पांचो भूत छहौ ऋतु सातो ऋषि आठो वसु नवो ग्रह दशहूँ दिशनमें ॥ ग्यारहो महेश औ दिनेश वारहो विलोकि तेरहो रतन लोकचौदहो बदनमें ॥ इति ॥ छं० ॥

बैठेजोजेवननंदके सँग श्याम औ बलराम ॥ भोजन

बने के भांतिके अब सुनौ तिनके नाम ॥ पापर जलेबी और पूरी भात उज्वल अति करे । मूंग की है दालि सुन्दर चनाके व्यंजनधरे ॥

चौपाई–मिश्रीदधिओदन मिश्रितकर । लेत श्याम सुन्दर अपने कर ॥ आपनखात नंदमुखना में । सो चवि कहत कौन पै आवै ॥

सोरठा–कोऊरिसकेवखान, भाग्ययशोमतिनंदकी ब्रह्मरह्यो रुचिमान, बालरूप जिनके सदन ॥ इति ॥

पयछोड़ावन लीला।

कवित्त॥ वैठे श्यामसुन्दर यशोदा गोद आँगनमें अतिहि हरष युत चीरपान करैं हैं ॥ बारबार कहति जननि सुनौ लाल मेरे छीर नहीं पिवौं हँसत ग्वाल खरे हैं॥ जे हैं दन्त बिगारि अधिक छीरपान कीन्हे कवि हरिदास कहैं मातु मख हेरैं हैं। मुख भपिअंचर सो तव नंदलाल रहे देखि मातु छबि अतिमोद मन भरे हैं।

वृंदाबन वर्णन लीला।

कबित्त ॥ श्याम सुखधाम वृन्दावनकी ललाम छबिराम अभिराम प्रतिभापी सुखदाईकी। वेलिभुज वेलिनकी तरुगरे मेलिनकी वेलन चमेलिनकी महक सुभाईकी ॥ शाखा फल फूलनकी भारभरी झूलनकी यमुनाके कूलनकी अनुकूल ताईकी ॥ शोभा मंजु कंजनकी भौंर पुंज गुंजनकी वंजुलके कुंजनकी रंजन सुहाई की॥ इति॥

कर्णछेदन लीला।

दोहा—महरि तबहिं इमि नंदसों, कहत भई कर जोर।
हरिको कन छेदन करहु, होय मनोरथ मोर ॥

छंद—बाजी बधाई नंदके गुरु नारि सब हर्षित भईं।
प्रथम मुण्डनको कियो फिरि कर्णवेधनविधिलई ॥
सुन निरखि अति मन हर्षसों तव सुमनकी झरि कर दई। धरिसुपारीपानपर तब नारि गुरुभेलीदई

दोहा—यहि विधि कनछेदन कियो, नारि उठीं तब गाइ। पहिराई ब्रजबधुन कहँ, सारी नई मंगाइ।

जानुपाणिविहरन लीला।

कवित्त॥ अलख अगुण अज अचल अनादि आदि अलह अनंत अंत जाको न कह्यो परै। पूरण परम पुरुषोत्तम प्रकाश पाँचौ पावक पुहुमि पौन पाणि परते परैं। शिव सनकादि सरस्वती शेष श्रुति जाहि जैसोहै सोकहि न सकत मति हूं हरै। सोई शिशुधारि रूप यशुदाकी वसुधामें. हँसिहरि धावै भावै जानुपाणि विहरै॥

अथ शिक्षाबत्तीसी प्रारंभः।

श्रीगणेशाय नमः॥ दोहा॥ श्रीवल्लभविट्ठल प्रभू, गिरिधर गोविंदराय॥ बालकृष्णगोकुलरघूयदूश्याम घनसाय॥ १॥ गड़जेसाणैं पैंतपैं, रावल श्रीरणजीत॥ यहशिक्षाबत्तीसको, मेहताकरी अजीत॥ २॥ मंत्रीसेवनकीजिये, नृपसेवन केकाज॥ केव-

लनृपनहिंसेविये, सेव्याहुवैअकाज ॥ ३ ॥ पहलोभय
भगवानको, भयदूजो भुवपाल ॥ तीजोभयलोकीक
को, राख्यांविनमतचाल ॥ ४ ॥ देखइष्टअरिगुणपर
स, पैदाखरचसंभार ॥ हरयककारजकीजिये, समय
विचारविचार ॥ ५ ॥ सबदिनहोंयनएकसे, समझ
विचक्षणबात ॥ बरतनऐसीबरतिये, आदि अन्तनि
भिजात ॥ ६ ॥ खावोपीवोखर्चलो, करलोसुकृतका
म ॥ तनमनधनथिरनहिंरहै, थिरहैगोविंदनाम ॥ ७ ॥
नित उद्यमकरि आपनो, नितगोविन्दगुणगान ॥
नितविद्याअभ्यासकरि, नितप्रतिबढ़ोसुजान ॥ ८ ॥
वृथा काल नहि खोइये, वृथा न बकिये वाद ॥
वृथा न निन्दा कीजिये, वृथाशोचउन्माद ॥ ९ ॥
अति लालच अति आलसी, अति कृतघ्न अतिघा-
त ॥ अतिसवंत्रनकीजिये, अतिहांसीउत्पात ॥ १० ॥
नृपरानीअरिचोरजन, कपटकूटचुगलान ॥ नदीनखी
शृङ्गीअगन, यहविश्वासनमान ॥ ११ ॥ हिकमत

करअरुउदरभर, किसमतपररहुनाँहि॥ हिकमतमोंकि
समतवसै, करिदेखोजगमाहिं ॥ १२ ॥ भावज्यूंखा
वोमती, वहतोजगतखुहाय ॥ जैसीजहंयुक्तीहुवै, तै
सीउक्तिमिलाय ॥ १३ ॥ षटभाषाविद्या शवद, क-
ला वहत्तरजान ॥ विनदेखेसीखेकरे, सुनेबिनानहिं
ज्ञान ॥ १४ ॥ बुद्धिवानबोलीयसे, बिनबोलीनहिंबु
द्धि ॥ वक्तदेखिकैबोलिबो, सबबातनमेंशुद्धि ॥ १५ ॥
सज्जनतोसकडाभला, दुर्जन भलाजुदूर ॥ निजजन
तोनैडाभला, बुधिजनसदाहुजूर ॥ १६ ॥ वक्तवि-
गारैबड़नकूं, सुधरैबखतसमाज ॥ विगरेसुधरैबखत
से, बखतबड़ीहैराज ॥ १७ ॥ कलौकालसंदूररह, धन
नरधर्मछिपाय। मूर्खसचिवनहिंकीजिये, तनकोजतनर
खाय ॥१८॥ बसीबखतवखथापनो, विद्यारीतिविवेक
सतसंगतिसंसारमें, इन समाननहिंएक॥ १९ ॥तन
सुखधनसुखनारिसुख, सुखसंततिसुखराज॥सुखसुथा
नकविमित्रसुख, पुनिपुरबसेसमाज॥ २० ॥सीरहोय

सोईमिलै, विनासीरननहिंजान॥ कर्मक्रियाविननाखुलै, विधिकेअंतप्रमान ॥ २१ ॥ शीततपनवर्षासहे, प्रभुइच्छाप्रतिपाल॥ सर्ववस्तुसंग्रहकरो प्रापतफलकोकाल॥ २२ ॥ दिशाविदिशाकूंदेखके, तीखीतरकनिकाल ॥ स्वप्नान्तरसोंख्यालहै, कटैआलजंजाल ॥ २३ ॥ थिरतातेबिपदाकटै, यतनकियादुखदूर ॥ श्रमसेसुखउतपन्नहै, धर्मसेधनहैपूर॥ २४ ॥ धरणीसेधरध्यानतू, हटैहान सबजान ॥ धरणिबड़ीया जगतमें, ढकैदोषपरखान ॥ २५ ॥ जलजमीनकेयोगसे, पैदायशजड़होय ॥ जोवोवैसोहीलुवै, मेहनतकरिफलहोय ॥ २६ ॥ रागवसीरसचीजरंग, चंचलगुणउजलान ॥ धनखोवनकूंमनहुवैकरोप्रीतिगणिकान ॥ २७ ॥ रहतेखुखमेंमित्रसब, दुखमेंरहैनकोय ॥ विपतिविदारनकोखरोदुखमेंमंत्रीहोय ॥ २८ ॥ रतिरहैतेयशरहै, गयारीतसबजाय ॥ जनममरणयाजगतमें, रीतिबिनानहिंकाय॥ २९ ॥ सबहीस्वराथकेसगे, पर

श्रीकृष्णचंद्रजीकी बारहमासी।

प्रथममहीनाआषाढ़जोलागावर्षाऋतुआई॥ प्रीतमहमरेश्यामसलोनेपातीभिजवाई॥ कहोवेकैसेनहिंआये॥ ऐसेचतुरसुजानश्यामचेरीनेबिलमाये॥ डालगएजादूकीफांसी॥ श्रीराधागोपीत्यागकरीघरवारीकुबिजासी ॥ १ ॥ सावनमेंमनभावनहमतोदामनसोंलागी॥ जबलोहमसोंप्रीतिबढ़ीहरिअबकाहेत्यागी॥ सुनोतुमऊधोमेरीसों ॥ लाजशरमकितगईप्रीतिजबकीनीचेरीसों ॥ नहींमोहिं आवतिहैहांसी॥ श्रीरा०॥२॥ भादों रैनि अँधियारीबोलेप्रीतमकीप्यारी॥ अन्ननभावैनींदनआवैसंकटअतिभारी॥ मिटावैसंकटक्यों ऊधो ॥ ऐसेकुटिलकुजातश्यामकोजानतिहीसूधो॥ मारिगयेविरहकीगांसी॥ श्रीरा०॥ ३ ॥ लागत क्वारकनागतआयेसबकोइधर्म करै ॥ मैभीधर्म करोंगीजबहींप्रीतम नजर परै ॥ मिलावैहैकोईऐसा ॥ लैअकरगयोमथुराकोकरियेरीकैसा॥

बुद्धिवाकीनेअभिमानी ॥ श्रीरा० ॥ ४ ॥ कार्तिक कौतुक कियो कृष्णने हम सबकोउजानी ॥ आखरजातअहीरश्यामकेकुबिजा मनमानी ॥ कंसकी हैआखिरचेरी॥ याहीतेदिनरैनआँखमेरीफरकतहैंडेरी लगीमेरेजियकोचौरासी ॥ श्रीरा० ॥ ५ ॥ अगहनमेमनचमकनलागाधड़कतिहैछाती ॥ उद्धवहाथ सँदेशाभेजाबाँचोंरीपाती ॥ लिखौकुछतूभी बालम कूं ॥ जोनमिलोगेवेगिजियतनहिंपावोगेहमकूं ॥ हमारेजियकेसुखराशी ॥ श्रीरा० ॥६॥ पूषमासमें चलेगयेमेरेप्रीतमसेइय रे ॥ काननलागेदूतकरीहैन यनसेन्यारेहमैंयहमदनसतावतहै ॥ जियकेजोरनकाजसँदेशोऊधोलावतहै ॥ खबरतुमलीजोअविनाशी श्रीरा० ॥ ७ ॥ माहनाहकेडाहपिया तुमछोड़ीह-मजानी ॥ रोवतिउठतिकराहिबातसब ऊधोनेजानी॥ ज्ञानकीबातेंदरशाई ॥ कृष्णहिदेहु मिलायलायसब गोपीसमुझाई ॥ झूठसबहीकेमनभासी ॥ श्रीरा० ॥

॥८॥ फागुनफीकोलगै रैनदिनहोयरहीविसमें ॥ पातीबाँचतदोम सखीयकयोंबोली रिसमें॥ लगे अब साहकरनचोरी॥ हमरेजियतकान्हकितबांदीसँगखेलैं होरी ॥ खबरमेरी लीजैकैलाशी॥ श्रीरा० ॥ ९ ॥ चैतचितासैं जरौंबरौं मैं गिरती कुइयाँमें ॥ कहियो मदनगोपालसंगकुबिजाकूं लेआमें ॥ कछू इनसौं तनको डरना ॥ हमगोपी दरशनको प्यासी औरन हींकरना ॥ खबरमेरीलीजैब्रजवासी ॥ श्रीरा० ॥ ॥१०॥ लागतहीबैशाखसाखसबहीकेघरआई॥ ऊधो जीनेजायकृष्णसोंऐसेसमुझाई ॥ पैजतुमहकनाहक रोपी ॥ हाड़माँसगलिगयेबावरी ह्वैगईसबगोपी ॥ लोहिंगीकरवटहूकासी ॥ श्रीरा० ॥ ११ ॥ ज्येष्ठ मासमेंमिलेकृष्णजबराधागोपीसे ॥ ब्रजबासिनआनंद भयोछूटेसबबाधासे ॥ कृष्णकी यह बारहमासी ॥ पढ़ैसुनै वैकुण्ठसिधारेछूटैयमकीफांसी॥ साँच यह मेरेमनमासी॥ श्रीरा०॥ १२॥

इति श्रीकृष्णचन्द्रजीकी बारहमासी सम्पूर्ण॥

श्रीरामचन्द्राय नमः।

अथ कौशल्याजीकी बारहमासी।

कार्तिककूचप्रयागसेकीनोकौशल्याशोचकरैमनमेंरे ॥ रामलषणसियावनकूं सिधारे दशरथ प्राणतजे घरमेंरे ॥ दरशनदेवोमेरेप्राणपियारेतुमबिन और हमारे ॥ १ ॥ अगहनगैलचलोजव प्यारेदरदहोत मोरेतनमेंरे ॥ चलतचलतजवपैयां पिराने कोई नतुम्हारोवावनमेंरे ॥ दर० ॥ २ ॥ पूषभरतजबचले लेनकासौतिनदाहभयोमनमेंरे। मैंजानीरघुवरघरआ येहैं फूलीनमाऊंमोनयननमेंरे ॥ दरशन० ॥ ३ ॥ माहैंमामभरतफिरआयेहूकउठीमेरे उरमेंरे ॥ तलफति फिरौं अयोध्यामाहींजैसेमीनफिरैजलमेंरे ॥ दरशन० ॥४॥ फागुनफिरबैठेवन माहींसीताहरणसुनाजबमेंरे॥ रामलषणअबढूँढतहोंयगेवैदेहीकोकाननमेंरे ॥ दरश न० ॥ ५ ॥ चैतमेंचिंताकरैंभरतजीकैसेराज्यकरूंअब मेंरे। बिनरघुवरमेरोजीवननाहींमैंभीप्राणतजौंछिनमे

रे ॥ दर० ॥ ६ ॥ मासवैशाखभरतनहींमानोशोच भयोसब नगरीमेंरे ॥ रामलषणप्रभुसीयसमेताध्यान नधरौ सवनिजउरमेंरे ॥ दरशन० ॥ ७ ॥ जेठमिला प भयो सुग्रीवावालीप्राणहतेशरसेरे ॥ वालीमारिशै लफिरद्मायेताराविकलभईमन मेंरे ॥ दर० ॥ ८ ॥ लागो अषाढघुमड़रहे वदराशोचभयो अबमोमनमेंरे विनमोरेलालवागसवसूनेशोकपड़ो सबनगरीमेंरे ॥ दर० ॥ ९ ॥ सावनघनगरजतचहुँओरा नामलषण गोरेपर्वतपेंरे ॥ विनसियसंगशोचउरहोयहैमेरेहूप्राण धरे उनमेंरे ॥ दर० ॥ १० ॥ भादौं मेवंदरसबधाये पूरचपश्चिमदक्षिणमेंरे ॥ कूदसमुद्रहनुमानसिधारेसीता खबरदई छिनमेंरे ॥ दर० ॥ ११ ॥ क्वार त्रिकूटलंक जवजारीरावणप्राणबसे उनमें रे ॥ रावणमारिरामघर आयेआनंदवधाइभोगृहमेंरे ॥ दर० ॥ १२ ॥ देवी सिंहसियारघुवरकोध्यानधरैघरबाहरमे रे ॥ तुमबिन स्वामी कोईनहीं मेरापांयधरोअबमेरेशिरपैरे ॥ द० ॥ १३ ॥

इति श्रीकौशल्याजीकी बारहमासी संपूर्ण।

युगलकिशोरजीकीबारहमासी।

श्रीगणेशाय नमः ॥ असाढआशाकरौजुपूरण
करोकृष्णफेरी ॥ कालीघटाघुमड़िचढ़िआईपवनचले
सीरी ॥ विजलीचमकेहियरालरजेधीरजनहिंधरती ॥
बिनानीरजैसेमीनतलफैदुखिया दुखभरती ॥ १ ॥
सावनसमझपरीमनमेरेआवैंगेबलमा ॥ सादीकरौपि-
याघरआवैंआईऋतुबामा ॥ योवनखोलधरौंउनआगे
अन्तरनहिंरखना ॥ सादीकरौपियाघरआयेबेरसकीब
तियां ॥ २ ॥ भादौंगहरगंभीरपियानहिंआयेरीमाई ॥
सूनीसेजतड़फरहिकामिनिविरहविथाछाई ॥ जलथल
नीरभस्योनदियनमेंचातकमरैप्यासे ॥ अपनेसुखकेलोग
बहुतहैकुटुंबसासुससुरे ॥ ३ ॥ कारकरारकियेसखियनसे
नहिंआयेबलमा ॥ मैंनिरभागीत्यागिपियापरदेशगये
रीमा ॥ परदेशिनकाबुरामामलाखुनिफाटैछाती ॥ ४ ॥
वर्षागईशरदऋतुआईनिर्मलभयेचन्दा ॥ कार्त्तिकसु-
न्दरखिलीचांदनीडरपैजीमेरा ॥ पीतममेरेबनेलहरिया

ओढ़ीचंपकली ॥ अबकेबिछुड़ेरामसिलावैंज्योबरसेमो
ती ॥ ५ ॥ मृगशिरभाग्यभरीनखशिखसोंशीशफू
लटीका॥ काहिसखीरीपहिरिदिखाऊंपियविनसबफी
का ॥ ६ ॥ पूसपियापरदेशगयेकछुखबरनहींपाई ॥
पंडितपूछौंऔरज्योतिषीकहांबसेसाईं ॥ महादेवपूजा
बलपाऊंमहादेवदेवा॥शंभुसहायकरौंनहमारीपूरीलच्छ
बिचारी ॥ ७ ॥ माघमासभोगीऋतुआईजोकाहूपै
बनआवै ॥ तोसकतकियासौडनिहालीपीयाकंठलगा-
वै ॥८॥ शरदीगईगर्मऋतुआईभइबसन्तकीत्यारी ।
लालगुलालफेटमेंबांध्योरंगभरीहैभारी। फागुनफाग
सुहागनखेलैंपियाभिजोवैंप्यारी ॥ कहाकरौंकछुबश
नहिंमेरोडफगुनह्यांसूजारी ॥ ९॥ चैतैचिंतालगोजि
यामेंफूलोबनराई ॥ सुन्दरफूलखिलेमधुबनमेंमैंएक
लिमुरझाई ॥ १० ॥ भरवैशाखलालमयेकेसूश्याम
बरणगोरी ॥मोहपियानेकछुनहिंकीनोसोमोहब्बतता
री ॥ ११॥ जेठमासमेंधूपपडैहैलगैकठिनभारी ॥

ऐसेमेंकोई गैलचलेगाछांहकरूंगहरी ॥ १२ ॥ जग
न्नाथकी बारहमासीगावै युगलकिशोरी ॥ सीखैसुने
परमपदपावैऔरकटैयमडोरी ॥ १३ ॥

इति श्रीयुगलकिशोरजीको बारहमासी संपूर्णम् ।

गोपीबलदाऊजीकी बारहमासी ।

श्रीः ॥ जीबलवीरगये जबतेहरि आप न आये न पाती
पठाई । छलबलकीन्हो हरिबहुतकहमसों जाय बसे हैं
समुद्रतटमाहीं ॥ जपतपनेमकियेहरिसों हममाघन्हाय
हरिबरपाये ॥१॥ फागुनफागखेलैंहरिहमसो कीनी
प्रीतिकुबजामनमानी । मामाकंसमधुपुरीमासथरिदुष्ट
नको प्रभु मारिगिराई ॥ २ ॥ चैत्ररुक्मिणीपत्रलिखि
भेजोदेखतपत्रकुण्डनपुरजाई । रुक्मिणिप्रिय अति
लागीहरीकं प्रेमप्रीतिकछुकहीन जाई ॥ ३ ॥ मणि
केकाजगयेवैशाखमोजाम्वंबतसोंकीनलड़ाई ॥ जाम्ब-
वतीभेंटकरी हरिके तब सबसंकोचदीनमिटाई ॥ ४ ॥
ज्येष्ठमास प्रभुगये श्रुतदेवकेविप्रभयेमनको हरषाई ।

बहुलाश्वनामराजसुखदीनोंभक्तनकेघरबजतबधाई५
आषाढ़कामिनीसुखबहुदीनों आठौपहर त्रियाकरैंसेव
काई। गर्जतबादलचमकतबिजलीदादुरशोरकरैं अधि
काई॥ ६ ॥ श्रावणबूंदबरसतरुमझुमसत्यभामासँग
रहे लुभाई । झूलतरंगहिंडोलामोहनप्रेमतियनको
कहियनजाई ॥ ७ ॥ भादौं कोयलबोलतबनमेंपीव
पीवपपिहारटलाई । उन्नत काम सतावत निशिदिन
हरिबिनजियकैसेसमझाई॥ ८ ॥ क्वार अगस्त्यजल
सोखलियोहै पंथचलेजोमनुजसुखपाई । पौंड्रकको
वासुदेवसिधारे काशिपुरी क्षणमाहिं जराई ॥ ६ ॥
कार्तिकदीपकजरैं सबसखियाँघरघरआनँदबजतबधाई
॥ सोलाहजारसखियासँग रमतेएकसौआठप्रभुके मन
भाई ॥ १० ॥ अगहनतिलकअनिरुद्धकोदीन्हींसौंप
आपअपनीप्रभुताई ॥ राजपाटसबहीसुखदीन्हींआनँ
दमंगलहर्षबधाई॥ ११ ॥ पूषहरीहमसोंजबभेंटकुरु
क्षेत्रकोग्रहणनहाई ॥ बारबारमनहर्ष भयोअतिकिंक

रप्रभुगुणकरतबड़ाई ॥ १२ ॥

इति किंकरप्रभु रूगोपीवल्दाऊजीकी बारहमासीसंपूर्ण

कुबरीसंगविहारवर्णनबारहमासी ।

श्रीगणेशायनमः ॥ टेर ॥ कृष्ण अकेलेगयेद्वारका छाँड़गयेसबव्रजबाला ॥ कुबजादासीकंसरायकीमोहनपरजादूडाला॥आषाढ़ आशाकरूं जितुम्हारीनारी अकेली कुंजन में ॥ हमकूं छाँड़िबसेजायकुबजा संग माधोवनमें ॥ दासीसे प्रीतिलगाइ मोहलियावैरिन छिनमें ॥ सौतहमारीजन्मकीवैरिनविलमाया हरिनयननमें ॥ पतियांलिखती मतलबगरजीकैसे लिखूं देगये टाला ॥ कुबजा० ॥ १ ॥ सावन आवनकहगयेसाजनहमसेमोहनवचन किया ॥ मैंखड़ीदेखतीराहसखिरीअजहुँनआयेकृष्णपिया ॥ तीजनकोत्यवहार नगर में सब सखियां शृँगार किया । काल लटीकी दियेशीशपरबस्तरओढ़े नयानया ॥ श्यामबिनामेरी सेजअलुनीबागनमेंझूलाडाला ॥ कुब० ॥ २ ॥

भादोंमहिंनेगणेशचौथहैसबसखियाँगणपति पूजैं ॥ धूपदीपसिन्दूरपुष्पनैवेद्यचढ़ैंलपटैंगुंजें ॥ हाथजोड़कर खड़ीजीराधिकानाथ अरजमैं करूं तुझे। श्याम हमारामिलायदेवो बिनमोहनकछुनासूझे ॥ इतनाकारजसारोगजानन ऋद्धिसिद्धिकेकरनेवाले ॥ कुब० ॥ ३ ॥ आसोंजमहीनेदेवीअंबिकाराधापूजैंअपनीगरज ॥ हाथजोड़करकरूंजिविनतीमातामोरीसुनोअरज॥ पियागयेपरदेशद्वारका पिवकारणहुईपीलीजरद ॥ पीवपीवकरतीरैनदिनयेतोमेरे बड़ा दरद॥ इतनाकारजसारोजीअंबिका भेंटचढ़ाऊंछत्तरआला॥ कुब॥ ४ ॥ कार्तिकउत्तमबड़ामासहैसबसखियांकार्तिक न्हावें ॥ बड़े सबेरे उठकर हरिमंदिर हरियशगावें॥ दुलैमहलअरुघरघरमंदिर आजदिवालीदरशावें ॥ पूजैंलक्ष्मीनारीनरपतिव्रतासबशिरनावें ॥ श्यामबिनामेरीसेजअलुनी औरजगतमेंउजियाला ॥ कुब० ॥ ५ ॥ मृगशिरमेंमोहनघरनाहीं सोडगिंदवासरवा-

ती ॥ मैंतेरेवास्तेरेसमीपलंगविछूनाकरवाती ॥ आप
विगरमैंसोऊंजीअकेलीसूनीसेजफटैछाती ॥ दिल अ-
पनेकूंशोचकैलाखजतनकरसमझाती ॥ डालगलेमें
फांसिगयेब्रजवासिवतावोहमकोलाला ॥ कुब० ॥६॥
पोषरोंष हैंकरुंजिकृष्णपरइसऋतुमेंआयोनाहीं॥मारी
ठंढकीनींदनहींआवैमुझेसेजमाही॥जाडानेमोयबहुत
सतायारेकामनेडसखाई॥ हैंभुरझुरपिंजरहुइआयचे-
हरेपरस्याइ छाई॥ज्यूंज्यूंयहमोय आवैहृदयमेंत्योंत्यों
वदनपड़ैकाला कुब०॥ ७ ॥ माहगहीनेवसंतपंचमी
जोघरहोतामेराकंत । सवसखियनमेंखेलतीखूबमचाती
आजवसंत मैंखेलनकोकैसेजाउँनहीं मिलेरीमुझकोकं-
त ॥ दिलअपनेमेंशोचकरबैठरहीमैंआपनिचंत ॥
चैननहींदिनरैनसांवरादरशनद्योमुरलीवाला॥कुब०॥
॥ ८ ॥ फागुनमें मोहन घरनाहीं फागपियाबिन
लागी अगन॥गोराबदनमें बुझतीनाहीं आयकरो
कोइ औडजतन॥ संगकीसहेलीबनिअलबेली होरी

खेलेसंगसजन ॥ श्यामहमारा जायकर आपलगाई कुबजासेलगन ॥ फागुन आगलगीजी बदन बिच तनके वीच उठी ज्वाला ॥ कुब० ॥ ९ ॥ चैत्रमही-ना लाग्यो सखीरी सब सखियांपूजै गणिगोर ॥ उन को वालम ल्यावसीहरीहरोदूबजी गुलातोर ॥ मैं भी पूजूं भाइगवरजावेगिमिलावोमोहनचितचोर ॥गयेद्वार काप्रीतिकरकुबजासौंहोगयेकठोर ॥ इतनोकारजकरो जिगरवरजा नहिंतो हाथलेऊं माला ॥ कुब० ॥ ॥१०॥लग्यामासवैशाखग्यारवांग्रीष्मऋतुआईहेली ॥ विना श्यामकेवस्त्रसवत्यागगलेडालूंसेली ॥ कितोबार वांमासखीचआवेंगेकृष्णमेरीजोअली ॥ करकैयोगिन काभेषजायढूंढूंगीकृष्णकंगलीगली ॥ यहीनेममैंलि-याजीवविचराखोपतमुरलीवाला ॥ कुब० ॥११॥ ज्येष्ठ मासमेंपडैधूपलूलागैअंगमेराजीबलै ॥ बेगिपधारोआ यसांवरालपटावोमोयआयगलो॥बीतेबारामासआगयो अधिकमासआगेज्योंभलोलागेजो फरकनेअंगसबभुजा-

नेत्रसुखामचलो॥यहीशकुनपरमिलैं कृष्णबाटूज्योंबधा
ई सबब्रजबाल॥कुव०॥१२॥ अधिकमहीनेकृष्णपधारे
राधेकूं दियादरशन॥ कसअगियादीजोटूटकर खुसी
मनमें परसन ॥ श्यामपधारेंआजसखीरीसवब्रजहो
रही हैंधनधन ॥ बटैबधाईहोरहीखुशवक्तीसबहीके
मन॥प्रेमसागरमेंअमृत बरसैतनुकीतृषा मिटीज्वा-
ला ॥ कुव० ॥ १३ ॥

इति श्रीकृष्णकुवरीसंगविहारवर्णन बारहमासीसमाप्त।

अथ राधाजीकी बारहमासी।

सावन बिना गिरिधारी सूनीहै सेज अटारी ॥
सावनमें सब सांवरी, झूलत पियके संग ॥ हमरो
तौ नंदलाल बिन, जरोजात सब अंग॥ भादौं भव
न ना भावे, नित रैनि बिरहा सतावे ॥ भादौं में
मुहि कंतबिन घर अंगना न सुहात॥जैसे माछीशह
दकी, कर मलि मलि पछितात ॥ क्वारकमल जल
फूले, केहि देश बिदेशी भूले ॥ क्वारमास मो सब

कमल, रहतहैं जलबिच फूल॥ हमरे तो नंदलाल बिन, उठै कलेजे शूल॥ कार्त्तिक अधिक दुःखदायी, उन बिन कछू न सुहाई॥ कार्त्तिक प्यारे कृष्णजी, केलि करैं चहुँ ओर। हमरो तोबिन श्यामके भयोजात है भोर॥ अगहन पड़लागो शीता, अजहुँनघर आये मीता॥ अगहनमों बिनश्यामके, रोमरोमभहरात। सुधि आये छाती फटे पाती लिखी न जात॥ पूसै पिया जो न ऐहैं, जीवत हमैं न पैहैं। पूसदुख कासों कहौ, मोसो कहो न जाय॥ उन बिन कोऊ ऐसखी, नाहीं देत दिखाय॥ माहै न जग बिच चैन, हमैं बिथा दिन रैन॥ माहमासमें ऐ सखी मरी जात बिन पीव॥ जैसे खाल लोहार की, सांस लेइ बिन जीव॥ फागुन फाग सब खेलैं, अबीर गुलाल रंगमेंलै॥ फागुनमें यह शोचहै, हरिहैं केहिके संग॥ हमरो तो यह शोचमें, सूखि गयो सब अंग॥ ऋतुचैत सकल बनफूले, केहि देश सजनवां भूले॥

चैतमाससों फूल सब, रहे सखीरी फूलि ॥ हमरो तो नँदलाल अब, रहो कहां है भूलि ॥ वैशाखसाख क्या उसकी, जानी न विथा मेरे जिवकी ॥ वैशाखमासकी थी खवर, अजहुँ न आये श्याम ॥ साख गई मोहिं श्याम बिन, नेक नहीं आराम ॥ जेठेतपनतन जारी, खन नींचें खन जात अटारी ॥ जेठ तपन मोरी ऐसखी, जारे देत है देह ॥ पिव सुखमें अस हम जरैं, ऐसो होत सनेह ॥ माह असाढ जब लागा, परदेशी देशको भागा ॥ आषाढ मास मों ऐसखी, पिवनहिं आये तीर । उनविन दोनों नैन से, रक्त वहै जिमि नीर ॥ लौंदमोहन सूरत आये, दुःख सब तनुके बिसराये ॥ लौंदमासमें आइके, कन्त लियो लपटाय ॥ तनुके दुख सारहरे दियो सकल सुख आय ॥१२॥ इति ॥

ललितासखीकी बारहमासी।

कौन उपाउ करों मोरी आली, श्याम भये कुबरी

श्रीकृष्णचंद्रजीकी बारहमासी।

प्रथममहीनाआषाढ़जोलागावर्षाऋतुआई ॥ प्रीतमहमरेश्यामसलोनेपातीभिजवाई ॥ कहौवेकैसेनहिंआये ॥ ऐसेचतुरसुजानश्यामचेरीनेबिलमाये॥ डालगएजादूकीफांसी॥ श्रीराधागोपीत्यागकरीघरवारीकुबिजासी ॥ १ ॥ सावनमेंमनभावनहमतौदामनसोंलागी॥ जबतोहमसोंप्रीतिबढ़ीहरिअबकाहेत्यागी ॥ सुनोतुमऊधोमेरीसों ॥ लाजशरमकितगईप्रीतिजबकीनीचेरीसों ॥ नहींमोहिं आवतिहैहांसी॥ श्रीरा० ॥२॥ भादों रैनि अँधियारीबोलेप्रीतमकीप्यारी ॥ अन्ननभावैनींदनआवैसंकटअतिभारी ॥ मिटावैसंकट क्यों ऊधो ॥ ऐसेकुटिलकुजातश्यामकोजानतिहीसूधो ॥ मारिगयेबिरहकीगांसी ॥ श्रीरा०॥ ३ ॥ लागत क्वारकनागतआयेसबकोइधर्म करै ॥ मैभी धर्म करौंगीजबहींप्रीतम नजर परै ॥ मिलावैहै कोईऐसा ॥ लैअक्रगयोमथुराकोकरियेरीकैसा ॥

बुद्धिवाकीनेअभिमानी ॥ श्रीरा० ॥ ४ ॥ कार्तिक
कौतुक कियो कृष्णने हम सबकोउजानी ॥ आ
खरजातअहीरश्यामकेकुबिजा मनमानी ॥ कंसकी
हैआखिरचेरी॥ याहीतेदिनरैनआँखमेरीफरकतहैडेरी
लगीमेरेजियकोचौरासी ॥ श्रीरा० ॥ ५ ॥ अग
हनमेमनचमकनलागाधड़कतिहैछाती ॥ उद्धवहाथ
सँदेशाभेजाबाँचोंरीपाती ॥ लिखौकुछतूभी बालम
कूं ॥ जोनमिलोगेवेगिजियतनहिंपावोगेहमकूं ॥
हमारेजियकेसुखराशी ॥ श्रीरा० ॥६॥ पूषमासमें
चलेगयेमेरेप्रीतमसेइय रे ॥ काननलागेदूतकरींहैन
यनसेन्यारेहमैंयहमदनसतावतहे ॥ जियकेजोरनका
जसँदेशोऊधोलावतहे ॥ खबरतुमलीजोअविनाशी
श्रीरा० ॥ ७ ॥ माहनाहकेडाहपिया तुमछोड़ीह-
मजानी॥ रोवतिउठतिकराहिवातसब ऊधोनेजानी॥
ज्ञानकीबातेंदरशाई ॥ कृष्णहिदेहु मिलायलायसब
गोपीसमुझाई ॥ झूठसबहीकेमनभासी ॥ श्रीरा० ॥

॥८॥ फागुनफीकोलगै रैनदिनहोयरहीविसमें ॥ पातीबाँचतऊधेम सखीयकयाँबोली रिसमें॥ लगे अब साहकरनचोरी॥ हमरेजियतकान्हकितबांदीसँगखेलें होरी ॥ खबरमेरी लीजैकैलाशी॥ श्रीरा० ॥ ६ ॥ चैतचिंतामें जरौंबरों में गिरती कुइयाँमें ॥ कहियो मदनगोपालसंगकुबिजाकूं लेआमें ॥ कछू इनसों तनको डरनो ॥ हमगोपी दरशनको प्यासी औरन हींकरना ॥ खबरमेरीलीजैब्रजवासी ॥ श्रीरा० ॥ ॥१०॥ लागतहीबैशाखसाखसबहीकेघरआई॥ ऊधो जीनेजायकृष्णसोंऐसेसमुझाई ॥ पैजतुमहकनाहक रोपी ॥ हाड़माँसगलिगयेबावरी ह्वैगईसबगोपी ॥ लेहिंगीकरवटह्वकासी ॥ श्रीरा० ॥ ११ ॥ ज्येष्ठ मासमेंमिलेकृष्णजबराधागोपीसे ॥ ब्रजबासिनआनंदभयोछूटेसबबाधासे ॥ कृष्णकी यह बारहमासी ॥ पढ़ैसुनै वैकुण्ठसिधारेछूटैयमकीफांसी॥ साँच यह मेरेमनमासी॥ श्रीरा०॥ १२॥

इति श्रीकृष्णचन्द्रजीकी बारहमासी सम्पूर्ण ॥

श्रीरामचन्द्राय नमः।

अथ कौशल्याजीकी बारहमासी।

कार्तिककूचप्रयागसेकीनोकौशल्याशोचकरैमनमेंरे ॥ रामलषणसियावनकूं सिधारे दशरथ प्राणतजे घरमेंरे ॥ दरशनदेवोमेरेप्राणपियारेतुमबिन और हमारे ॥ १ ॥ अगहनगैलचलोजब प्यारेदरदहोत मोरेतनमेंरे ॥ चलतचलतजबपैयां पिराने कोई नतुम्हारोबाबनमेंरे ॥ दर० ॥ २ ॥ पूषभरतजबचले लेनकोसौतिनदाहभयोमनमेंरे। मैंजानीरघुवरघरआ येहै फूलीनमाऊंमोनयननमेंरे ॥ दरशन० ॥ ३ ॥ माहैंमासभरतफिरआयेहूकउठीमेरे उरयेरे ॥ तलफति फिरौं अयोध्यामाहींजैसेमीनफिरैजलमेंरे ॥ दरशन० ॥४॥ फागुनफिरबैठेबन माहींसीताहरणसुनाजबमेंरे॥ रामलषणअबदूँढ़तहोंयगेवैदेहीकोकाननमेंरे ॥ दरश न० ॥ ५ ॥ चैतमेंचिंताकरैंभरतजीकैसेराज्यकरूंअब मेंरे। बिनरघुवरमेराजीवननाहींमैंभीप्राणतजौंछिनमे

रे ॥ दर० ॥ ६ ॥ मासवैशाखभरतनहींमानाशोच
भयोसब नगरीमेंरे ॥ रामलषणप्रभुसीयसमेताध्यान
नधरौ सबनिजउरमेंरे ॥ दरशन० ॥ ७ ॥ जेठमिला
प भयो सुग्रीवावालीप्राणहतेशरसेरे ॥ वालीमारिशै
लफिरआयेताराविकलभईमन मेंरे ॥ दर० ॥ ८ ॥
लागो अषाढबुमड़रहे बदराशोचभयो अबमोमनमेंरे
बिनमोरेलालबागसबसूनेशोकपड़ो सबनगरीमेंरे ॥
दर० ॥ ९ ॥ सावनघनगरजतचहुँओरा नामलषण
मोरेपर्वतपैरें ॥ बिनसियसंगशोचउरहोयहैमेरेहूप्राण
धरे उनमेंरे ॥ दर० ॥ १० ॥ भादौं भेबंदरसबधाये
पूरवपश्चिमदक्षिणमेंरे ॥ कूदसमुदहनुमानसिधारेसीता
खबरदई छिनमेंरे ॥ दर० ॥ ११ ॥ क्वार त्रिकूटलंक
जबजारीरावणप्राणबसे उनमें रे ॥ रावणमारिरामघर
आयेआनंदबधाइभोगृहमेंरे ॥ दर० ॥ १२ ॥ देवी
सिंहसियारघुबरकोध्यानधरैंघरबाहरमे रे ॥ तुमबिन
स्वामी कोईनहीं मेरापांयधरोअबमेरेशिरपैरे ॥ द० ॥ १३ ॥

इति श्रीकौशल्याजीकी बारहमासी संपूर्ण।

युगलकिशोरजीकीबारहमासी।

श्रीगणेशाय नमः ॥ असाढआशाकरोजुपूरण
करोकृष्णफेरी ॥ कालीघटाघुमड़िचढ़िछाईपवनचलैं
सीरी ॥ बिजलीचमके हियरालरजेधीरजनहिंधरती ॥
बिनानीरजैसेमीनतलफैदुखिया दुखभरती ॥ १ ॥
सावनसमझपरीमनमेरेआवैंगेबलमा ॥ सादीकरौपि-
याघरआवैंआईऋतुबामा ॥ योबनखोलधरौंउनआगे
अन्तरनहिंरखना ॥ सादीकरौपियाघरआयेवेरसकीब
तियां ॥ २ ॥ भादौंगहरगंभीरपियानहिंआयेरीमाई ॥
सूनीसेजतड़फरहिकामिनिविरहविथाछाई ॥ जलथल
नीरभरयोनदियनमेंचातकमरेप्यासो ॥ अपनेसुखकेलोग
बहुतहैकुटुंबसासुससुरे ॥३॥ क्वारकरारकियेसखियनसे
नहिंआयेबलमा ॥ मैंनिरभागीत्यागिपियापरदेशगये
रीमा ॥ परदेशिनकाबुरामामलासुनिफाटैछाती ॥४॥
वर्षागईशरदऋतुआईनिर्मलभयेचन्दा ॥ कात्तिकसु-
न्दरखिलीचांदनीडरपैजीमेरा ॥ प्रीतममेरेबनेलहरिया

ओढीचंपकली॥ अबकेंविछुड़ेरामसिलावैंज्योबरसेमो
ती॥५॥ मृगशिरभाग्यभरीनखशिखसोंशीशफू
लटीका॥ काहिसखीरीपहिरिदिखाऊंपियविनसबफी
का॥६॥ पूसपियापरदेशगयेकछुखबरनहींपाई॥
पंडितपूछोंऔरज्योतिषीकहांबसेसाई॥ महादेवपूजा
चलपाऊंमहादेवदेव॥शंभुसहायकरौनहमारीपूरीलच्छ
विचारी॥७॥ माघमासभोगीऋतुआईजोकाहूपै
वनआवैं॥ तोसकतक्रियासोंडनिहालीपीयाकंठलगा-
वैं॥८॥ शरदीगईगर्मऋतुआईभइवसन्तकीत्यारी।
लालगुलालफेटमेंबांध्योरंगभरीहैझारी। फागुनफाग
सुहागनखेलैंपियाभिजोवैंप्यारी॥ कहाकरोंकछुबश
नहिंमेरोडफखुनह्यांसूजारी॥९॥ चैतैचिंतालगोजि
यामेंफूलोवनराई॥ सुन्दरफूलखिलेगधुवनमेंमैंएक
लिमुरझाई॥१०॥ भरवैशाखलालथयेकेसूश्याम
वरणगोरी॥मोहपियानेकछुनहिंकीनोसोमोहब्बतती
री॥११॥ जेठमासमेंधूपपड़ैहैलगैकठिनभारी॥

ऐसेमेंकोई गैलचलेगाछांहकरुंगहरी ॥ १२ ॥ जग आथकी बारहमासीगावै युगलकिशोरी ॥ सीखैसुने परमपदपावैऔरकटैयमडोरी ॥ १३ ॥

इति श्रीयुगलकिशोरजीकी बारहमासी संपूर्णम् ।

गोपीबलदाऊजीकी बारहमासी ।

श्रीः ॥ जीबलवीरगये जबतेहरि आप न आये न पाती पठाई । छलबलकीन्हो हरिबहुतकहमसों जाय बसे हैं समुद्रतटमाहीं ॥ जपतपनेमकियेहरिसों हममाघन्हाय हरिबरपाये ॥ १ ॥ फागुनफागखेलैंहरिहमसो कीनी प्रीतिकुबजामनमानी ।मामाकंसमधुपुरीमासघरिदुष्टनको प्रभुमारिगिराई ॥ २ ॥ चैत्ररुक्मिणीपत्रलिखिभेजोदेखतपत्रकुण्डनपुरजाई । रुक्मिणिप्रिय अति लागीहरीकं प्रेमप्रीतिकछुकहीन जाई ॥ ३ ॥ मणिकेकाजगयेवैशाखमोजाम्बवतसोंकीनलड़ाई ॥ जाम्बवतीभेंटकरी हरिके तब सबसंकोचदीनमिटाई ॥ ४ ॥ ज्येष्ठमास प्रभुगये श्रुतदेवकेविप्रभयेमनको हरषाई ।

बहुलाश्वनामराजसुखदीनोंभक्तनकेघरबजतबधाई।
आषाढ़कामिनीसुखबहुदीनों आठौपहर त्रियाकरेंसेव
काई । गर्जतबादलचमकतबिजलीदादुरशोरकरैं अधि
काई ॥ ६ ॥ श्रावणबूंदबरसतरुमझुमसत्यभामासँग
रहे लुभाई । झूलतरंगहिंडोलासोहनप्रेमतियनको
कहियनजाई ॥ ७ ॥ भादौं कोयलबोलतबनमेंपीव
पीवपपिहारटलाई । उन्नत काम सतावत निशिदिन
हरिबिनजियकैसेसमझाई ॥ ८ ॥ क्वार अगस्त्यजल
सोखलियोहै पंथचलेजोमनुजसुखपाई । पौंड्रकको
वासुदेवसिधारे काशिपुरी क्षणमाहिं जराई ॥ ९ ॥
कार्तिकदीपकजरैं सबसखियाँघरघरआनँदबजतबधाई
॥ सोलाहजारसखियासँग रमतेएकसौआठप्रभुके मन
भाई ॥ १० ॥ अगहनतिलकअनिरुद्धकोदीन्हींसौंप
आपअपनीप्रभुताई ॥ राजपाटसबहीसुखदीन्हींआनँ
दमंगलहर्षबधाई ॥ ११ ॥ पूषहरीहमसौंजबभेंटेकुरु
क्षेत्रकोग्रहणनहाई ॥ बारबारमनहर्ष भयोअतिकिंक

रघ्रभुगुणकरतबड़ाई ॥ १२ ॥

इति किंकरप्रभु कृतगोपीबलदाऊजीकी बारहमासीसंपूर्ण

कुबरीसंगविहारवर्णनबारहमासी ।

श्रीगणेशायनमः ॥ टेर ॥ कृष्ण अकेलेगयेद्वारका छाँड़गयेसबब्रजबाला ॥ कुबजादासीकंसरायकीमोहनपरजादूडाला॥आषाढ़ आशाकरूं जितुम्हारीनारी अकेली कुंजन में ॥ हमकूं छाँड़िबसेजायकुबजा संग माधोबनमें॥ दासीसे प्रीतिलगाइ मोहलियावैरिन छिनमें ॥ सौतहमारीजन्मकीवैरिनविलमाया हरिन यननमें ॥ पतियांलिखती मतलबगरजीकैसे लिखूं देगये टाला ॥ कुबजा०॥ १ ॥ सावन आवनकह गयेसाजनहमसेमोहनबचन किया ॥ मैंखड़ीदेखतीराहसखिरीअजहुँनआयेकृष्णपिया॥ तीजनकोत्यवहार नगर में सब सखियां शृँगार किया । काल लटीकी दियेशीशपरबस्तरओढ़े नयानया॥ श्यामबिनामेरी सेजअलुनीबागनमेंफूलाडाला ॥ कुब० ॥ २ ॥

भादोंमहिंनेगणेशचौथहैसबसखियाँगणपति पूजैं ॥ धूपदीपसिंदूरपुष्पनैवेद्यचढ़ैलपटैंगुंजैं ॥ हाथजोड़कर खड़ीजीराधिकानाथअरजमैं करूं तुम्हे। श्याम हमारामिलायदेवो विनमोहनकछुनासूजै ॥ इतनाकारजसारोगजानन ऋद्धिसिद्धिकेकरनेवाले ॥ कुब० ॥ ३ ॥ आसोंजमहीनेदेवीअंबिकाराधापूजैंअपनी गरज ॥ हाथजोड़करकरूंजिविनतीमातामोरीसुनो अरज॥ पियागयेपरदेशद्वारका पिवकारणहुईपीली जरद ॥ पीवपीवकरतीरैनदिनयेतोमेरे बड़ा दरद॥ इतनाकारजसारोजीअंबिका भेंटचढ़ाऊंछत्तरमाला॥ कुब॥ ४ ॥ कार्तिकउत्तमबड़ामासहैसबसखियांकार्तिक न्हावें ॥ बड़े सवेरे उठकर हरिमंदिर हरियशगावें॥ दुलैमहलअरुघरघरमंदिर आजदिवालीदरशावें ॥ पूजैंलक्ष्मीनारीनरपतिव्रतासबशिरनावें॥ श्यामबिनामेरीसेजअलूनी औरजगतमेंउजियाला ॥ कुब० ॥ ५ ॥ मृगशिरमेंमोहनघरनाहीं सोडगिंदवाभरवा-

ती ।। मैंतेरेवास्तेरेसमीपलंगबिछूनाकरवाती ॥ आप बिगरमैंसोऊंजीअकेलीसूनीसेजफटैछाती ।। दिल अपनेकूंशोचकैलाखजतनकरसमझाती ॥ डालगलेमें फांसिगयेब्रजवोसिवतावोहमकोलाला ॥ कुब० ।।६।। पोषरोंष हैंकरुंजिकृष्णपरइसऋतुमेंआयोनाहीं।।मारी ठंढकीनींदनहींआवैमुझेसेजमाही।। जाडानेमोयबहुत सतायारेकामनेडसखाई।। हैंभुरभुरपिंजरहुइआयचेहरेपरस्याई छाई।।ज्यूंज्यूंयहमोय आवैहृदयमेंत्योंत्यों बदनपड़ैकाला कुब०।। ७ ।। माहगहीनेवसंतपंचमी जोघरहोतामेराकंत । सबसखियनमेंखेलतीखूबमचाती आजवसंत मेंखेलनकोकैसेजाउँनहीं मिलेरीमुझकोकंत ॥ दिलअपनेमेंशोचकरबैठरहीमैंआपनिचंत ॥ चैननहींदिनरैनसांवरादरशनद्योमुरलीवाला।।कुब०।। ।। ८ ।। फागुनमें मोहन घरनाहीं फागपियाबिन लागी अगन ।। गोराबदनमें बुझतीनाहीं आयकरो कोइ कोडजतन ।। संगकीसहेलीबनिअलबेली होरी

खेलेसंगसजन ॥ श्यामहमारा जायकर आपलगाई कुबजासेलगन॥ फागुन आगलगीजी बदन बिच तनके बीच उठी ज्वाला ॥कुब०॥९॥ चैत्रमही- ना लाग्यो सखीरी सब सखियांपूजै गणिगोर ॥ उन का वालम ल्याबसीहरीहरोदूबजी गुलातोर॥ मैं भी पूजूं भाइगवरजावेगिमिलावोमोहनचितचोर ॥गयेद्वार काप्रीतिकरकुबजासोंहोगयेकठोर ॥ इतनोकारजकरो जिगरवरजा नहिंतो हाथलेऊं माला ॥ कुब० ॥ ॥१०॥लग्यामासवैशाखग्यारवांग्रीष्मऋतुआईहेली ॥ विना श्यामकेवस्त्रसबत्यागगलेडालूंसेली॥ कितोबार वांमासबीचआवेंगेकृष्णमेरीजोअली ॥ करकैयोगिन काभेषजायढूंढूंगीकृष्णकंगलीगली ॥ यहीनेममैंलि- याजीवविचराखोपतमुरलीवाला॥ कुब० ॥११॥ ज्येष्ठ मासमेंपडैधूपलूलागैअंगमेराजीबले॥ वेगिपधारोआ यसांवरालपटावोमोयआयगले॥बीतेबारामासआगयो अधिकमासआगेज्योंमलोलागेजोफरकनेअंगसबभुजा-

नेत्रसुखवामचलो॥यहीशकुनपरमिलैं कृष्णबादूज्योंबधाई सबब्रजबाल॥कुव०॥१२॥ अधिकमहीनेकृष्णपधारे राधेंकूं दियादरशन॥ कसअगियादीजोटूटकर खुसी मनमें परसन॥ श्यामपधारेंआजसखीरीसबब्रजहो रही हैंधनधन॥ बटैवधाईहोरहीखुशवक्तीसबहीके मन॥प्रेमसागरसेंअमृत बरसैतनुकीतृपा मिटीज्वाला॥ कुव०॥ १३॥

इति श्रीकृष्णकुवरीसंगविहारवर्णन बारहमासीसमाप्त।

अथ राधाजीकी बारहमासी।

सावन बिना गिरिधारी सूनीहै सेज अटारी॥ सावनमें सब सांवरी, झूलत पियके संग॥ हमरो तौ नंदलाल बिन, जरोजात सब अंग॥ भादौं भवन ना भावे, नित रैनि विरहा सतावे॥ भादौं में मुहि कंतबिन घर अंगना न सुहात॥जैसे माछीशहदकी, कर मलि मलि पछितात॥ कारकमल जल फूले, केहि देश विदेशी भूले॥ कारमास मो सब

कमल, रहतहैं जलबिच फूल॥ हमरे तो नंदलाल बिन, उठै कलेजे शूल॥ कार्त्तिक अधिक दुःखदायी, उन बिन कछू न सुहाई॥ कार्त्तिक प्यारे कृष्णजी, केलि करैं चहुँ ओर। हमरो तोबिन श्यामके भयोजात है भोर॥ अगहन पड़लागो शीता, अजहुँनघर आये मीता॥ अगहनमों बिनश्यामके, रोमरोमभहरात। सुधि आये छाती फटे पाती लिखी न जात॥ पूसै पिया जो न ऐहैं, जीवत हमैं न पै हैं। पूसदुख कासों कहो, मोसो कहो न जाय॥ उन बिन कोऊ ऐसखी, नाहीं देत दिखाय॥ माहे न जग बिच चैन, हमैं विथा दिन रैन॥ माहमासमें ऐ सखी मरी जात बिन पीव॥ जैसे खाल लोहार की, सांस लेइ बिन जीव॥ फागुन फाग सब खेलैं, अबीर गुलाल रंगमेंलै॥ फागुनमें यह शोचहै, हरिहैं केहिके संग॥ हमरो तो यह शोचमें, सूखि गयो सब अंग॥ ऋतुचैत सकल बनफूले, केहि देश सजनवां भूले॥

चैतमाससों फूल सब, रहे सखीरी फूलि ॥ हमरो तो नँदलाल अब, रहो कहां है भूलि ॥ वैशाखसाख क्या उसकी, जानी न विथा मेरे जिवकी ॥ वैशाखमासकी थी खबर, अजहुँ न आये श्याम ॥ साख गई मोहिं श्याम बिन, नेक नहीं आराम ॥ जेठतपनतन जारी, खन नीचें खन जात अटारी ॥ जेठ तपन मोरी ऐसखी, जारे देत है देह ॥ पिव सुखमें अस हम जरैं, ऐसो होत सनेह ॥ माह असाढ जब लागा, परदेशी देशको भागा ॥ आपाढ मास मों ऐ सखी, पिवनहिं आये तार । उनविन दोनों नैन से, रक्त बहै जिमि नीर ॥ लौंदमोहन सूरत आये, दुःख सब तनुके बिसराये ॥ लौंदमासमें आइके, कन्त लियो लपटाय ॥ तनुके दुख सार हरे दियो सकल सुख आय ॥१२॥ इति ॥

ललितासखीकी बारहमासी।

कौन उपाव करों मोरी आली, श्याम भये कुबरी

वशजाई ॥ चैत मास मोहिं मदन सतावै, वैशाख मास बहुतै दुखपावैं, जेठ मास तनुतपै घामज्यों, अंगचीर मोहिं एको न सुहाई ॥ आषाढ़ मास घन घेरि आए बदरा, सावन मास बहै पुरवाई ॥ भादौं अगम पंथ नहिं सूझै, जलसे भरि गई ताल तलाई ॥ क्वारमास घर श्याम न आये, कार्तिक दियना अकाश बराई ॥ अगहन अग्रसनेह श्याम बश, को पतिया हमरी लेजाई ॥ पूसमास मोहिं शीत सतावत, माघ बिना, पिय जाड़ न जाई ॥ फागुन फगुवा खेलब केकरे सँग, बिना श्याम अरुबिनु बलराई ॥ १२ ॥ इति ॥

बालमुकुन्दकृत बारहमासी।

शुरू आषाढ ए प्यारे ॥ छवैं बँगले जगत सारे, भरे आकाश घन कारे ॥ अजहुँ आया न निर्मोई ॥ मिलावै मेरे दिलवरसे है ऐसा जक्तमें कोई ॥ १ ॥ हुवा सावन शुरू जबसे ॥ ॥ जलै दूना

जिगर तबसे ॥ न पाया वो किसी ढबसे, बयस यों हीं सभी खोई॥ मिलावै मेरे दिलवर से, है ऐसा जक्तमें कोई॥ २ ॥ ये भादों ने दिखाया रंग करैं बिरहिनसों दादुर जंग ॥ जो होता प्राणप्रीत असंग ॥ न डरपाता मुझे कोई ॥ मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥ ३ ॥ महीना क्वारका आया ॥ पिया ने नेह बिसराया ॥ करै अब सौत मन भाया ॥ जलनतोहै मुझे सोई ॥ मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥ ॥ ४ ॥ महीना कार्तिकके आली ॥ पुजै घर२ में दीवाली ॥ हमें ये ऋतु गई खाली ॥ योंहिं बर सातभर रोई ॥ मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥ ५ ॥ कहां है आय मिल मीता ॥ अरे मृगशिर तलक बीता ॥ न छोड़े तब बिरह जीता ॥ जालकरक्या नफा होई ॥ मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥ ६ ॥ महीने पूषओ साजन बहुत ढूंढ़ा मैं बन जोगन॥ न पाया पर तेरा दरशन ॥ मिलो अभिलाषहै योई ॥

मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥ ७ ॥ आयफिर माहने घेरा ॥ न प्रीतमका हुवा फेरा लिया तरसाय बहु तेरा दिखा अब आय मुखलोई ॥|मिलावैमेरेदिलवरसे० ॥८॥ मस्त फागुनमहीनाहै ॥ ध्यानतैं कछु न कीना है॥ उन्हींका सत्यजीना है ॥ जो सोवैं मिल जने दोई ॥ मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥ ६ ॥ चैत चिंता हुई भारी॥ न आया प्राण आधारी ॥ रहीरोती विरहमारी ॥ कवन अघदुःख अस होई ॥ मिलावै मेरे दिलवर से० ॥ १० ॥ लगा वैसाख ऐ प्यारे ॥ विरहलूने जिगर जारे खबरले प्राण आधारे। प्रीत क्यों चित्त से धोई॥ मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥ ११ ॥ जेठ में मिलगया दिलदार ॥ सालूनो पायता उजियार ॥ सजनसंग सब करूं त्योहार ॥ कथन नहिं बालकी गोई ॥ मिलावे मेरे दिलवरसे है ऐसा जक्तमें कोई ॥ १२ ॥

इति श्रीबालमुकुन्दकृतबारहमासी सम्पूर्ण ॥

अथ विरहिनीकी बारहमासी।

महीना आषाढका आया विरहका जल जग छाया॥ चलत पगछाड़ जिगरखाया चमके बिजुली डरपै काया॥ दोहा॥ पवन शरद तनु लगतही, उठै करेजे हूक॥ कूक करै कोयल जभी, करै जिगरके टूक॥ सेजहै खांडेकी धारे। तुझ विनाओ दिलवर प्यारे॥ १॥ हुआ जब सावनका आवन॥ हिंडोले मिल झूलैं कामन॥ गावती मलारमनभावन। बरसता मेह दमकै दामन॥ दोहा॥ मैं बौरी देखूंखड़ी, थमैं नैन नहिं नीर॥ सावनमें क्योंविछुड़कै, दुखदीना वे पीर॥ हुवाक्या भला दई मारे॥ तुझ०॥ २॥ महीना भादोंका बरजै घटाकालीशिरपर गरजै॥ देख अंधेर हिया लरजै। कामतनु चढ़ दौड़ा करजै॥ दोहा॥ मरा पपीहा ना मरै, करै मेरे ढिग पीय॥ सुनत ताहिकी पीयपी, निकसत मेरो जीय॥ डरूँमैं लख

बादर कारे ॥ तुझ० ॥ ३ ॥ महीना असौजका लागा । पियानेनेह सभी त्यागा ॥ कहो जाकर यही कागा । तजाक्यों नेह अनुरागा ॥ दोहा ॥ हाय दई कैसी भई, डूब मरूँ कित जाय ॥ खबर न उस दिलदारको, कोऊ आय सुनाय ॥ मरी इसही गमके मारे ॥ तुझ० ॥ ४ ॥ लागा कार्तिक अति सुन्दर । होत उजियार सभी मंदर ॥ ताश गंजीफा और चौसर । खेलते नर नारी घर घर ॥ दोहा ॥ पूजतहैं श्रीलक्ष्मी, निज२ प्रीतम संग ॥ मुझ विरहनके हृदयमें, देखत उठत तरंग ॥ थके मेरे पौरुष सारे ॥ तुझ० ॥ ५ ॥ महीना आ गया अगहन । न पाया पर तेरा दरशन ॥ रहम खाकर आ मिल साजन करूं वारी तुझपर तन मन ॥ दोहा ॥ बहुतेरा समझात हौं मनुवां मानत नाहिं ॥ बार२ येही कहै, चल प्यारेके पाहिं ॥ सभी समझायके हारे ॥ तुझ० ॥ ६ ॥ पूस में पड़ताहै

पाला। बदन सगरा होवै काला॥ खिले हैं नर गिस गुल्लाला॥ हुई लख तुम विन बेहाला॥
दोहा—पवन बहै सुख अति सरस, शीतलमंदसुगंध॥
हेचितचोर कठोर हिय, तुझविन कहँ आनंद॥
जरा तो ध्यान इधर लारे॥तुझ०।७महीनापूससेआया माह। बहुतमैं देखीतेरीराह। हमें यह ऋतु खाली गइ आह। तुझबिनाकैसे निर्वाह। दोहा—फूलखिले हर चमनमें तरह२ के गुल॥ भौंरे फूलों पर फिरैं, फिरते हैं बुलबुल॥ तेरे विन कांटेहैं सारे॥ तुझ० ॥ ८ ॥ महीना फागुन का रंग गीर॥ सभीरंगरंगै चोलियां चीर॥ उड़ैं रंग और गुलाब अबीर। हरतरफ है मस्तों कीभीर॥ दोहा—देख देख ये ऋतुमेरे दिलते निकलै हाय॥ तुझ विन ऐजानी जिगर, यों ऋतुखाली जाय॥ मरीहरतरहबिनामारे॥ तुझ० ॥ ९ ॥ चैतमें चित्त न मानै धीर। पड़ैगरमी ज्यों मारैतीर ॥ खिले टेसूदै दिलकूं चीर ॥ इन दिनों सुधि भूले बेपीर ॥

दोहा—अरीचमेलीबावरी, कहा रिझावै मोय॥
जोप्रीतम होतोनिकट, तौउ बतातीतोय॥
परकरूँक्याहूँ लाचार॥ तुम्ह० ॥ १० ॥ लगावैसाख
तपन परती। जलै असमान औ धरती ॥ मैं तुम्ह
बिन सेजपै जरती। रातदिनहै गमकी भरती ॥
दोहा—सबनरनारी हँसतहैं, देख२ मम ढंग ॥ कोइ
कहैं बौरी भई, कोई कहै पीभङ्ग ॥ सहूं निशि दिन
तपनिसारे॥तुम्ह०॥११॥ जेठ जब लागा गर्मी पड़ी।
बदनमें लुवैंलुवैंहै कड़ी॥ भलाकबआवैगीवोघड़ी ॥
गलै मिल तेरेखुशी हो बड़ी॥ दोहा—अरे बावरे
कागरे, कहा सुनावै कांय॥ मोरे भाग लिखो विरह
साजन मिलनो नांय ॥ होयमें गये मासबारे ॥
तुम्ह०॥१२॥ लौंदमें मिले गुरु घासी। कही सुन्दर-
बारहमासी ॥ कथनकी बला मुकन्द आसी ॥ है
ठाकुरद्वारेका बासी ॥ दोहा—ले आज्ञा गुरुदेवकी,
पूरण विश्वे बीस। चैत्र शुक्ल तिथि अष्टमी, संवतसै
तालीस॥सदा पड़ते हैं पौबारे॥तुम्ह०॥ १३ ॥ इति ॥

भांगके गुण।

कवित्त—मिरचमसालासउंफकासनीमिलाय भांग खायेते अनेकरोग अंगके उवारती। जारतीजलन्धर भगन्दरकठोदरऔ ववासीर सन्निपातवावनविदारती॥ कविशिवरामदादखाजको खरावकरिछींकछईछंजनन सूरकोनिकारती। पीनसप्रमेहत्रीसवानतरहकेरोकमर दरदको गरद करि डारती॥

ब्रह्मचारीकेलक्षण।

कवित्त—सहजवैराग्यकरवासनाकोत्यागकरै इन्द्रिन विरागकरै आतमाविहारीहै। कर्मनिसकर्मकरैवेदवि-धिधर्मकरै मनमें न भर्मकरै द्विविधा नरधारी है। सनातन ज्ञान करै परनारी आनकरै चैतन्यको ध्यानधरै याही सुखकारी है। अन्तरअनन्यब्रह्मविधिको विचार करै ऐसो ब्रह्मचार करै सोई ब्रह्मचारीहै॥ १॥

परमेश्वरसे क्षमा मागँने।

राम राम राम राम रामहीकाहूँ गुलाम सेवा आठ याम पर पलकोन होती ॥ राम राम सीता राम राम राम सीताराम रोम रोमयें रमें हमेस इच्छा होती ॥ धरा धर धरद भरन जग जगन्नाथ मेरे हू अनाथ पै जु दयादृष्टि होती ॥ सीतापति राम राम सीतापति राम राम कृष्ण विहारी मेरी कुदशा न होती॥

नामकरन लीला।

क०—आयेमुनि गरग पठाये बसुदेव भाये कारण करन नाम करन सोहायो है ॥ स्वागत सुनाइ सन मानि नमनाय श्याम रामहीं बोलाई ऋषि पाँय शिर नायो है ॥ जनम बचाइ गुण गण गिनवाय मोह मापकै न माय मन आनँद वढ़ायो है ॥ ब्रजकी लुगाइन बुलाय चित्त चाइन वजाय जाय दुहुँनको नाम धरवायो है ॥

अथ गणेशस्तुतिप्रारंभ ।

श्रीगणेशाय नमः॥ छप्पय॥ प्रथमसुमुखइकरदन कपिलगजकर्णसुखदायक ॥ लंबोदरपुनिविकट विघ्न नाशनजुविनायक ॥ धूम्रकेतुअरुगणाध्यक्ष शिरचं द्रगजानन ॥ द्वादशनामप्रभातनित्यसुमिरो निज आ नन ॥ विद्यारंभविवाहमेंगृहप्रवेशगमनेसदा । शुभ श्रीगणपतिरटतघरनिरंवीघनसंकट छिदा ॥

इति गणेशस्तुति समाप्त ।

अथ बजरंगचालीसी प्रारंभ ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ दोहा॥ बुद्धिहीन तनु जा निकै, सुमिरोंतनयसमीर ॥ बुधिविद्याबलदेहु मोहिं सम्पतिसहितशरीर ॥ चौपाई ॥ जय हनुमान ज्ञानगुणसागर। जयकपीशतिहुंलोक उजागर ॥ रामदूत अतुलितबलधामा । अंजनि पुत्रपवन सुतनामा ॥ महाबीर विक्रमबजरंगी ॥ कुमति

निवार सुमति के संगी ॥ कंचन वर्ण विराज सु
वेशा । कानन कुंडल कुंचित केशा ॥ हाथ वज्र
अरु ध्वजा विराजे । कांधेमूंजजनेऊछाजे ॥ शंकर
सुवन केसरीनन्दन । तेजप्रतापमहाजगबंदन ॥ विद्या
वानगुणीअतिचातुर । भक्तकाजकरबेको आतुर ॥
प्रभुचरित्रसुनिबेकोरसिया ॥ रामलषणसीतामनबसि-
या ॥ सूक्ष्मरूपधरिसियपहँआयो । बड़ोरूप धरिलंक
जरायो ॥ भीमरूपधरिअसुरसँहास्यो ॥ श्रीरघुनाथ
केकाजसँवास्यो ॥ आनिसजीवनि लषणजिवाये ।
रामचंद्रतबकंठलगाये ॥ रघुवर कीन्हींबहुतबड़ाई ।
अहातातभरतसमभाई ॥ सहसबदनतुम्हरोगुणगावैं ।
असकहिरघुपतिकंठ लगावैं ॥ सनकादिकब्रह्मादि
मुनीशा । नारदशारदसहितअहीशा ॥ यमकु-
बेरदिशिपाल जहाँते ॥ कवि कोबिद कहि सकहिं
कहाँते ॥ तुमउपकार सुग्रीवहिकीन्हा । राममिलाय
राज्यपददीन्हा ॥ तुमरोमंत्रविभीषणमाना ॥ लंके-

श्वरभयेसबजग जाना ॥ युगसहस्रयोजनजोभानू ॥
लीला ताहि मधुर फल जानू ॥ प्रभुमुद्रिकामेलिमुख
माहीं। जलधिलाँघिगेअचरजनाहीं ॥ दुर्लभकाज
जगतमेंजेते। सुमिरतसिद्धिहोहिंसबतेते॥ रामदुआ
रे तुमरखवारे। बिनुआज्ञानहोइपैठारे ॥ सबसुख
लहैतुम्हारीशरना। तुमरक्षककाहूकोडरना॥ आपन
तेज सँभारो आपे॥ तीनोंलोकहाँकतेकाँपै ॥ भूत
पिशाचनिकटनहिंआवै । महावीर जबनामसुना
वै ॥ नाशै रोग हरै तनु पीरा॥ भजे निरंतर हनु-
मंतवीरा ॥ संकटतेहनुमानछोड़ावै ॥ मनबचकर्म
ध्यानजोलावै ॥ सब पर रामराजशिरताजा ॥
ताकेकामहेतुसोछाजा ॥ और मनोरथ जो कोइ
लावै । तनमनवांछितफलसोपावै ॥ चारिउयु
गपरतापतुम्हारा । है परसिद्ध जगतउजियारा ॥
रामपियारेशंभुदुलारे ॥ साधुसंतकेतुमरखवारे ॥
अष्टसिद्धिनवनिधिके दाता । असवरदीन्हजान

कीमाता ॥ रामरसायनतुम्हरेपासा सादरतुमरघुपति के दासा ॥ तुम्हरे भजनरामकोपावै । जन्मजन्मको दुखबिसरावै॥अंतकालरघुपतिपुरजाई। जहाँजन्महरि भक्त कहाई॥ और देवताचित्तनधरई। हनुमत सेइ सकल सुख करई॥ संकटहरैमिटैसबपीरा ॥ जो सुमिरै हनुमतबलबीरा ॥ जैजैजैहनुमान गुसाईं ॥ कृपा करहुगुरुदेवकिनाईं ॥ यहशतबारपढ़े जो कोई । छूटैबंदिमहासुखहोई ॥ जोकोइपढ़बजरंगचलीसा॥ होइसिद्धसाखीगौरीशा॥ तुलसीदाससदा हरिचेरा । कीजैदासहृदयमहँडेरा ॥ दोहा ॥ पवनतनयसंकट हरण, मंगलमूरति रूप ॥ रामलषण सीतासहित बसहुहृदयसुरभूप॥ इति श्रीतुलसी दासकृत बजरंग चालीसा संपूर्ण ॥

अथ महादेवलीला प्रारम्भ ।

मैंयोगीयशगायारेबावामैंयोगीयशगाया ॥ तेरे सुत केदरशनकारणमैंकाशीसेधाया ॥ पारब्रह्मपूरणपुरु

षोत्तमसकललोकजामाया ॥ अलखनिरंजनदेख
नकारणसकललोकफिरिआया ॥ धनिधनितेरोभा
ग्ययशोदाजिनऐसासुतजाया ॥ गुणनबड़ेछोटेमत
भलोअलखरूपधरआया ॥ जोभावैसोलीजेरावर करो
आपनी दाया ॥ देहुअशीशमेरेबालककों अविचल
बाढ़ैकाया ॥ नामैंलेहौंपाटपटम्बरनामैंकंचन माया ॥
मुखदेखूं तेरेबालककोयहमेरेगुरुनेलखाया ॥ करजोरे
विनवैनंदरानीसुनयोगिनकेराया । कालापीलागो
ररूपहैबाघम्बरओढ़ाया ॥ कहुँडांकनकीदृष्टिलगे
गीबालकजातदिठाया ॥ जाकीदृष्टिसकलजगउप
जैसोक्योंजातदिठाया ॥ तीन लोककासाहेबमेरा
तेरे भवन छिपाया ॥

रागविलावल ।

दिलदारमेरासामलायारदरशदिखाजा ॥ टेक ॥
तेरेबिनदेखेकलनपड़तहैटुकमुखड़ादिखलाजा ॥जा
नकीदासभयेउदास निकसतनाहीं पापी श्वास। मेरे

मुकुट पीताम्बर धारीमेरे नयनोंमें समाजा ॥ नँद
द्वारइकयोगीआयोशृङ्गीनादबजायो ॥ शीश जटा
शशिवदनसोहायोअरुणनयनछबिछायो ॥ रोवतखी
झतकृष्णसांवरो रहत नहीं दुलरायो ॥ लियो उठाय
गोदनँदरानीद्वारेजायदिखायो ॥

वार्त्तिक ।

अरी ललता, विशाखा, चंपकलता, रङ्गदेवियो !
नेक देखियो तो सही मेरे लालको कहाहो गयो !
कि ऐसो रोवे खीझैहै, हंवे वीर ! लालको कहा
होगयोहै, अरीबीर ! वो जो योगी आयोथो वाहिने
कछुक टोनो करगयोहै, हंवेबीर ! वाकोटेरले हंवे
वीर जाऊहूं ।

चलरे योगी नंदभवनमें यशुमति माय बुलावें ॥
मटकत मटकत शम्भू आवैं मनमें मोदबढ़ावें ॥
सात बेरपैकरमा करके राई नून कर लीनो ॥
हाथफेरलालाके ऊपर कछुक मंत्र पढ़ि दीनो ॥ व्यथा
हुई सब दूर बदनकी किलक उठे नँदलाला ॥

खुशीहुई नँदजूकी रानी दीन्ही मोतिन माला ॥
रहुरेयोगी नंदभवनमें दाया हमपर कीजैं ॥ जबजब
मेरो लाला रोवे तब तब दरशन दीजैं ॥

वार्तिक।

अरी यशोदा ! नेक लालको लैयो तो सही दरशन करलेओं, फेर कैलासको जाऊँगो ॥ कृष्ण लालको लाई यशोदा कर अंचल मुख छाया। करपसारचरणनरजलीनोभृंगीनादबजाया ॥ अलखअलखकरपाँयछुयेहैंहँसिबालककिलकाया। पांचबेरपरिकर्मा करके अतिआनन्दबढ़ाया ॥ हरिकीलीलाहरमनअटक्योचितनहिंचलतचलाया। अलखब्रह्मांडकोटिकेनायकनंदघरहिप्रगटाया ॥ इन्द्रचन्द्रसूरजसनकादिकशारदापारनपाया ॥ लोगिश्रवणमंत्रदीनसुनाईहँसिबालकमुसुकाया ॥ कौनदेशकेयोगीहोतुमकौननामधरवाया॥कहाँबासयहकहतयशोदासुनयोगिनकेराय॥ तुमहींब्रह्मा तुमहीं विष्णु तुमहीं ईश कहाय॥तुमविश्वं

भरतुभजगपालकतुमहींकरतसहाया ॥ चिरजीवीसु तुमहरि तिहारोहौंयोगीसुखपायो॥सूरदासरामिचल्यो बरोशंकरनामबतायो ॥ इति ॥

अथ श्रीराममल्ललीला।

श्रीलक्ष्मणोविजयते ॥ छन्दत्रिभंगी ॥ सुतनृप दशरथकेअतिसमरथवीरसुरथकेधरधारी॥रघुनंदनबां केछबिबलछाकेअनुजहुजाकेब्रतधारी ॥ लक्ष्मणदवं दनभरतअनंदनशत्रुनिकंदनशत्रुहनै ॥ कछनी शुभ काछेवीरसुवाछेरुचिरुचिआछेबनेठनै ॥१॥ जबदंडै कांढैंआनंदबाढ़ैंमनोअपाढ़ैंघनदरसैं॥ बैठकीकरहिंज बचित्तहरहितवरङ्गधरहिंजब करपरसैं॥ बंदीगुणगावैं उमंगबढावैंगायसुनावैंवीररसै॥ लक्षिमनविहारीछबि सुखकारी प्रेमसुवारीनित बरसैं ॥ २ ॥ खेलैंचक्र डंडैंकरैंघमंडैं निजभुजदंडैंहाँसिहेरैं ॥ पुनि ले जम फेरैंभुजन्हतरेरैं हर्षित भेरैंभटभेरैं ॥ लैमुद्गर भावैंनालउठावैंतालबजावैं निजभुजकी॥ रमणेशजु

विधिहरकोटिकरतिवर वारौंछबिपरसानुजकी ॥३॥
लखिदांवझपट्टैं झपटि लपट्टैं पलटि डपट्टैं दाँउ लहै।
भूमिपटक्कैं पटकि झटक्कैं झटक सटक्कैं फेरि गहै।दांवनके
ठट्ठावीरसुभट्टा करैंसपट्टाछबिछावैं।मिलिहत्थमहत्था
गुत्थमगुत्थामत्थेमत्थाचपटावैं॥४॥इहिभांतिअगारे मुख
दअपारेनिरखदहारेसुखपावैं॥ मैंवरणौंकहँलौंजिहिम
हिजहँलौंप्रभुगुणतहँलौंतेगावैं।यहमल्लसुलीलाअतिप्रि
यशीलारंगरंगीलाखेलजहाँ खेलतअसुरारीअवधवि
हारीरमणविहारीलखनतहाँ॥५॥इति श्री०ली०समाप्त।

श्रीकृष्णचन्द्रजीकी जन्मपत्री।

नंदजुमेरेमनआनंदभयोमैंसुनिमथुरासे आयो ॥
लगनसाधि ज्योतिषको गिनकै चाहत तुम्हैं सुनायो
नंद०॥१॥ संवतसोमनामशुभभादौंकृष्णपक्ष सो ना
मधस्योहै।अरु अष्टमीबुधवाररोहिणीहर्षण योगपस्योहै
नन्द०॥२॥वृश्चिकलग्नउच्चकेउडुपतिपतितनकोअति
शुभकारी॥दलचतुरंगचढ़ैगेइनकेह्वैंगेरसिकबिहारी।

नंद० ॥ ३ ॥ चौथेशनिकन्याकेदिनपतिमहिमंडल यह जीतें॥ करैं विनाशकंसमातुलको निश्चय कुछ दिनवीतें॥ नन्द० ॥ ४ ॥ पंचमबुधकन्याकोसोहै पुत्रचढ़ैनहिं कोई ॥ सुखमें शुक्रतुलाकेसंयुतशत्रुबचै नहिंकोई ॥ नन्द० ॥ ५ ॥ ऊंचनीचयुवतीबहुभोगै सप्तमराहुपस्योहै ॥ भाग्यभवनमेंमकरमहीश्वरईश्वर सबहिमस्यो है॥ नंद० ॥ ६ ॥ श्यामवर्णमेंकेतुलग्नमें मनचीतेवेकरिहैं ॥ वालापनकेलक्षणइनकेचोरीमें चितधरिहैं ॥ नन्द० ॥ ७ ॥ नवविधुवसैलाभमें इनकेमीनबृहस्पतिकेरी ॥ पृथ्वीभारउतारनहारे मानि लेहुमतिमेरी ॥ नन्द० ॥ ८ ॥ यह सुनि नंद महरि आनंदेपूजिगर्गकोपहिराये ॥ अशनवसनगजवाजिस बीधनभूमंडारलुटाये ॥ नन्द० ॥ ९ ॥ वंदीजनय शगावतपावतसंतनकेमनभायो ॥ ब्रजजन्मे श्रीकृष्ण महोत्सवसूरविमलयशगायो ॥ नंदजुमेरेमनआनंद भयो मैं सुनिमथुरासे आयो ॥ १० ॥

इति श्रीकृष्णचन्द्रजीकीजन्मपत्रिका समाप्त।

प्रभाती।

जागिये कृपानिधान जान राय रामचन्द्र जननी कहै बार बार भोर भयो प्यारे॥ राजिव लोचन विशाल पीत वापिका मराल ललित कमल वदन ऊपर मदन कोटि वारे॥ अरुण उदित विगत शर्वरी शशांक किरन हीन दीन दीप ज्योति मलिन द्युति समूह तारे॥ मनो ज्ञान घन प्रकाश बीते सब भवविलास आस त्रास तिमिर तोप तरनि तेज जारे॥ बोलत खगनिकर मुखर मधुकर प्रतीत सुनो श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुम वारे॥ मनो वेद बंदीजन सूतवृन्द मागधादि विरद वदत जय जय जय जयति कैटभारे॥ विकसत कमलावली चले प्रपुंज चञ्चरीक गुंजत कलकोमल ध्वनि त्याग कंज न्यारे॥ मनो मन विराग पाय सकलशोक गृह विहाय भृत्य प्रेममत्त फिरत गुणत गुण तिहारे॥ सुनत वचन प्रियरसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल

विपुल दुख कदंब टारे ॥ तुलसिदास अतिअनंद देखके मुखारविंद छूटे भ्रमफंद परमसंद द्वंद्व मारे॥

इति प्रभाती समाप्त।

अथ गङ्गालहरी।

ख्याल—सागरकि गिनी जायं लहर गिने जायं तारे॥ नहीं जांय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥ षट शास्त्र गिनेजांयगिनेजाँय नर नारी॥दशदिशा गिनी जांय सृष्टिगिनीजायसारी ॥ सिद्धसाधुगिने जांय गिने जायं आचारी॥ राजा रानी गिने जायं सकल सरकारी॥ गिने जायं शाह शाहानी गिने हलकारे ॥ नहीं जाँय गिने श्रीगंगाजीकेतारे ॥ गिने जांय नदी नद सिंधु गिने जांय नाले ॥ गिने जाँय श्वेतरंग लाल गिने जायं काले ॥ दरखत डाली जाँय गिनी गिने जायं डाल ॥ छत्तीस रागिनी राग सकल गिनडाले ॥ गिनाते गिनते कईहजार सायर हारे॥ नहिं जायं गिने श्रीगंगाजीके तारे॥

खग चरिंद जातेगिनेगिने जांय चातुर॥हरजात गिनी जाय नगर गिने जायं घर घर॥ कागज़ स्याही जाय गिनी गिने जायं अक्षर॥ सादर गिने जांय गिने जायं सागर सर॥ क्या जाने गंगने कितने शठ निस्तारे॥ नहीं जायं गिने श्री गङ्गाजीके तारे॥ दिन रात गिने जांय तिथि घड़ी॥ गायत्री गिनी जाय गिनी छन्दकी लड़ी॥ शायर कायर जायं गिनेगिने जायं कड़ी॥ जङ्गम खेड़ा गिने जांय गिनी जायं जड़ी॥ यह सत्य २ छन्द काशी गिरि ललकारे॥ नहिं जांय गिने श्रीगंगा जीके तारे॥ इति॥

यमराजका विष्णुसे श्रीगङ्गापर फरियाद करना।

अब विष्णुसे जाकर यमने येही पुकारा॥ गङ्गाने बन्द करदिया नरकका द्वारा॥ लाखों पापी

पृथ्वीपै रोज मरतेहैं॥ क्या कहों मैं वो यक क्षण भरमें तरते हैं॥मेरे भयसे भी जरा नहीं डरतेहैं॥ गङ्गाके गण उनकी रक्षा करतेहैं॥ बिन भजन किये होता उनका निस्तारा॥ गङ्गाने बन्द कर दिया नरकका द्वारा॥ हिन्दू या तुर्क या वेहना डोम कसाई॥ भंगी धोबी हड़फोड़ या होवे नाई॥ गंगाकी लहर जिसे दूरसे दो दिखलाई॥ फिरअंत समयमें उसने मुक्ती पाई॥ दर्शन करतेही तरामहा हत्यारा॥गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा॥ जोमेरे दूत पापियोंको जायं पकड़ने॥तो गंगाके गण आवें उनसे लड़ने॥ वो देख देख दूतोंको लगे अकड़ने॥ और मारे बाण तनुबीच लगे वो गड़-ने॥ मैं लड़लड़के कईलाख लड़ाई हारा॥ गंगाने बंदकरदिया नरकका द्वारा॥ गंगासे सौ योजन पर एक नगरथा॥ उस नगरमें इक पापीका ऊँचाघर था॥ वह पाप कर्म को करता रोज गुजरताथा॥मर

गया तो उसपर पड़ा एक वस्तर था॥ गंगाका धो
या उसीने उसको तारा॥ गंगाने बंद करदिया
नरकका द्वारा॥ यह सुनी बात तब विष्णुजी यम-
से बोले॥ गंगाकी महिमा कहांलों कोई खोले॥
इस नेत्रसेदर्शन श्रीगंगाके जोले॥वैकुंठमें वह फिरझूले
सदा हिंडोले॥ कुछ वशनहिंमेरा चले न चले तु-
म्हारा॥ गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा॥
जब मृत्युलोकसे गंगा आप सिधरिहैं॥तब वहपापी
फिर कौन विधी कर तरिहैं॥उसकालमें जो कोइ
पाप कर्मकरि मरिहैं॥ वह आन आनकर नरक तु-
म्हारो भरिहैं॥यमराजजी अब थोड़े दिन करो गुजा
रा॥ गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा॥ यह
सुनी बात यमराजने घर फिरि आये॥कुछ हँसे और
कुछ कुछ मनमें पछताये॥ मनमारके यह गंगाको
बचन सुनाये॥ अबतौ तुम्हरेथोड़े दिन रहने पाये
कहैंबनारसी कुछयमकाचला न चारा॥ गंगाने
बंद करदिया नरकका द्वारा॥ इति॥

अथ गर्भचिंतामणि प्रारम्भ।

क्योंजन्मगमावोरामरघुराई॥ मानुषतनवारवार सहजनहिं पाई॥ टेक॥नरनारीकेसंयोगगर्वमेंजायो मलमूत्रमांसकोपिंडहोयहैरायो॥ पगऊपर तलमें शीशरहोलटकायो॥ दुखगर्भवासकोदेखबहुतघबरायो पड़तेहीपिंडमेंजीवतनिक सुधि आई॥ मानुषतन० ॥ १ ॥ अग्निजठरजहँ तपेपवनहिंआवै ॥ रहै जीवकैदमेंजराचैननहिंपावै॥ करतासोंवारंवार अरज गुजरावै ॥ इसफंद सेवाहरजोकोइभांतिकरावै॥ मैंज पूँ तुझीकोआठपहरचितलाई ॥ मानुषदेहवारंवार-सहजनहिंपाई ॥ २ ॥ जबनिकसगर्भसूँमोहजालमें आयो॥ सबभूल्योकौलकराररामबिसरायो॥ माबाप देखसुतआनन्दकरेउछायो ॥ पंडितगुरुदेखैंदशाबहुतधनपायो ॥ घरबजैनौबतबटरहींनगबधाई ॥ मानुषतन० ॥ ३ ॥ बालककुछस्यानोभयो खेलनेजावे नितनाचफंदमेंरहेसुरतिनहिंल्यावे ॥ माबापलाडली

सुरतदेखहरषावे ॥ ब्याहनको सुंदरयोगकहींबन जावे ॥ तिरियाफंददीनोडारगलेमेंल्याई ॥ मा० ॥ ४ ॥ बालकपनबीतोतरुणाईगहराई ॥ नहिं भजनभावतेचित्तरहैप्रस्ताई ॥ तिरिया संगनिशिदि नरहैगलेलिपटाई ॥ भयोगधापचीसी मांयजवानी छाई । तिरियाफन्दमेंहोयअंधकरैचितचाई ॥ मानुषतन० ॥ ५ ॥ नितअतरफुलेल सुगंधअरगजाल्यावे ॥ करउबटनमरदनअंगसुगँधलगावे ॥ पंचरंगीचीराबांधछैलबनजावै ॥ परतिरियातकतोनिजघरनी बिसरावै ॥ धृकयोबनजिननेरामनामबिसराई ॥ मानुषतन० ॥ ६ ॥ बालक पनज्वानीबीतबुढ़ापा पाघेरा ॥ सबछुटेजगतकेस्वाद मोहमदफेरा ॥ मुख काननाकपगहाथथकेयकबेरा। परवशहोकै कालआ गयानेरा ॥ दिनरहेविकलतागतोनींदनहिंआई ॥ मानुषतनवारंवार० ॥ ७ ॥ देहछीजछीजरहगईहांड़ कीटट्टी ॥ मुखनयनझरै दिनरैनभईदुरघट्टी ॥

सबघरकेमिलयोंदहैंमिले कबमिट्टी॥ बेटानहिं मान
तहुकुमकरमकीपट्टी॥ घरकीनारीभीगारीदेबतराई॥
मानुपतन० ॥ ८ ॥ तनछीनमलिनमुखबिकलभयो
अतिचारी॥ मरनेसेतौहूडरलगेजोकारी॥ यमदूतखड़े
चहुँओर भयंकरभारी॥ मुसकोंसेलीनाबांधमूसलन-
मारी ॥ लेखींचजीवकोचलेजहाँयमराई ॥ मानुष
तन० ॥ ९ ॥ यमराजकोपकरकहीदुष्टलेआवो ॥
लोहखैंचगर्मकरदेहउसकीचिपकावो ॥ मुद्गरकीमारो
मारजेरबदल्यावो । अतिघोरभयंकरनरकमाहिंछि
रकावो ॥ जीवजन्तुनरककेचंटचंटतनुखाई ॥ मानु
षतन० ॥ १० ॥ रहैंजीवनरकमेंदुखीकहीनहिं जावै॥
करणीकेभोगभोगकहापछतावै॥ फिर भुगतनरक को
चौरासीमें आवैं । देहदेहमेंभटकेजीवकोटिदुखपा
वै ॥ यहिभाँतिदुर्दशाप्राणीकीहोजाई ॥ मानुषतन०
॥११॥हरिविमुखनकीयहदशा होतदोजखमें ॥ जैलाल
रटोनितरामनामहरदममें॥ गुरुपुरुषोत्तमकरयादगर्भम

णघटमें कटजाय आगमनचंदतेराचटपटमें॥ हैतारकमं अयहीवेदश्रुतिगाई॥मानुषतनवारंवारसहजनहिंपाई॥

इति गर्भचिंतामणिसमाप्त ।

गजल बालमुकुन्दकृत ।

जुबांसे हरघड़ी ऊधो वही प्रीतम निकलता है ॥ कहो जाकर मिलै हमसे नहीं तो दम निकलता है ॥१॥ किया क्या जुल्म यह हमपर कहा करतेथे क्या हमसे॥ वफादार इस जहाँ अन्दर मसलहै कम निकलता है ॥२॥ अरस्तूं और अफलातूं दवा करकरके सबहारे ॥ न हरगिज जख्मका मेरे कहीं मरहमनिकलताहै॥३॥ कहो जाकर जरा ऊधो ये बालकरामकी अर्जी॥ मिलो इकबार फिर वर्ना जिगर बेगम निकलताहै॥ ४ ॥ इति ॥

आरती संग्रह ।

अथ श्रीगणपतिजीकीआरती ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ गणपतिकीसेवामंगलमेवासे

वासेसबविघ्नटरैं ॥ तीनलोकतैंतीसदेवताद्वारखड़े सब अर्जकरैं ॥ टेर ॥ ऋधिसिधि दक्षिणबामविराजै अरुआनंदसोचमरकरैं॥ धूपदीपऔलियाआरतीभक्त खड्याजयकारकरैं॥गणप०॥ १ ॥ गुड़केमोदकभोग लगतहैं मूषकवाहनचढ़ासरैं ॥ सौम्यरूपसेयेगण पतिको विघ्नभाजज्यादूरपरैं ॥ गणप० ॥२॥ भादौं मास औरशुक्लचतुर्थीदिनदोपरापूरपरैं ॥ लियो जन्म गणपतिप्रभुजीसुनिदुर्गामनआनंदभरैं ॥ ग० ॥ ३ ॥ अद्भुतबाजाबज्याइन्द्रकादेववधूजहँ गान करैं ॥ श्रीशंकरकेआनँदउपज्योनामसुन्यासबविघ्नट रैं ॥ ग० ॥ ४ ॥ आनिविधाताबैठेआसनइन्द्रअ प्सरा निरतकरैं ॥ देखवेदब्रह्माजीजाकोविघ्नविनाशक नामधरैं ॥ गण० ॥ ५ ॥ एकदंतगजबदनविनायक त्रिनयनरूपअनूपधरैं ॥ पगथंभासाउदरपुष्टहै देख चंद्रमाहास्यकरैं ॥ गणप० ॥ ६ ॥ दैशरापश्रीचंद्र देवको कलाहीन ततकालकरैं ॥ चौदहलोकमें फिरैं

गणपतीतीनभुवनमेंराज्यकरैं ॥ गण० ॥ ७ ॥ उठ प्रभातजबकरेध्यानकोइताकेकारजसबसरैं ॥गण०॥८॥ गणपतिकीपूजापेला करणीकामसबीनिर्विघ्नसरैं ॥ श्रीपरतापगणपतीजीःकीहाथजोड़करस्तुतिकरैं॥गण पतिकीसेवामंगलमेवा० ॥ ९ ॥

इति श्रीगणपतिजीकीआरतीसमाप्त ।

अथ लक्ष्मीरमणकी आरती।

जयलक्ष्मीरमणा श्रीजयलक्ष्मीरमणाशरणागत जयशरणेगोवर्द्धनधरणा ॥ टेक ॥ जयजययमुना तटनिकटितप्रगटितपटुवेसा॥ झटपटगोपीकुचजबप टहरनटभेसा ॥ जय० ॥ १ ॥ जयमुरलीरवतरली कृतगोपीलीले ॥ तुवभक्तीमेभवतुव्रजललना मीले ॥ जय० ॥ २ ॥ जयजयभगवन्भगवन् कंसारे ॥ जयगोपीप्रतिपालकबंधो ॥ कीमात्रा तुमशक्तकृष्ण कृपासिंधो ॥ ज० ॥ ४ ॥ जयजयभक्तजननप्रति पालकचिरजीवोजिष्णो ॥मामुद्धर दीनोद्धरधरणीधर

विष्णो ॥ जय० ॥ ५ ॥ जयजय कृष्णस्वामीनिज पदरसगामैं ॥ कुरुकरुणांकुरुकरुणांदाससखारामैं ॥ जयलक्ष्मीरमणा० ॥ ६ ॥

इति लक्ष्मीरमणकी आरती समाप्त।

अथ श्रीकृष्णजीकी आरती।

आरतियुगलकिशोरकीकीजे ॥ राधेतनमनधन न्योछावरकीजे ॥ रविशशिकोटिवदनकीशोभा ॥ ताहिनिरखिमेरोमनलोभा ॥ आ० ॥ १ ॥ गौरश्याम मुखनिरखतरीजे ॥ प्रभुकोस्वरूपनयनभरिपीजे ॥ आरती०॥२॥ कंचनथालकपूरकीबाती ॥ हरिआये निर्मलभई छाती ॥ आ० ॥ ३ ॥ फूलनकी सेजफूलनगलमाला ॥ रत्नसिंहासनबैठेनँदलाला ॥ आर० ॥४॥ मोरमुकुटकरमुरलीसोहै ॥ नटवरवेषदेखिमन मोहै ॥ आ० ॥ ५ ॥ ओढ्यानीलपीत पटसारी ॥ कुंजविहारीगिरिवरधारी ॥ आरती० ॥ ६ ॥ श्री पुरुषोत्तमगिरिवरधारी ॥ आरतिकरतिसकलब्रजनारी

री॥आरति०॥ ७ ॥ नँदनंदन वृषभानुकिशोरी। परमानँदस्वामीअविचलजोरी॥आरतियुगलकिशोर कीकीजे ॥ तन० ॥ ८ ॥

इति श्रीकृष्णजीकी आरती समाप्त।

अथ त्रिगुणआरती शिवजीकी।

जयशिवओंकाराहरजैशिवओंकारा ॥ ब्रह्माविष्णु सदाशिवअर्द्धंगीधारा ॥ टेक॥ एकाननचतुरानन पंचाननराजे ॥ हंसासनगरुडासनवृषभासन साजे ॥ जैशि० ॥ १ ॥ दोयभुजचारचतुर्भुजदशभुजतेसोहैं॥ तीनोंरूपनिरखतात्रिभुवनजनमोहै जैशि० ॥ २ ॥ अक्षमालवनमालरुंडमालाधारी ॥चंदनमृगमदचंदा भालेशुभकारी॥जैशि०॥३॥श्वेतांबरपीतांबरबाघंबर अंगे ॥ सनकादिकप्रभुतादिकभूतादिकसंगे ॥ जै शि० ॥ ४ ॥ करमध्येकमंडलुचक्रत्रिशूलधरता ॥ जगकर्ताजगभर्ताजगसंहारकर्ता॥ जैशिव० ॥ ५ ॥ ब्रह्माबिष्णुसदा शिवजानतअविबेका ॥ प्रणवअक्षरनु

मध्येयेतीनोएका ॥ जैशिव० ॥ ६ ॥ त्रिगुणस्वामी जीकीआरतीजोकोइगावै ॥ भणतशिवानन्दस्वामी मनवांछितपावै ॥ जैशिव० ॥ ७ ॥ इतित्रिगुणआ-रतीशिवजीकी समाप्त ॥

अथ आरती श्रीदुर्गाजीकी।

जैअंबेगोरी मैया जै मंगलमूर्त्ती मैया जैआनन्दकरणी ॥ तुमकोनिशिदिनध्यावतहरब्रह्मा शिवरी॥ टेक ॥ मांगसिंदूरविराजतटीकोमृगमदको ॥ उज्वल सेदोउनैनाचन्द्रवदनीको ॥ जैअंबे ॥ १ ॥ कनक समानकलेवररक्तांबरराजे ॥ रक्तपुष्पगलमालाकंठन परसाजे ॥ जैअंबे० ॥ २ ॥ केहरिवाहनराजतखड्गख प्रधारी ॥ सुरनरमुनिजनसेवततिनकेदुखहारी ॥ जै अम्बे ॥ ३ ॥ काननकुण्डलशोभितनासाअेमोती ॥ कोटिकचन्द्रदिवाकरसमराजतज्योती ॥ जै अम्बे० ॥४॥ शुम्भनिशुम्भविडारेमहिषासुरघाती ॥ धूम्रविलोचन नैना निशिदिनमदमाती ॥ जैअम्बे ॥ ५ ॥

चौंसठयोगनीगावतनृत्यकरतभैरुं ॥ बाजततालमृदंगा और बाजतडमरू ॥ जैअम्बे० ॥ ६॥ भुजाचारं अतिशोभितखड्गखप्पधारी ॥ मनवांछितफलपावत सेवतनरनारी ॥ जैअम्बे० ॥ ७ ॥ कंचनथालविराजतअगरकपुरवाती ॥ श्रीमालकेतुमेंराजतकोटिरतन ज्योती, ॥ जैअंबे० ॥ ८ ॥ दोहा ॥ याअंबेकी आरती, जोकोइनरगावै ॥ भणतशिवानँद स्वामी, सुखसंपतिपावै ॥

इति श्रीदुर्गाजीकी आरती समाप्त ॥

अथ आरती श्रीलक्ष्मीजीकी ।

जयलक्ष्मीमाताजयलक्ष्मीमाता ॥ तुमकूंनिशिदिनसेवत हरविष्णूधाता ॥ टेक ॥ ब्रह्माणी रुद्राणी कमलातुहिहैजगमाता ॥ सूर्य चन्द्रमाध्यावतनारदऋषिगाता ॥ जय० ॥ १ ॥ दुर्गारूपनिरंजनिसुखसंपतिदाता ॥ जोकोईतुमकूंध्यावतऋधिसिधिधनपाता ॥ जयल० ॥ २ ॥ तूहीहै पाताल बसंतीतूहीं

हैशुभदाता। कर्मप्रभावप्रकाशकजगनिधिसेत्राता॥ जयल० ॥ ३ ॥ जिसघरथारो वासोजाहिमें गुणआता ॥ करनसकैसोइकरलेमन नहिंधडकाता ॥ जयल० ॥४॥ तुमबिनयज्ञ न होवेवस्त्रनहोयराता ॥ खानपानको विभवतुमें विनकुणदाता ॥ जयल० ॥ ५ ॥ शुभगुणसुन्दरयुक्ताक्षीरनिधीजाता ॥ रत्नचतुर्दशतोकंकोइभीनहिं पाता ॥ जयल० ॥ ६॥ याआरतीलक्ष्मीजीकीजोकोइनरगाता ॥ उरआनंद अतिउमँगेपापउतरजाता ॥ जयल० ॥ ७ ॥ स्थिर चरजगतबचावैकर्मप्रेरल्याता ॥ रायप्रतापमैयाकी शुभदृष्टीचाता ॥ जयलक्ष्मीमाताजयलक्ष्मीमाता ॥ तुमकोनिशिदिनसेवतहरविष्णूधाता ॥ ८ ॥

इति श्रीलक्ष्मीजीकीआरती समाप्त।

अथ सत्यनारायणजीकी आरती

जयलक्ष्मीरमणा श्रीलक्ष्मीरमणा॥ सत्यनारायण स्वामी जनपातकहरणा॥ जय० ॥टेक॥ रत्नजडित

सिंहासन अद्भुतछबिराजे॥ नारदकरतनिराजनघंटा ध्वनिवाजै॥ जयल०॥ १॥ प्रगटभयेकलिकारण द्विजकूंदरशदिया॥ बुड्ढोब्राह्मणबनकैकंचनमहलकिया॥ जय०॥ २॥ दुर्वलभीलकठारोजिनपरकृपा करी॥ चंद्रचूडयकराजाजिनकीविपतिहरी॥ जय० ॥ ३॥ वैश्यमनोरथपायोश्रद्धातजदीनो॥ सोफल भोग्योप्रभुजीफेरस्तुतिकीनो॥ जय०॥ ४॥ भाव भक्तिकेकारणछिनछिनरूपधस्या॥ श्रद्धाधारणकीनीजिनकाकाजसस्या॥ जय०॥ ५॥ ग्वालबाल सँगराजावनमें भक्तिकरी॥ मनवांछितफलदीनोदीन दयालुहरी जय०॥ ६॥ चढ़तप्रसादसवायोकद-लीफलमेवा॥ धूपदीपतुलसीसेराजीसतदेवा॥ जय० ॥ ७॥ श्रीसत्यनारायणजीकीजोआरतीगावै॥ भणतमनसुखसंपतिमनवांछितपावै जय०॥ ८॥

इति श्रीसत्यनारायणजीकीआरतीसमाप्त।



अथ पार्वतीदेवीकीआरतीप्रारंभ।

जयपार्वतीमाताजयपार्वतीमाता ॥ ब्रह्मसनातनदेवीशुभफलकीदाता ॥ टेक॥ अलिकुलपद्मनिवासीनिजसेवकत्राता ॥ जगजीवनजगदंबाहरिहरगुणगाता ॥ जय० ॥ १ ॥ सिंहजवाहनसाजेलुंकडरहसाथा ॥ देववधूजहँगावतनिरतकरतताथा ॥ जयपा० ॥ २ ॥ सतयुगरूपशीलअतिसुंदरनामसतीकहाता ॥ हेमाचलघरजनमीसखियनसंगराता ॥ जयपा० ॥ ३ ॥ शुंभनिशुम्भबिडारेहेमालयस्थाता ॥ सहस्रभुजातनुधरकेचक्रलियाहाता ॥ जयपा० ॥४॥ सृष्टिरूपतुहिजननीशिवसंगरंगराता ॥ नंदीभृङ्गीवीनवहीपस्यामदमाता ॥ जयपा० ॥ ५ ॥ देवरअरजकरतहममनचितकूंलाता ॥ गावतदेदेतालीमनमेंरंगछाता ॥ जयपा० ॥ ६ ॥ श्रीपरतापआरतीमैयाकीजोकोईनर गाता ॥ स्वर्गसुखीनितरहतासुखसंपतिपाता ॥ जयपा० ॥ ७ ॥

इति पार्वतीजीकीआरती समाप्त।

अथ आरतीजानकीनाथजीकी।

जयजानकीनाथजयश्रीरघुनाथा ॥ दोउकरजोड़े बिनऊंप्रभुमेरीसुनवाता ॥ टेक ॥ तुमरघुनाथहमारेप्राणपितामाता ॥ तुमहोसुजनसंगातीभक्तिमुक्तिदाता ॥ जय० ॥ १ ॥ चौरासीप्रभुफंदछुटावोमेटो यमयांता ॥ निशिदिनप्रभुमोयराखोअपनेसंगसाथा ॥ जय० ॥२॥ सीतारामलक्ष्मणभरतशत्रुहनसंगचारोभैया ॥ जगमगज्योतिविराजतशोभाअतिलहिया ॥ जय० ॥ ३ ॥ हनुमतनादबजावतनेवरटिमकाता ॥ सुवरणथाल आरतीकरतकौशल्यामाता ॥ जय० ॥४॥ कीटमुकुट करधनुषविराजतशोभाअतिभारी ॥ मनीरामदरशन की आशापलपलबलिहारी ॥ जय० ॥ ५ ॥

इति जानकीनाथकीआरतीसमाप्त ॥

अथ आरती लक्ष्मणबालाजीकी।

जयबोलोसाधोलक्ष्मणबालाकी ॥ बालाकीवोनंद लालाकी ॥ टेक ॥ दक्षिणदेससवालखपर्वत ॥ जगमग

ज्योतिदिवालाकी ॥ ज० ॥१॥ त्रिपदीमेंसीतारामजी
विराजें ॥ चौकीहनुमतवालाकी ॥ ज० ॥ २ ॥
शेषाचलपरआपविराजो ॥ चौकीहनुमतवालाकी ॥
ज० ॥ ३ ॥ इजयविजयदोउपौरियाविराजें गरीधू-
सनगाराकी ॥ ज० ॥ ४ ॥ ब्रह्माजीकेरथपरकनकसिंहा
सन कलंगीबनीहीरालालकी ॥ ज० ॥ ५ ॥
बृहस्पतिवारजरीकोजामो ॥ ऊपरमोजदुशालाकी ॥
ज० ॥ ६ ॥ शुक्रवारदूधकोन्हावण ॥ मौजबनी मो-
हनमालाकी ॥ ज० ॥ ७ ॥ देशदेशकेयात्रीआवें ॥
मारपड़ैम्रृगछालाकी ॥ ज० ॥ ८ ॥ आशानंदगरी
बतुम्हारे ॥ पतिराखोवोकंठीमालाकी ॥ ज० ॥ ९ ॥
जयबोलोसाधोलक्ष्मणबालाकी ॥ बालाकीवोनंदला-
लाकी ॥ हरिहरिदशरथसुतनंदलालाकी ॥ हरिहरि
परदेशां रखवाला की ॥ हरिहरि घाटबाट रखवाला
की ॥ ज० ॥ १० ॥ इति ॥

—:*:—

अथ आरती श्रीराधावरकी ।

आरतिराधावरकी कीजै ॥ युगलस्वरूपनयनभर पीजै ॥ टेक॥ रत्नजटितहाटककी आरति सुरभीघृत सुगंधमनभावति, करसरोजसे मातउतारतिपुष्पवृष्टि अमृतरसभीजै ॥ आरति० ॥ इति ॥

अथ आरतीश्रीरामचन्द्रजीकी ।

आरतिकरतजनककरजोरे ॥ बड़ेभाग्यरामजीआये घरमोरे ॥ टेक ॥ सीतास्वयंबरधनुषचढ़ायो ॥ सब भूपनकोगर्वनवायो ॥ आ० ॥ १ ॥ तोड़ेधनुषकिये दोयटुकड़ा ॥ रघुकुलहर्षरावणहोइशंका ॥ आ० ॥२॥ आइयोसीतासंगसहेली ॥ हरषनिरखवरमालामेली ॥ आ० ॥ ३ ॥ गजमोतिनकोचौकपुरायो ॥ राजाजनकघरमंगलगायो ॥आ०॥४ ॥ कंचनथारकपूरकी वाती ॥ सुरनरमुनिहरिकेआयेबराती ॥ आ०॥५॥ राजादशरथऔरजनकवैदेही ॥ भरतशत्रुहनपरमसने

ही ॥ आ० ॥ ६ ॥ धनिधनिरामलक्ष्मणदोउभाई। धनि दशरथकौशल्यामाई ॥ आ० ॥ ७ ॥ मिथिलापुरमेंबजतबधाई ॥ दास मुरारीकी आरतिगाई ॥ आ० ॥ ८ ॥

इति रामचंद्रजीकीआरती समाप्त।

अथ शिवजीकी आरती प्रारम्भ।

शीशगंगअर्द्धंगपार्वतीसदाविराजतकैलासी ॥ नंदीभृङ्गीनृत्यकरतहैंगुणभक्तनशिवकीदासी ॥ १ ॥ शीतलमंदसुगन्धपवनबहेबैठेहैंशिवअविनासी ॥ करतगानगन्धर्वसप्तसुररागरागिनीअतिगासी ॥ २ ॥ यक्षरक्षभैरवजहंडोलतबोलतहैंवनकेवासी ॥ कोयलशब्दसुनावतसुंदरभँवरकरतहैंगुंजासी ॥ ३ ॥ कल्पद्रुमअरुपारिजाततरुलागरहेहैंलक्षासी । कामधेनुकोटिकजुहडोलतकरतफिरतहैंभिक्षासी ॥ ४ ॥ सूर्यकांतसमपर्वतशोभित चंद्रकांतभवमीवासी ॥ छहोऋतूनितगलतरहतहैंपुष्पचढ़तहैंवर्षासी ॥ ५ ॥ देवमुनिजन

कीभीड़पड़तहैं निगम रहतजोनितगासी ॥ ब्रह्माबि-
ष्णुजाकोध्यानधरतहैंकछु शिवहमकोफरमासी ॥६॥
ऋद्धिसिद्धिकेदाताशंकरसदा अनंदितसुखरासी ॥
जिनकोसुमिरनसेवाकरताटूटजाययमकीफांसी ॥ ७॥
त्रिशूलधरजीकोध्याननिरंतरमनलगायकरजोगासी ॥
दूरकरोबिपताशिवतनकीजन्मजन्मशिवपदपासी ॥८॥
कैलासी काशी केवासी अविनाशीमेरीसुधलीज्यो
सेवक जान सदा चरणनको अपनो जान दरशदी
ज्यो ॥९॥ तुमतोप्रभुजीसदासयाने अवगुणमेरे सब
ढकियो ॥ सबअपराधक्षमाकर शंकरकिंकरकी बिनती
सुनियो ॥१०॥ इति शिवजीकी आरतीसमाप्त ॥

अथ पुनः आरतीशिवजीकी ।

जैजैहेशिवपरंपराक्रमओंकारेश्वरतुवशरणं ॥ नमा
मिशंकरभवानिशंकरहरहरशंकरतुवशरणं ॥टेर ॥दश
भुजमंडनपंचबदनशिवत्रिनयनशोभित शिवसुखना ॥
जटाजूटशिरमुकुटविराजै श्रवणेकुंडलअतिरमणं ॥ जै

जैहे० ॥ १ ॥ ललाटचमकत रजनी नायकपन्नग भूपणगौरीशा ॥ त्रिशूलअंकुशगणपतिशोभाडमरू बाजतध्वनिमधुरा ॥ जैजै० ॥ २ ॥ भस्मविलेपनस र्वाङ्गेशिवनन्दीवाहनअतिरमणा ॥ वामांगेगिरि जाहैविराजत घंटानादिकधुनिमधुरा ॥ जैजै० ॥ ३ ॥ गजचर्मांवरवाघंवरहरकपाल मालगंगेशा ॥ पंचवद नपरगणपतिशोभापृष्टेगिरिपतिज्वालेशा ॥जैजैहे०॥ ॥ ४ ॥ सिद्धेश्वरममलेश्वरशंकरकपिरेश्वरश्रीकोटे शा ॥ कपिलासंगम निर्मलजलहैकोटीतीरथभयहर णा ॥ जैजैहे० ॥ ५ ॥ नर्मदाकावेरीजलसंगममध्ये शोभितगिरिशिखरा ॥ इंद्रादिकपतिसुरपति सेवितरं भाआदिकध्वनिमधुरा ॥ जैजैहे० ॥ ६ ॥ मंगल मूर्तिप्रणवाष्टकशिवअद्भुत शोभामृडभवनं ॥ सनका दिकमुनिकरते स्तोत्रं मनवांछितशिवभयहरणं ॥ जैजैहे०॥ ७ ॥प्रणवाष्टकपदध्यायजनेश्वररचयतिवि मलंप्रणवाष्टं ॥ तवकृपयात्रिगुणात्मा शिवजीपतित

तनपावनभयहरणं ॥ जैजैहे० ॥८॥ शिवजीकी आरती समाप्त ॥

अथ पुनः आरती शिवजीकी।

दर्शनदेवोसदाशिवशंभूभक्तवत्सलतेरानामहवे ॥ मस्तकतेरेचन्द्रविराजैशीशमध्येगंगहवे॥ टेर ॥ नाथ हाथलियेडमरू बजावेभुजंगहृदयपरसाजहवे । तीन कोटिसवालक्षहजारेगणतेरेसन्मुखनाचहवे ॥ दर्श० ॥ १ ॥ हाथत्रिशूललियाभोलेशंभू वामांगगौरीसाजहवे ॥ भस्मरमावतअंगतूसारेगलेरुंडमालाराजहवे ॥ द० ॥ २ ॥ कोउत्रिवंकेकोउअंगलंवे काहुके वसनउघारेहवे ॥ काहुकेकेशवनेअतिपीरे रक्तरंगको उकालेहवे ॥ दर्शन० ॥ ३ ॥ आसन तेराकैलास विराजतलहरीलीगंगाराजहवे॥ भांगधतूरोसदारहैखा तातलबाघंबरसाजहवे दर्शन० ॥ ४ ॥ नारदइंद्रदेव सबदानवआरतीतेरोगावहवे ॥ असीहिमानुषगासु नेजेमनवांछितफलपावहवे ॥ दर्शन० ॥ ५ ॥

रूपकहैकरजोरसदाशिवमोरेमनोरथकीजेहवे ॥ गुरु चरणोंमेंप्रीतिरहोनितवचनसफलमेराकीजेहवे ॥ ६ ॥ दर्शनदेवोस० ॥ इति श्रीशिवजीकी आ० समाप्त ॥

अथ आरतीशिवजीकी।

कैलासीकाशीकेवासीअबिनाशीमेरीसुधिलीजे ॥ सेवकशरणसदाचरणनकोअपनोजानिकृपाकीजे॥ अ-भयदानदीजेप्रभुमोरेसकलसृष्टिकेहितकारी ॥ भोले नाथतुमभक्तनिरंजनभवभंजनभवशुभकारी॥दीनदया लुकृपालकालरिपु अलखनिरंजनशिवयोगी ॥ मंगल रूपअनूपछबीलेअखिलभुवनकेतुमभोगी ॥ बांवोअं-गरंगरसभीनोउमावदनकीछबिन्यारी ॥ भोलेनाथ० ॥ १ ॥ असुरनिकंदनसबदुखभंजनबेदबखानेजगजा ने ॥ रुंडमालगलव्यालभालशशिनीलकंठलियामन माने॥गंगाधरत्रिशूलधरविषधरबाघंवरधरगिरिधारी॥ भोले० ॥ २ ॥ योभवसागरअतिअगाधहैपारउतर कैसेसूजे॥यामेंग्राहमगरबहुकच्छपयेमारगकैसेसूजे॥

नामतुम्हरोनौकानिर्मलतुमकेवटशिवअधिकारी ॥ भो
लेना० ॥ ३ ॥ मैंजानूंतुमनिपटसयानेअवगुणमेरेस-
वढकियो ॥ सबअपराधक्षमाकरशंकरकिंकरकीविन
तीसुनियो ॥ तुमतोजगकेकल्पतरुहोमैंहौंप्राणीसंसा-
री ॥ भोलेना० ॥ ४ ॥ कामक्रोधयोमहाअपरबलइन
सेमेरोबसनाई ॥ लोभमोहयोंसंगनहिंछांडेआनदेत
नहिंतुमताई ॥ क्षुधातृषानितलगीरहतहैताऊपरतृष्णा
भारी ॥ भोलेना० ॥ ५ ॥ तुमहीशिवजीकर्त्ताहर्त्ता
तुमहींयुगकेरखवारे ॥ तुमहींगगनमगनपुनिपृथिवी
पर्वतपुत्रीकेप्यारे ॥ तुमहींपवनहुतासनशिवजीतुमहीं
दिनकरशशिहारे ॥ भोलेना० ॥ ६ ॥ पशुपतिअज
रअमरअमरेश्वर योगेश्वरशिवगोस्वामी ॥ वृषभारूढ़
गूढ़गुरुगिरिपतिगिरिजावल्लभनिष्कामी ॥ शोभासा
गररूपउजागरगावतहैंसबनरनारी ॥ भोले० ॥ ७ ॥
महादेवदेवनकेअधिपतिफणिपतिभूषणअतिसाजे ॥
दीप्तलिलाटलालदोउलोचनजिनकेउरतेदुखभाजे ॥

परमपुनीतपुनीतपुरातनमहिमात्रिभुवनविस्तारी॥भो
लेना० ॥ ८ ॥ ब्रह्माविष्णुमहेशशेषमुनिनारदआदि
करतसेवा ॥ जिनकीइच्छापूरणकीन्हीनाथसनातनहर
देवा ॥ भक्तिमुक्तिकेदाताशंकरसदानिरंतरसुखराशी
भोलेना० ॥ ९ ॥ महिमाइष्टमहेश्वरजीकीसिखेसुनेजे
नितगावें ॥ अष्टसिद्धिनौनिधिसुखसंपतिस्वामिभक्ति
मुक्तीपावें ॥ श्रीअहिभूषणप्रसन्नहोयकरकृपाकरोशिव
त्रिपुरारी ॥ भोलेना० ॥ १० ॥

अथ आरती श्रीदुर्गाजीकी ।

मंगलकीसेवासुनमेरीदेवाहाथजोड़तेरे द्वारखड़े ।
पानसुपारीध्वजानारियल लेज्वालातेरेभेंटधरे ॥ सुण
जगदंबेनकरविलंबेदीननकाभंडारभरे॥संतनप्रतिपाल
सदाखुस्यालीजैकालीकल्याणकरे ॥ टेर ॥ बुद्धिबि
धातातूजगमातामेराकारजसिद्धकरे ॥ चरणकमलका
लियाआसराशरणतुम्हारीआनपरे ॥ जबजबभीड़प
ड़ेभक्तनपरतबतबआयसहायकरे ॥ संतन० ॥ १ ॥

बारबारतैंसबजगमोह्योतरुणीरूपअनूपधरे॥ माताहो
करपुत्रखिलावेकहींभारज्याभोगकरे ॥ संतन०॥२॥
संतनसुखदाई सदासहाईसंतखड़ेजयकारकरे॥ ब्रह्मा
बिष्णु महेशसहसफण लियेभेंटतेरेद्वारखड़े ॥अटल
सिंहासनबैठीमाताशिरसोनेकाछत्रफिरे ॥ संत० ॥
॥ ३ ॥ वारशनिश्चरकुंकुमवरणोजबलुकुंड परहुकुमक
रे॥खड्गखप्रत्रिशूलहाथलियारक्तबीजकूं भस्मकरे॥
शुंभनिशुंभकूंक्षणमोमारोमहिषासुरकूं पकड़दला ॥
संतन० ॥ ४ ॥ आदितवारआदकोवीराजनअ
पनेकोकष्टहरे॥कोपहोयकरदानोमारे चंडमुंडसबचूर
करे ॥ जबतुमदेखोदयारूपहोयपलमें संकटदूरकरे ॥
संत० ॥५॥ सौमस्वभावधरय्योमेरीमाता जनकी
अरजकबूलकरे॥ सिंहपीठपरचढ़ीभवानी अटलभवन
मेंराज्यकरे ॥ दर्शनपावेंमंगलगावें सिद्धसाधतेरेभे
टधरे ॥ सं० ॥ ६ ॥ ब्रह्मावेदपढ़ैतेरेद्वारेशिवशंकर
जीध्यानधरे॥ इंद्रकृष्णतेरोकरैंआरतीचमरकुबेरडुला

यरहे ॥ जयजयजननीजय मातुभवानीअटलभवनमें राज करे ॥ संतन० ॥७॥

इति श्रीदुर्गाजीकोआरती समाप्त।

अथ पुनःआरतीदुर्गाजीकीप्रारंभ।

सुनमेरी देवीपर्वतवासिनितेरापारनपाया॥ टेक॥ पानसुपारीध्वजानारियल तेरीभेंटचढाया ॥ सुन० ॥ १ ॥ सुवाचोलातेरेअंगबिराजे ॥ केसरतिलक लगाया ॥ सुन० ॥ २ ॥ ब्रह्मावेदपढ़ेतेरे द्वारे शङ्कर ध्यानलगाया ॥ सुन० ॥ ३ ॥ नंगेपगतेरेअकबर आया ॥ सोनेकाछत्रचढ़ाया ॥ सुन० ॥ ४ ॥ उँच उँचपर्वतवएयोदिवालो ॥ नीचेशहरबसाया॥ सुन० ॥ ५ ॥ कलियुगद्वापरत्रेतामध्ये ॥ कलियुगराजस वाया ॥ सुन० ॥ ६ ॥ धूपदीप नैवेद्यआरती ॥ मोहनभोग लगाया ॥ सुन० ॥ ७ ॥ धानूभगतमै यातेरागुणगाया॥ मनवांछितफलपाया॥ सुन० ॥८॥

इति श्रीआरतीदुर्गाजीकी समाप्त।

अथ बजरङ्गबालकी आरती।

जाकेबलसेगिरिवरकंपै ॥ देवपिशाचनिकटन हिंझंपै ॥ आरतीकीजैहनुमानललाकी ॥ दुष्टदलन रघुनाथकलाकी ॥ टेक ॥ लंकासेकोटसमुद्रसी खाई ॥ जातपवनसुतवारनलाई ॥ १ ॥ आर० ॥ दैवीडारघुनाथपठाये ॥ लंकाजारिसियासुधिल्या ये ॥ आर० ॥ २ ॥ जगमगजोतिअवधपुरराजा । घंटातालपखाउजबाजा ॥ आर० ॥ ३ ॥ शक्ती बाणलगोलक्ष्मणको ॥ आनसजीवनलपणजि वाये ॥ आर० ॥४॥ पैठपताल तोड़यमकातर ॥ अ- हिरावणकोभुजाउखाड़े ॥ अ० ॥ ५ ॥ आरतिकी जेजैसीतैसी ध्रुवप्रह्लादविभीषणजैसी ॥ आर० ॥६॥ सुरनरमुनिजनआरतिउतारे ॥ जेजेजैकपिराजउचारे॥ आ० ॥ ७ ॥ कंचनथालकपूरसुहाई ॥ आरतिकरत अंजनीमाई ॥ आर० ॥ ८ ॥ बांईभुजासेअसुरसंहा रे ॥ दहिनीभुजसुरसंतउधारे॥ आर० ॥ ९ ॥ लंक

मजारअसुरसबमारे ॥ राजारामजीकेकारजसारे ॥ आर० ॥ १० ॥ अंजनिपुत्रमहाबलदायक ॥ देवसंतकेसदासहायक ॥ आर० ॥ ११ ॥ लंकविध्वंसनसियारघुराई ॥ तुलसिदासकपिआरतीगाई ॥ १२ ॥ आर० ॥ जोहनुमानजीकीआरतिगावै ॥ बसि वैकुंठबहुरिनहिंआवै ॥ इतिआरतीहनुमानजीकीसमाप्त ॥

अथ आरतीजगन्नाथजीकी ।

आरतीश्रीजगन्नाथमंगलाकरी ॥ परसतचरणारविन्दआपदाहरी ॥ निरखतमुखारविन्दआपदाहरी ॥ कंचनमनधूपध्यानज्योतिजगमगी ॥ अगिकुण्डलाघिरतपावपावसाथरी ॥ आर० ॥ १ ॥ दमनद्वारेठाढ़ेरोहिणीखड़ी ॥ मार्कंडेश्वेतगंगाआनकभरी ॥ आर० ॥ २ ॥ गरुड़खंभसिंहपौरयात्राजुड़ी ॥ यात्राकीभीड़बहुतवेतकीघड़ी ॥ आर० ॥ ३ ॥ सुरनरमुनिद्वारेखड़ेब्रह्मावेदउचरी ॥ धन्यधन्यसूरश्यामआजकीघड़ी ॥ आर० ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ आरती रामचन्द्रजीकी ।

आरती कीजै राजा रामचंद्रजीकी ॥ हरि हरि दुष्ट दलन सीतापतिजीकी ॥ टेक ॥ पहिली आरति पुष्पकीमाला ॥ कालीनागनाथ लाये गोपाला ॥ ॥ १ ॥ दूसरी आरती देवकिनंदन ॥ भक्तउधारन कंसनिकंदन ॥ २ ॥ तिसरी आरती त्रिभुवन मोहै। रत्नसिंहासन सीतारामको सोहै ॥ ३ ॥ चौथी आरति चहुंयुग पूजा । देवनिरंजन स्वामी और न दूजा॥

पुनः आरती श्रीरामचन्द्रजीकी।

सखी आरती करी रसप्रेमभरी ॥ सिया रघुवर जी को शृंगारकरी ॥ टेक ॥ मणिमय थार सखिन कर राजैं बाती रवि शशिद्युति निदरी॥ १ ॥ बाजतहैं भेरी निसान दुंदुभी शंख झांझ करताल घरी ॥ २ ॥ नाचत गानकरतहैं सखि थेइ थेइ सुमन लाल मणि होत झरी॥ ३ ॥ रामचरण सिय राम रूप लखि आनँद उर रससिंधु भरी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ४ ॥ पंचमी आरति रामजीको भावै । रामजीको यश नामदेवजी गावै ॥ ५ ॥

आरती श्रीवेङ्कटेशजीकी ।

श्रीमच्छेषशैलवासं नीराजयेश्रीनिवासम् ॥

आतःस्वपदपद्मदासं ॥ नीरदभव्यदिव्यभासं ॥ नी०॥ विभ्राणंशतरविप्रतिभटं ॥ हरिखचित चामीकरमुकुटं॥ भृंगप्रभकुटिलालकजालं॥केसरमृगमदतिलकितभालं॥ भ्रूविभ्रमकृतकार्मुकयजनं॥इंदीवरदलविशालनयनं तिलकुसुमप्रतिमोत्तमनासं॥बिंबविडंबकृताधरवासंस्निग्धामलतल गंडमंडलं॥कर्णयुगार्पितमकरकुंडलम्॥शारदचंद्रमनोहरवदनं॥ कुंदसुन्दरप्रभाग्ररदनं ॥ स्वजनानुग्रहशुचिमंदहासं ॥ नीराजये श्रीनिवासं ॥ १ ॥

कंबुकंठमतिपीनस्कंधं ॥ दृगगोचरजत्रुस्थलबंधं ॥ चंदनचर्चितविशालबाहुं । अभयवरारिदरायुधबाहुं ॥ धृतकनकांगदकटक तोरणं । विदलतहरिकणप्रभनखरं ॥ श्रीवत्सश्रीहृदयकपाटं ॥ विद्युतिपञ्जरचित्रित

शाटं ॥ उरः पीठलुठदुरुतरहारं ॥ त्रिवलिबंधुरितकुं दिलजठरं ॥ पारिजातनवसुमनोमालं ॥ नाभिजातचतुराननबालं ॥ कटितटसुघटितपीतपटन्यासं ॥ नीराजये० ॥ २ ॥ सौरभलुभ्यद्भ्रमरकदंबं ॥ मणिशृंखलपरिरंभिनितंबं ॥ परमरुचिरपीवरोरुबंधं ॥ रम्यजानुमतिपेशलजंघं ॥ बलयकलितघनकनकतोरणं ॥ मंजुमंजुसिंजाननूपरं ॥ मृदुलपार्ष्णिसर जांगुलितरणम् ॥ दुस्तरतरभवसागतरणं विलसन्नखमणिपूर्णचंद्रिकं ॥ निरस्तवनितानादितंद्रिकं ॥ श्रीभूदेवीचमरवीजितं । नारदसुखसनकादिपूजितम् ॥ पंतविठ्ठलत्रासगणग्रासं ॥ नीराजयेश्रीनिवासम् ॥ ३ ॥

अथ रघुनाथजीकी आरती ।

आज़ बनी छबि भारी श्रीराघवजीकी ॥ टेक ॥ सहित जानकी रत्नसिंहासन राजत अवध विहारी ॥ १ ॥ रविशशि कोटिदेखि छबि लाजे तिलक पटल द्युतिकारी ॥ वदन मयंक ताप त्रयमोचन

मंद हासरसन्यारी ॥ २ ॥ वांये अंग जानकीजी सोहैं हनुमत आज्ञाकारी। गौरी श्याम सुन्दर तनु सोहैं चंद्रवदन उजियारी॥ ३ ॥ रत्नजटित आभूषण सोहैं मोतिनकी छवि न्यारी ॥ कीट मुकुट मकराकृत कुंडल औ वनमाल सोहारी ॥ ४ ॥ बाहु विशाल विभूषण सुन्दर करगहि सारँगधारी॥ कटिपर पीत वसनकी शोभा मोहत मदननिहारी ॥ ॥ ५ ॥ मुनिजन चरणसरोरुह सेवत ध्यान धरत त्रिपुरारी॥ चतुरसखी मिलिकरत आरती सज कंचनकीथारी ॥ ६ ॥ रामसेवक जय ध्वनि उचरत गावत पुर नर नारी॥ मातुकौशिलाकरैआरती तुलसिदास बलिहारी ॥ ७ ॥

इति आरतीसंग्रह समाप्त।

अथ रामजीकी गौरी।

जानकीजीवनकी बलि जैहौं॥टेक॥चितकहैरामसियापदपरिहरि अब न कहूँचलिजैहौं॥ १ ॥उपजी

उर प्रतीति प्रति सपने हरिपद विमुख न ह्वैहौं ॥
मनसमेत यह तनकेबासी यही सिखावनदैहों ॥२॥
श्रवणंन और कथा नहिं सुनिहौं रसना और न गैहौं ॥ रोकिहौंनयनविलोकत औरहिं शीश ईशपद नैहों ॥ ३ ॥ नातो नेह राम से करि सब नाता नेह निबैहों ॥ यह छरभार ताहिको तुलसी जगतकोदास कहैहों ॥ ४ ॥ इति ॥

राग गौरी।

अयोध्या राजत भूमिकन की ॥ टेक ॥ रंगभूमि राजतरघुनन्दन संगलिये सुता जनककी॥ रविशशि कोटि उदित हम देखें जोड़ी बनीहै जनककी ॥१॥
रघुबर लक्ष्मणभरत शत्रुहन सन्मुख हैंहनुमानबलीकी मातकौशिला करत आरतीजय जयश्रीरघुबरकी ॥२॥
ठुमुकि ठुमुकि महलनमें बिहरत झुमक झुमक नूपुर की ॥ कृपानिवाज कहांलगि बरणौं महिमा अवध नगरकी ॥ ३ ॥

राग गौरी।

बोलत मधुरी रघुवर बानी ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल छबि नहिं जात बखानी ॥ हम सरयू जल भरन जात रही बाव रामरस सानी॥१॥ बाणकमानभृकुटिके लोचन मारत तकि तकि तानी॥ घूंघुट मेरो छूटगयोहै लाजछोड़ि मुसुकानी ॥ २॥ अमरनारिनरमिले अवधके ये सब फिरतहैं सानी॥ लोग कुटुंब अब मोहिं नहिं भावै दशरथसुत रस सानी ॥३॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन दशरथ राजदुलारी ॥ राम सखी कौशलपुर जीवन रघुवर हाथ बिकानी ॥ ४ ॥

अथ देवीअष्टकप्रारम्भ।

ना कछु मन्त्र न यन्त्र ना अहै सुप्रार्थना ॥ ध्यान ज्ञान यज्ञ जाप साधना नहीं घना॥ नाअहै सुशक्तिभक्तिना तुम्हार थापना ॥ त्राहि मातु अम्ब

मोहिं नाहिं और कामना ॥ १ ॥ नाविधी न अर्थ धर्म ज्ञान ना सुवासना॥सर्व पूज्य पाप पद्म राखती कृपाघना ॥ होतमांकुपुत्र अत्रकापिना सुनी कुमां ॥ २ ॥ अत्र मां जगत्र बीच पुत्रअनेक आपके ॥ मैं न काजकारि देव पुत्र माय बापके ॥त्याग मोर नांहिं रुष्ट मातयों कथंजना ॥ होत मा कुपुत्र अत्रकापिना सुनी कुमां ॥ ३ ॥ कामना नकीन जासु मातु शक्ति पाइहौं ॥ द्रव्यनादियाकछूषमएड जासुलाइहौं लाज होत शोचि आप जो दयाकरी घना ॥होतमांकुपुत्र अत्र कापिना सुनी कुमां॥ ४ ॥ भस्म तो चिता कुलेप लेपते सदारहैं ॥ विकख का अहार हार सर्प्पको गले गहैं ॥ भूत प्रेत साथ विकराल जो जटा गहैं ॥ आपके पति भयेजगत्रके पती अहैं ॥ ५ ॥ ज्ञानना मृगाक्षि भोग मोहिमा सुहावता ॥ मोक्षना चहूं न वित्त चित्तको लुभावता ॥ प्रार्थना यही भवानि शम्भुरानि जप्यते ॥ बीतिजा

हु जन्म मोर हे महेशि जप्पते ॥६॥ दुःखके भये
करौं अराधना महेश्वरी ॥ नागनौ शठत्व जौ भिवा
तयान ह्वै खरी ॥ बालभूखपाइके करै पुकार मातुमां॥
होतमा कुपुत्र अत्र कापिनसुनी कुमा ॥ ७ ॥ अत्र
क्या विचित्र अम्ब जो करौ कृपा घनी॥ जो करै
अनेकदोष बालना तजैजनी ॥ पातकी कुपुत्र दोष
आशुहीक्षमे खुमां। होतमां कुपुत्र कापिना सुनी
कुमा ॥८॥ देवि देवि अप्पराध भंजनं स्तनं महत् ॥
कीन्ह अष्टपद्य देवि प्रार्थना भरीलसत् ॥जोपढ़ै सुनै
सुभक्ति मुक्तिसोलहै वृहत् ॥ यों विचारिके कृपा
विहारि नम्रह्वैकहत् ॥ ९ ॥

इति देवीअष्टकसमाप्तम्।

अथ रुद्राष्टकप्रारम्भः।

छन्दभुजंगप्रयात ॥ नमामीशमीशाननिर्वाणरूपम्॥वि
भुंव्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपम्॥अजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीह
म्॥चिदाकारमाकाशवासंभजेहम्॥१॥निराकारमोकारमूलं

तुरीयम्। गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशम्। करालंमहा
कालकालंकृपालम्॥ गुणागारसंसारपारंनतोहम्॥२॥
तुषाराद्रिसंकाशगौरंगभीरम्॥ मनोभूतकोटिप्रभाश्री
शरीरम्॥ स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा॥लसद्भा
लबालेंदुकंठे भुजंगा॥ ३॥ चलत्कुंडलंभ्रूसुनेत्रंवि
शालम्॥ प्रसन्नाननंनीलकंठंदयालुम्॥ मृगाधीश
चर्माम्बरंमुण्डमालम्॥ प्रियंशंकरंसर्वनाथंभजामि
॥ ४॥ प्रचंडंप्रकृष्टंप्रगल्भंनरेशम्॥ अखंडंअजं
भानुकोटिप्रकाशम्॥ त्रिशूलारिनिर्मूलनंशूलपाणिं॥
भजेहंभवानीपतिंभावगम्यम्॥ ५॥ कलातीतकल्या
णकल्पांतकारिम्॥ सदासज्जनानंददातापुरारि
म्॥ चिदानंदसंदोहमोहापहारिंप्रसीदप्रसीदप्रभोम
न्मथारिन्॥ ६॥ नयावदुमानाथपादारविंदम्॥
भजंतीहलोकेपरंवानराणाम्॥ नतावत्सुखंशांतिसंता
पनाशम्॥ प्रसीदप्रभो सर्वभूताधिवासम्॥ ७॥
नजानामियोगंजपंनैवपूजाम्॥ नतोऽहंसदासर्वदा

शंभुतुभ्यम् ॥ जराजन्मदुःखौघतातप्यमानम् ॥ प्रभो पाहिआपन्नमामीशशंभो ॥८॥ श्लोक ॥ रुद्राष्टक मिदंप्रोक्तं विप्रेणहरतुष्टये ॥ येपठंतिनराभक्त्यातेषांशंभुःप्रसीदति ॥ ६ ॥

इतिरुद्राष्टकंसमाप्तम् ॥

पेटरत्न—रोला छन्द।

तोले पांच सोंठ अजमोदा तोला तीन मँगावै। अजवायन दो तोला लेकै तोलानमक रलावै ॥ तोला चार पीपली कूटै हरडैं पन्द्रा तोला॥कूट छान चूरन जो फांके कटै पेटका गोला॥ उदरामय गड गुड अरु पीड़ा विडको तुर्त घटावै॥ कृष्ण बिहारी नित जो खावै निर्मल काया पावै ॥ इति॥

अरणीादिकशूलनिवारण।

रविकापान सोमकोदर्पन, मंगलको गुड़ करिये अर्पन॥ बुद्धैधनियां, वीफैजीर। सुक्रकहै मोहिं दही की पीर॥ कहत शनैश्चर अदरख पावों। सुख

सम्पति निरोगघरलावौं ॥ नामाने भरणी दिकशूल ॥
कहैं व्यास सब चकनाचूर ॥ इति ॥

स्तुति दयालु देवीजीकी—छंद

जय जय दयालुदेवी माता जयजयदयालुदेवी माता ॥ अष्टसिद्धि नवनिधिकी दाता अखिल लोकविख्याता ॥ जग भरनी मन आनँद करनी हरनी विपति वरूथानी ॥ मध्य भूमि शुठिठाम वदराका ग्राम विलासिनी महरानी ॥ उत्तरदिशा बसै बहुवस्तीअंत अनंदीहै माता ॥ अष्टसिद्धि नव निधिकी दाता अखिल लोक विख्याता ॥ १ ॥ पास हि स्वच्छसरोवर शोभित धनी वाग छवि आलीहै ॥ वना शिवाला महादेवका रक्षा आप सम्हाली है ॥ पूरवपुरनिर्म्मल वस्तीहै कान्यकुब्जबालाके शुक्क ॥ पूजाकरते माता तुमरीतेहते पूजत हैं सब मुक्क ॥ जगजननीश्रीमातुकालिका राजतपूरबख्याता ॥ अष्टसिद्धिनवनिधिकीदाता अखिल लोक विख्याता

॥ २ ॥ जगतबंद आनँद कंद रघुनंद धाम अति स्वच्छ बना। पूजत हित नर नारि सुचित चित लहत मनोरथ चित्त ठना॥ कृष्णचंद्र आनंदकंद बलभद्र सुभद्राईश्वररूप। परमपवित्र पुरातन प्रति भा श्याम अङ्ग नहीं जगत्तद्रूप। वंशीधरके दर्श न करते करते सुख है अधिकाता। अष्टसिद्धि नवनिधिके दाता अखिल लोक विख्याता॥ ३ ॥ जह्नुसुता गंगाकी धारा बहती दक्षिण द्वारेहे॥ भक्तवंतकी कौन कहै अधमोंको भी उद्धारे है॥ विमलतड़ाग बाग सेवाला है हरदेव देव प्रतिपाला कृष्णविहारीशुक्लपर कृपाकरते आपदयाला॥ पश्चिम सुदर्शनी जग जननी इकलेही करती त्राता॥ अष्टसिद्धि नवनिधिकी दाता अखिल लोक वि-ख्याता॥ ४ ॥ इति॥

हिंडोललीला।

सघन बन झूलैं दोउ सुकुमार॥ टेक॥ हिय हर-

षत छवि निरख परस्पर छिनछिन वाढ़त प्यार॥
कबहुं मुदित मन तान लेत मिल होत सखि वलि-
हार॥ नारायणद्रुम वेलि सुहावनि हरो कियोसृंगार॥

होरीलीला।

डगर मोरी छांडो श्याम विंध जाओगे नयननमें॥
भूल जाओगो सब चतुराई लाला मारुंगी सैनन
में॥ जो तेरे मनमें होरी खेलनकी तो लेचल कुंजन
में॥ चोवाचंदन और अर्गजा छिरकूं फागुनमें॥
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि लागी तन मनमें॥

अथश्रीयुगलविहारलावनीप्रारंभ

आधिरातकेविषेकृष्ण राधाकेभवनको जाते भये॥ कर
सरोजसे जाके द्वारके पट कपाट खटकातेभये॥ टेर॥
चौंक उठी वृषभानुनंदिनी कौन मेरे द्वारे आया॥ये
नाम बताओआकर मुझकोनीदसे काहेजगाया॥ पर
स्थानमें धंसे आन तुम जरा न मन दहसतलाया॥

फिरो दिवान दिवाना होकर किसीका भरमाया ॥
मधुर वचन सुनकर राधेके श्रीकृष्ण समझातेभये ॥
कर० ॥ १ ॥ माधो नामहै मेरा जगतमें तेरे पास
आयाहूं अली॥ कहै राधिका शरदमें ऋतु बसंत नहिं
लागै भली ॥ऋतु वसंत नहिं जान प्रिया मैं चक्री
हूं तू जान अली॥ चक्री होतो यहांसे सरको कु-
लालकी तुम पूछा गली ॥ धरणीधर कहतेहैं मुझ
को वेद नीतिमें गाते भये ॥ कर० ॥२॥ जानगई
तुम शेषनागहो सहस्रशीश तनकेकारा॥ शेषनहींमैं
प्रियाहूं सर्पनको मारन हारा ॥शेषनहीं तो गरुड़
होगयो विनताकी करो प्रतिपाला ॥ प्रियाहरिहूं
मेराहैसारे जगतमें उजियाला ॥ सूर्य होयकर स्वर्ग
छोड़के मेरे भवन क्यूं आतेभये ॥ कर० ॥ ३ ॥
कृष्णाकृष्णाको कृष्णचन्द्रने तीन बेर उच्चार किया॥
उठिराधिकादियेपट खोल गलेका हार किया॥ सू-
लचंद्रपैं कृपाकरोरी जिसने ये बीहार किया॥ भक्त

जनोका हरीने छिनमें वेड़ा पार किया॥तुर्रोकोसुनके जवाव कलँगीके हंसी उड़ जाते भये॥ क० ॥ ४ ॥

इति श्रीयुगलविहारलावनीसमाप्त ।

अथ मनिहारिनलीला-लावनी ।

श्रीकृष्णनन्दजीकेनन्दननेधरावेपमनिहारिनका ॥ आपहरीजहंगयेतहांपरवहुतझुंडव्रजनारिनका ॥टेक॥ पहरजनानावेपहरीनेरचिरचिकैशृङ्गारकरो ॥ हँसुली औरहवेलगलेविचझलझलझलकतपनाहरो ॥ ठटगुजरातीसजाघांघरा ओढ़नदछिनीचीरखरो ॥ रविशशिकोटिवदनकीशोभाऐसाहरिनेरूपधरो॥कुचा बनायकैआटीचोलीऔरकुरताफुलक्यारिनका॥ आ- प० ॥ १ ॥ श्रीकृष्णजीफिरैंपूंछतेकोइचुरियापहनोगी खरी ॥कालीपीलीजरदजंगालीसुरखसोसनियाऔर हरी ॥ एकसखीयूंबढ़करवोलीअरीआवतूमनिहारी॥ चुड़ियामोतीचूरकडावन्दल्याईतोपहनाज्यारी॥ मुख मांगोलवोदामहमेंकूंमुठावतारीमोलभारिनका॥आप०

॥ २ ॥ श्रीकृष्णपहरानेलगेपहरैराधासहेलनी ॥ करछूतेतनुमारछिपैनहिंलखगइराधापहेलनी ॥ राधा मुखमुसकायकहैफेरपूछोरीसखियांअकेलनी॥फिरीजा- यचौफेरकृष्णकेजितनीथीं सबनवेलनी॥ हरलीयाइन मानकियाअपमानसखीसबसारिनका ॥ आप० ॥ ॥ ३ ॥ अनेकछलबलकियेकृष्णानेसबसखियांछलने खातर ॥ कहंलगकोईसिफतकरैंगेतुमकन्नगिरिक हतेचातुर ॥ लछमनब्राह्मणधर्मांकहतेबैठोसायरमत होआतुर।जसूलालकेचंगकेऊपरनिरतकरै पंखायातुर ॥ लहैगुणीजैरामभारतीचङ्गपरपुरी तारलका ॥ आप० ॥४॥ इतिमनिहारीनलीलासमाप्त॥

पावस विरहिनी ।

कवित्त-आयो पुनि पावस अमावस निशा भोदि न छिन विन प्यारे केहिभांतिन बिताइहौं । किर चै करेजाहूकी कोकिलैं करनलागीं मोर शोर सुनि किमि चित्तठहराइहौं। वेदरदी बैरी वद बदरा बड़े

ई बरे नितप्रति तासों कहो हाय प्राणकैसेकै बचाइहौं ॥
परत न एको पल विन कृष्णप्यारीकल हाय काके गरे लागि तपनि मिटाइहौं ॥ १२ ॥

विरहिनी विलाप ।

कैधों वहि देशमें घुमड़िघन घेरे नाहिं कैधों वहि देश दामिनीहू नाहिं दमकै ॥ कैधों वहि देशमें न बरसत बारिदहूँ रामपरतापर कैधों झिल्लिहू न झम कै । कैधों वहिदेशमें न वहति बयारकहूँ मंदमंद शीतल सुगन्ध भरी रमकै । कैधों वहि देशमें पपीहराहू पीउ पीउ टेर दै दै पीउको चितावै ना उघ मकै ॥ १ ॥ इति ॥

पुरुषोपकारार्थ पशुबुद्धि ।

जयकरी छन्द ।

सिंह, बकुल, कुक्कुट, अरु काग । श्वान गर्दभो बुद्धिविभाग ॥ क्रमशः गुण इनके लैलेहु ॥ गुणश्रा

ही अवगुण तजिदेहु ॥ यकगुणहै उत्तम वनराज ॥ सब विधि सारत आपन काज ॥ प्रबल शत्रुपर मारत धावा ॥ करन योगपर विलंब न लावा ॥ बकुला में उत्तम गुण एक ॥ सीखहु सज्जन तजि अविवेक ॥ सबइन्द्रिनकर संयम करो ॥ देश काल बल हिरदय धरो । बकुल समान काजको साधो ॥ मीन मिलनहित चुप्पी बाँधो ॥ कुक्कुट चारि बात शिरताजा ॥ उचित समयजागतरणगाजा ॥ बन्धुन भाग देत सुख पावै ॥ आप आक्रमण करि २ खावै ॥ कागासे सीखहु गुणपंच ॥ छिपकर मैथुन संग्रह रंच ॥ सावधान निशि वासर रहे ॥ पर विश्वास क्षणक नहिं चहै ॥ कूकुर षटगुण माहिं प्रधाना ॥ स्वामिभक्त शूरता निदाना ॥ भोजन शक्ति अधिक तनु माहीं ॥ स्वल्पहु मिलि संतुष्ट रहाहीं ॥ गाढ़ीनिद्रा झटपट जागत ॥ मूत्र पुरीष मलिन भुव त्यागत ॥ तीनि बात गर्दभसे ले-

हू ॥ अतिश्रमपरश्री बोझ सनेहू ॥ शीत उष्ण पर दृष्टि न राखत ॥ अति संतुष्ट विचर वन रोजत ॥ दोहा—कृष्णविहारी शुक्लकह, येगुण बीस प्रधान ॥ येहीनिश्चय उरधरे, सो विजयी जगजान ॥ इति ॥

चौमासा ।

विजयी छन्द लावनी ।

सखिआयो मास चौमास दहै नित छाती ॥ गयो जबसे पिय परदेश लिखी ना पाती ॥ लागो है मास अषाढ़ घटा घन छाई ॥ विजुली चमकै चहुँ ओर जिया डरपाई ॥ सखि ऐसे निठुरको जरा दर्द ना आई ॥ लव दिलसे दिया उतार सुरति विसराई ॥ निशिदिन ताकों मैं राह रही ना जाती । गयो जबसे पिय परदेश लिखी ना पाती । सावनमें सखी न सजन हमारा आया ॥ नाजानौं

किस सवतिनने है बिलमाया ॥ शिरपरमेरे त्योहार सनूनो आया। सखि सबके पिय घर आये बलम कहँ छाया ॥ सब सखीं खुसी और ऐशमें सावन गाती । गयो जबसे पिय परदेश लिखी ना पाती॥ भादोंमें बरसता नीर पीर तनु भारी ॥ बिन पिया दुःख हुआ न जाय सम्हारी ॥ तकते निर्मोही राह हुआ जी आरी। सुन पपिहाके वैननैन जलजारी ॥ जो होत पता मालूम बांह गहि लाती । गयो जबसे पिय परदेश लिखी ना पाती ॥ सखि क्वार कन्तने आय दरश मोहिं दीन्हा॥ जो लगा हिज्रमें तीर पीर हरि लीन्हा ॥ भरके मोतियन का थार निछावर कीन्हा । नरपति तन मन धन वारि उसीपर दीन्हा॥ कह कृष्णबिहारी तन करी मन भाती। गयो जबसे पिया परदेश लिखी ना पाती ॥ इति ॥

—:*:—

वियोगमें संयोग।

स०-आलम लाल विदेशगये दुख ऐसी जरी हम काम कराकै ॥ जे चुरियां कर आवत नाहिंरी ते चुरियां गई ठौर फराकै ॥ आलमलाल विसूरतबाल मबोलतहीपियद्वार धराकै ॥ कंचुकीमें कुचयों हुलसैं कि गये बन्द टूटि तड़ाक तड़ाकैं ॥१॥ इति

गङ्गानाममहिमा।

भ०—जो जन गङ्गा गंगा कहै । जनम जनमके कोटिदुष्कृत सब क्षणही मांझ दहै ॥ अस्नान करत सो मन वांछित फल तत्क्षण तुरत लहै ॥ ब्रजपति की प्यारी संगमते बहु सुख देनचहै ॥ १ ॥

सखी बनविहार।

स०यमुना तट कुंजनबीन रही सखियां फूल फूलनकी कलियां ॥ यक गावत ताल बजावत है क-

रतीं मिलके रङ्गकी रलियां ॥ मृगनैनीजुआयअनेक जुरीं छबि छाय रहीं ब्रजकी गलियां ॥ हरिचंद तहां मनमोहनजू सखि या बन आय लख्यो अलियां ॥इति॥

जलविहारलीला ।

कवित्त ॥ सोरहसहस्र ब्रजबाम श्याम श्यामा रस रास बिलसाने रससाने अरसाने हैं ॥ अति श्रम मानि आनि यमुना नहाने शत शशि शोभा हानि पंच वाण मान भाने हैं॥ हरिकै मिलि छैमही छबीले जल छलकनि हलकनि ललकि सुमोदमन माने हैं॥ कंचनके कंज पुंज मानो अलि रंजनको अंजलिन मंजुकरंकदंवरसाने हैं ॥ इति ॥

बनविहारलीला ।

नारि नारि बेष पिय प्यारी जात मारगमेंछाँडिकै कुंजनकुंज सदन सिधाये हैं ॥ आवत निहारि सासु हेते चन्द्रावलीको यों पंथहि बचाइके बराय नहराये हैं॥

पायकै लखाव भाव चतुर सयानी सखी दांव लेने चितमें विचारि आंख पाये हैं ॥ को है नोखी नारि देख्यो घूंघुट उघारि दोउ भौंहन चलाय मुसकाय सकुचाये हैं ॥ इति ॥

लक्ष्मीनारायणकी ध्वनि।

भजश्रीमल्लक्ष्मीनारायण भजश्रीमल्लक्ष्मीनारायण॥ अखिल लोक पूरण विख्याता॥ भक्त सुखद दनुजन कुलघाता विधि हर वंदित परमप्रतापा ॥ करुणामय श्रीनारायण ॥ भज० ॥ जात अनेक अधम बरुता रे तारन तरन कहत हैं सारे ॥ कृष्ण विहारीशुक्ल उचारे त्राहि त्राहि श्रीनारायण ॥ भज श्रीमल्लक्ष्मी नारायण० ॥ इति ॥

अथ चंद्रप्रस्तावलीला।

श्रीः ॥ चौपाई ॥ शोभामेरेहरिपैसोहै । मैंबलि बलिपटतरकोकोहै॥ मेरोश्याममनोहरजीवन ॥ बिहैं

सिश्यामलागमयपीवन ॥ ठाढीअजिरयशोदारानी ॥
गोदीलियेश्यामसुखदानी ॥ उदयभयोशशिशरदसुहा
वन ॥ लगीतातकोमातदिखावन ॥ देखहुश्याम चंद्र यह
आवत ॥ अतिशीतलदृगतापनशावत ॥ चितैरहेहरिइकट
कताही ॥ करतेनिकटबुलावतवाही ॥ मैयावहमीठोकैखा
रो ॥ देखतलगतमोहिंअतिप्यारो ॥ देहिमँगायनिकटमैंले
हौं ॥ लागीभूखचंदयैखैहौं ॥ देहिवेगमैंबहुतभुखानो ॥
मांगतहीमांगतविरुझानो ॥ यशुमतिहँसतिकरति
पछितायो ॥ काहेकोमैंचंददिखायो ॥ रोवतहैंहरिवि
नहीं जाने ॥ अबभोंकैसेकरिकैमाने ॥ विविधभाँति
करिहरिहिभुलावै ॥ आनबतावैआनदिखावै ॥ दोहा ॥
कहतियशोदाकौनविधि, समझाऊंअब कान्ह ॥ भूलि
दिखायों चंद्रमैं, ताहिकहतहरिखान ॥ सोरठा ॥ अन
होनीक्योंहोय, तातसुनीयहबातकहुँ ॥ याहिखात
नहिंकोय, चंद्रखिलौनाजगतको ॥ चौपाई ॥ यहै
देतनितमाखनमोको ॥ क्षणक्षणतातदेतसोतोको ॥

जोतुमश्यामचंद्रकोखैहो॥बहुरीफिरमाखनकहँपैहो॥दे-
खतरहौखिलौनाचंदा ॥ रारिनकीजैवालगोविंदा ॥
मधुमेवापकवानमिठाई ॥ जोभावैसोलेहु कन्हाई ॥
पालागौंहठअधिकनकीजै।मैंबलिरिसहीरिसतनुछीजै।
खसिखसिकान्हपरतकनियांते ।दैशशिकहननंदरनि
यांते ॥ यशुमतिकहतिकहाधौंकीजै ॥ मांगतचंद्रकहां
तेदीजै ॥तबयसुमतिइकजलपुटलीनो।करमेंलैतेहिऊं
चोकीनो ॥ ऐसेकहिश्यामहिंबहकावै ॥ आवचन्द
तोहिंलालबुलावै ॥ याहीमेंतू तनुधरिआवै॥तोहिं
देखिलालनसुखपावै ॥हाथलियेतोहिंखेलतरहिहैं ॥
नेकनहींधरणीपरधरिहैं ॥जलपुटआनिधरणिपररा-
ख्यो॥गहिआन्यो शशिजननीभाख्यो॥दोहा॥लेहिला
लयहचन्दमैं, लीनोनिकटबुलाय ॥ रोवैइतने के
लिये, तेरीश्यामबलाय ॥ सोरठा ॥ देखहुश्यामनि
हारि, याभाजनमेंनिकटशशि ॥ करोइतीतुमआरि,
जाकारणसुन्दरसुवन॥ चौपाई ॥ ताहिंदेखिमुसक्या

यमनोहर॥बारबारडारतदोऊकर॥चन्दापकरतजलके
माही॥आवतकछूहाथमेंनाहीं॥ तबजलपुटकेनीचे
देखै॥ तहाँ चन्द्रप्रतिबिंबनपेखै॥देखत हँसींसकल
ब्रजनारी॥ मगन बाल छबि लखि महतारी॥
तबहिं श्यामकछु हँसि मुसकाने॥ बहुरे माता
सोंबिरुझाने॥ल्योंगोरीमाचंदाल्योंगो॥ वाहीअप
नेहाथगहौंगो॥ यहतौकलमलातजलमाहीं॥ मेरेकर
मेंआवतनाहीं॥ बाहीरनिकटदेखियतवाही॥ कहैतो
मैंगहिल्यावौंताही॥ कहतियशोमतिसुनहुकन्हाई॥
तुवमुखलखिसकुचतउडराई॥तुमतेंहिपकरनचहतगोपा
ला॥ तातेशशिभजिगयोपताला॥ अबतुमतेंशशि
डरपतभारी॥कहतअहोहरिशरणतुम्हारी॥ बिरुझा
नेसोयेदैतारी॥ लियलगायछतियांमहतारी॥दोहा॥
लैपौढायेसेजपर, हर्षियशोमतिमाय॥अतिबिरुझाने
आजहरि, यहकहिकहिपछिताय॥सोरठा॥ करसों
ठोंकिसुवाय, मधुरे सुरगावतकछुक॥ उठिबैठेअतुराय
अटपटाय हरिचौंकिकै॥इतिश्रीचंद्रप्रस्तावलीलासमाप्त।

सामुद्रिकलक्षणकथन।

दोहा।

हस्त पहुँच अन्तर विषे, मीनरेख जो देख॥ तोप्रा-
णी ज्ञानी धनी, पुत्रवंत शुभवेष॥ १ ॥ तुला ग्राम
अरु वज्र जो, करमध्ये दरशाहिं॥ सुखी होय वाणि-
ज्यमें, यामें संसय नाहिं ॥२॥ पद्म चाप करबाल
कर, अष्टकोण दरशाय॥ नरनारी दुख पावहीं, जीव
न सफल कराय ॥ ३ ॥ शंख चक्रध्वज नासिका
जो करमध्ये होहिं ॥ सो पण्डित जानहु अवशि,
धनीवंत सो होहि॥४॥ कर मध्ये तिरशूलजो, परै
भाग्यवश आय ॥राज्य चिह्न यह प्रगट है, निश्चय
राज्य कराय ॥ ५ ॥ अंकुश कुंडल चक्र जो, पाणि
मध्य परिजायँ ॥ निश्चय भोगै राज्य सुख, वचन अ-
न्यथा नायँ ॥६॥ गिरिकंकण नरमुंड सम, पाणि
मध्य दरशाय ॥ राज्य मंत्रिकर चिह्न है, निश्चय
सुख सरसाय ॥७॥ सूर्य चन्द्र गज अश्व गृह, ल-

ता नेत्रत्रयकोन ॥ एकहु लक्षण करपरै, सुखी होय नर तौन ॥८॥ (छप्पयछंद) चक्रएकवाचाल द्वितिय गुणवंत कहावै। तीन चक्र व्यापार माहिं लक्ष्मी नर पावै ॥ चार चक्रनिर्द्धनी पंचसर्वांग विलासा। छठा चक्र रसकाम सप्त बहुसुखकीआशा ॥ अष्टकचक्रत नुरोग नवम नृपती कहलावै। परैचक्र दशहस्तसिद्ध पदी सो पावै ॥ कृष्ण विहारी शुक्ल कह्यो शिवने जो गाया। नरका दहिनाहाथनारिबायां बतलाया॥

इति सामुद्रिकलक्षण।

स्तुति मुंबादेवीजीकी।

लावनी।

जय जय जगदम्बे देसुख जय बम्बे बंबा माई ॥ आदिशक्ति उद्भव पालन लय कारनि जानि शरणै आई ॥ रक्तबीज महिषासुर मर्दिनि शुम्भ दैत्यमारनि हारी। महिरावणकोकियो निपाता गोद्विज भक्तन हि

तकारी ॥ वरदायिनि वर वेद वखांनी सिंहवाहिनी जग
गाई ॥ जयजय जगदम्बे देसुख अम्बे जय वम्बे वंबा
माई॥ १ ॥ हिन्दुस्तान दत्तिणी सीमा वारिधितटवि-
श्रामलिये॥ योजन वेद वनाय वंबई अजवशहर आबाद
किये॥ त्रेतामेंजसरहीअयोध्या और द्वारका द्वापरमें ॥
कलियुग माहिं वंबई तैसी जाकी समतानहिं भूमें ॥
सप्तद्वीपकी सम्पतिछाई ऋद्धि सिद्धिकीअधिकाई
जय जय जगदम्बे देसुख अम्बे जय वम्बे वंबामाई॥२॥
सुंदरधवल धाम नभचुंवत ध्वजपताकशोभान्धारी।
वीथी हाट वजार चौपथा परमपुष्ट पविकी द्वारी॥
बन उपवन सब भाँति सुहावन मनभावन सुख
सरसाई। गलिन२बाजत वर वाजा अतरअरगजा
बूछाई॥ द्वीप द्वीपके वसैं आदमी महिमा तीनलोक
गाई ॥ जय जय जगदम्बे देसुख अम्बे जय वंबे वंबा
माई ॥ ३ ॥ मैं भी बड़ी आशकर आया मुंवापुरमां
की नगरी॥ रत्न तख्त शोभित जगमाता गमन करै

नगरी सगरी ॥ भाव भक्ति रंचक नहिं जियमें पै हिय
की जानन्हारी॥करहु अनुग्रह अवशिदासपरमणता
रति मेरी वारी ॥ कृष्णविहारी शक्ल बदरका वासी
सेभी लखलाई ॥ जय जय जगदम्बे देखुख अम्बे जय
वम्वे वंबामाई ॥ ९ ॥

इति स्तुति समाप्त ।

—:*:—

पूर्व दिशाकेसुख ।

पुरुषउवाच॥दोहा-रूपविशेषविशेषधन, भूमि सुहा-
वनदेश॥जायकरौंयातेअबै, पूरबकोपरदेश ॥१॥ क-
वित्त ॥ ताफतारुवाफतामुसज्जरश्रीसाफमखमलरूप
केसीपटनानासुखदाइये॥सरसकृपाणतरकसरुकमान
वाण ज़रकसीचीरहीराजहाँजाइलाइये ॥ सुक
विसुवालफुलवारी धामधामअंब श्रीफल कडंबपौ
डापाननकोखाइये ॥ वडेहोतकेशमिलैंतंदुअशेय
प्यारीपूरबकेदेशमेंविशेषसुखपाइये ॥ १ ॥

पूर्वदिशाकेदुःख-स्त्रीउवाच-खंडन

सोरठ—लगैंचोरठगवाइ, पेटचलैपानीलगैं ॥ कीजै कबहुंनजाइ, पूरवकेपरदेशको ॥ १ ॥ कवित्त ॥ पानीलगिजात वहु फूलि जात गातपुनिपेटचलिजात कछूखाइजात जबहूँ ॥ जादूकरिकैसँभोगसुखकाज पशु पक्षीकरि राखैनारिनरकोअबहूँ ॥ ब्राह्मणवणि कमीनमांसमधुखाततलहरदलगायन्हातनारीनरसबहूँ। फांसीदेकैडालमारिडारै ठगजालयाते जैये न गुपाल दिशिपूरबकी कबहूँ ॥ १ ॥

दक्षिणदिशाकेसुख।

पुरुषउवाच ॥ दोहा-दयामानधनमानपुनि, लोग बड़ेगुणमान ॥ यातेदक्षिणदेशको, करियेसदापयान ॥ १ ॥ कवित्त ॥ चीराचीरसालूसेलासमलाबहारदार जरकसीकाम जहांहोतनानाभांतिहैं ॥ सुकविगुपाल लालरतनप्रवालमणि माणिकविशालमोतीमहँगीसु

ज़ातिहैं ॥ मेवाऔमिठाईफलफूलमूलमूलगजतरुणी अनूपरूफ़लकलगातहैं ॥ देखेवनैबातसदाशोभास रसात प्यारीदक्षिणदिशाकेगुणकहेनहींजातहैं ॥१॥

दक्षिणदिशाकेदुःखस्त्री उवाच-

खंडन

दोहा-दक्षिणपियसुनिकानदे, दक्षिणदक्षिण जात ॥ लक्षणलक्षणगक्षिके, लक्षणहीलगिजात ॥ १ ॥ कवित्त ॥ घोटूलोंउघारीनिरलज्जरहैंनारी मासमदिराअहारीद्विजहोईअनाचारीहै ॥ सुकविगुपा लप्याजलहसुनखातवहु लूटैंठगचोरप्रजा रहैनसुखारी है ॥ लोगनिरहेतमानिजेकोव्याहविबेटी देत रीतिविप रीतिसवदेखतमेंन्यारीहै॥ बढ़तअगारीहोतिबढ़वड़ी रवारीदिशिदक्षिणमझारीजातहोतदुःखभारीहै ॥

पश्चिमदिशाके सुख।

पुरुषउवाच ॥ दोहा-राखे दक्षिणतें अबै, जोदि शिपश्चिमजात ॥ ताकेअबसुनिलीजये, प्यारी सुखअ

बंदात ॥ कवित्त ॥ लोगदयावानतियसुंदरसुजान मीठी बोलनिनिदाननीरलगैनतहांकहूँ ॥ नृपमबि शालऊंचेपुलकारखस्नतहंविविधप्रकारनहैं सूतकेजहांकं हूं ॥ सुकविगुपालतातेतरल तुरंगमिलैंमधुरमनीरभू खलगतिजहांकहूं ॥ पारनहींलहूंजियशोचतहीशोच प्यारी पश्चिमदिशाकेसुखवरणिकहाकहूं ॥ १ ॥

पश्चिमदिशाकेदुःखखीउवाच-

खंडन।

दोहा—मरतरैनिदिनवारिविन, भटकिभटकिनर नारि ॥ करियेनहींपयानपिय, पश्चिमश्रोरनिहारि ॥ १ ॥ कवित्त ॥ धूरिनकेथलसाबेंदोलकेढमक्के जलतरुविनथलतहांशोभानहींपामेंहैं ॥ चनारुगे हूँरसगोरसनफूलफल रोटबाजरीकोखायदिवसविता मैंहै ॥ रहतमलीनधर्मकर्मकरिहीनलोग पहरतपीन पटऊननकेजामें हैं ॥ सुकविगुपालकछुकहतनश्रा वेजातजेतेदुखहोतसदापश्चिमदिशामेंहै ॥

उत्तरदिशाकेसुख।

पुरुषउवाच॥दो०॥ हरिद्वारतेकैपरशि वदरी नाथ केदार ॥ होतकृतारथजीवयह, उत्तरखंड मझार ॥ १ ॥ कवित्त ॥ लाइचीलवंगदाखदाडिमवदामसे नसालमअंगूरपिस्तारवैंयेउठिभोरको॥कसतूरीकेसरिजाविन्नीजायफलहालचीनीदेवदारुकीसुगंधिचहुंओर को ॥ सालऔदुसालधुस्सा नानापसमीनाओढ़ी देखतरहतआछीतियनकी मोरको ॥ कहतगुपाल प्यारीसुनियेनिहोरमोपै क्योनहींजातसुखउत्तरकी ओरको ॥ १ ॥

उत्तरदिशाकेदुःख-स्त्रीउवाच

खंडन।

दोहा-सदाशीतभयभीतनर, व्याघ्रसिंहवृषघोर॥की जैनहींपयानपिय, उत्तरदिशिकीओर ॥ १ ॥ कवित्त ॥ विकटपहारझारघनेसिंहस्यारनिरवाहनहींहोत

रथबहलकोजामेंहैं ॥ गिलटीरुगिल्लरअनेकरोगहोत जहांचारहूबरणजीवहिंसकहरामें है ॥ सुकविगुपाल सदासीतभयभीतलोग वरफकेमारे दुरेरहतगुफामेंहै ॥ राहमेंनगामेंचाल्योजातननिशामें यातेबहुदुखपावैंजा तउत्तरदिशामेंहै ॥ १ ॥

हुलासके सुख ।



दोहा—बढ़ैज्योतिनैननसदा, चलतसाफसबश्वास ॥
इतनेसुखनितहोतहैं, सूंघतजबहुलास ॥ १ ॥

कवित्त ॥ साफरहैमगजसरेखमानआवैपास ज्योतिबढ़िजातिनैनहोतपरकासके ॥ सुकविगुपालक भूशीतनसतावै आइ जाको लेतदेतलोगराजीरहैं पासके ॥ अमलनआवेकोईरोगनघटावैवायढिगन हींआवेदामथोरेलगैंतासके ॥ रुकतनश्वासजातरहै कफखाँसएते होतहैहुलास सदासूँघतहुलासके ॥१॥

लोभके लक्षण।

दोहा—लोभहि उपजत क्रोधहै, द्वेष ईर्षा मान।
मत्सर लम्पट तस्करी, लोभहिसेपहिचान॥

प्रीतीवर्णन।

प्रीतितो ऐसी कीजिये, जानि परै कछुनाय।
ज्यों मेंहदीके पातमें, लाला लखी न जाय॥

मूर्खता।

मुईचामसों चामकटोवैं भुइंपरि सँकरे सोवैं।
कहैं घाघ ये तीनों भकुवा, उढ़रिजायं फिरिरोवैं॥

नीती।

मनुषजन्महै ऊपजा, तीनि भांतिको योग।
द्रव्योपार्जन हरिभजन, अरु भामिनिकोभोग॥

कलियुगवर्णन—कवित्त।

मतिभईभ्रष्टपापछायगयोसृष्टिमांझ घरकीनारिछोड़िपर
त्रियधरनेलगे॥ धनवारादेखिगुरुचेलाकरनेलगे

गेभ्कगरिभ्कगरिवापबेटालरनेलगे ॥ धनराजगारको
घटाईभईजगमांभ्क विनाअन्ननरसनभूखेमरनेलगे ॥
कहतगुपालवरपै न मेघजालायातेकलिकीकुनालते
अकालपरनेलगे ॥ १ ॥ इति ॥

गर्भिणी धर्म।

पुंसवन कर्म होनेके उपरान्त गर्भिणीको ऊंचे नीचे स्थानपर चढ़ना, उतरना, भागकर चलना, नदी, तैरना, गाड़ीपर, वैठकर चलना, तीक्ष्ण अर्थात् गरम औषध नीरस क्षार आदि खाना, मैथुनकराना, भार उठाना ये सर्व कर्म नहीं करना चाहिये किंतु सावधानीसे रहै, जिस्से गर्भकी रक्षा होवे ॥

गर्भिणी प्रश्न।

यदि तुमसे गर्भिणी स्त्री प्रश्न करे तो उस स्त्रीके नामाक्षर से उनमें घोड़ाके नामाक्षर और देशके अक्षर मिलाके वर्तमान तिथि मिलावो और

आठका भाग देवोजो सम अंक शेष रहै तो कन्या और विषम रहे तो पुत्र होगा।

गृहस्थाश्रमके सुख।

दोहा—चारिवर्ण आश्रमनमें, है सबको शिरमौर।
गृहस्थाश्रमके सहश, कोउ न जगमें और॥

कवित्त-चारिहू वरण चारि आश्रमको मूल यही, याहीते सकल अवादानी होति वस्ती है॥ वंशब ढ़वारि व्याहसादी भोगराग सुख, रहत हैं यामे पुण्यदान जबर्दस्ती है॥सुकबि गुपाल याते जग तकेजीमें जीव, सदा सबहीकी भयो करै परबस्ती है॥ तनकी दुरुस्ती रहै जनहूंकी खुस्ती तापै पृथिवी केमाँझ सब ऊपरि गृहस्थी है॥

गृहस्थीके दुःख।

दोहा—कुटुम खुशील सुपूत सुत, अनगन धनप्रभु देइ। करनी करतबकरि कछुक, तब गृहस्थ सूखलेइ
कवित्त-राति दिनयामें कोई खरच लगोई रहै, आयो

गयोव्याह गौन गमी औ बधाई है। विषयके भोग कर्म योगके वियोग योग, जिकिरि फिकिरि मारै अपनी पराई है॥सुकवि गुपाल भावभजन बनैन वामें, पर्योरहै सदा मोह जालमें महाई है। करत कमाई तऊ रहै हाय हाई याते सबते सवाई दुःख दाई गृहस्थाई है॥

खेतीका सुख।

दो०—गाम इज़ारो छोड़िके, खेती करिहौं वाम।
सब जग जाकेकरनते, खात पियत निज धाम॥

कवित्त—साँझहू सबेरे दधि दूधके रहत सुख, लीयो करे स्वाद ये रसाल नई नई को। नितप्रति रहै सातौ पौनिवे हुकुम, सरकारमें रहत भलो वस्सा ठकुरईको। जीवै जगजाते जीवजंतु को कनूका मिले, मिले भली बात यह काम मरदईको। कहत गुपाल बीसनहकी कमाई याते सबहीमें भलो पेशो यह किसनईको॥

खेतीके दुःख

दोहा—खेती करत किसानके, मोते दुख सुनिलेउ ॥
हरलैके पिय खेतमें, भूलि पाउं मति देउ ॥

कवित्त—कारी होति देह सहे शीत घाममेह नित रहै लह देह सुख नहीं खानको। बरहेमेंबा सराखेब्योहरेकी आश, ईति भीतिते उदास गिनै माननईमानको। राजै देत पोला हर जोता सुख सोता नाहिं, खोता दिन योंहीं रहै लेशानसयानको। देहमें न चाम रहै हाथमें न दाम याते, कहत गुपालकाम कठिन किसानको ॥

कालिका स्तोत्र।

छप्पय—एक रदनकरि बदनसदन शुभ सुवनक पर्दन। शुभ्र भाल उरमाल लाल भृंगीपति नंदन ॥ लम्बोदर भुजचार गात सिंदूर सुचर्चित। मनुजदेव ऋषि वृद्धि सिद्धि परसिद्धि सुअर्चित। ईश्वरी प्रसाद अष्टांगवत् दोर परो बिनवत चरण ॥

मुहिंदेहुबुद्धि तुम जड़ हरो द्वैमातुर अशरण शरण।
कवित्त–ज्ञानी महरानी सानी दानी न जहानी बीच ध्यावत पुरानी ज्ञानी ध्यानी चित लायकै। उदित उदारता कहानी न बखानी जात रसना सिरानीशे परहे, शीश नायकै॥ हरविधि विष्णु कृष्ण जिष्णु हू लजाय रहे महिमा अपार पार भये नहीं गायकै॥ ईश्वरी अयान जान करौ मात बान कान, दीजै वरदान बान दाहिने हो आयकै॥

प्रभाती।

जागौ श्रीआदि मातु दधिजा सकुचानी॥ दधिसुत छबि छीण भाई दधिसुत गणमोदमई दधिसुत धुनि छायरई चक्री हरषानी॥ दधिसुत पै हो सवार दधिसुत कल हीयहार दधिसुत पति खड़े द्वार दधिसुत समलानी॥ दधिसुत रिपुहै तयार दधिसुत करलेवधार दधिसुतजिनको अहार नाशो महारानी॥ ईश्वरी गुण

करत गान दधिसुत जिनको सुपान दधिजासुत सुभग यान दम्पति सुखदानी ॥ जागौ श्रोआदि मायु दधिजा सकुचानी ॥

स्तुतिजगदम्बा।

जय जय जय मातुआद सेवहिं सुर असुर पाद अष्टसिद्धि दायक निज जन दयालका ॥ शीश स्वर्ग पद पताल श्याम गात सघन बाल चंद्र भाल मुण्डमाल पान जालका ॥ सोहे करवर कृपाण चक्र वज्र धनुषबाण मारे खल तान तान प्रणत पालका अनुचर ईश्वरी अनाथ ठाढ़ो दर जोर हाथ मांगै वर मुक्ति भक्ति अटल काल का ॥ जय जय जय मातु आद सेवहिंसुर असुर पाद अष्ट सिद्धि दायक निज जन दयालका ॥

कुंडलिया काली जीकी।

कालीरूपकरालका, उरमुंडनकीमाल ॥ मेघ-वर्ण नग्नांगि पटु, दश दिशि बाहु विशाल ॥

दशदिशि बाहु विशाल चन्द अवतंस त्रिलोचन ॥ तूलकेश मन मुक्ति सदा वरदा भय मोचन ॥ कह ईश्वरीप्रसाद मातु जनदीन दयाली॥ भक्ति मुक्ति वरदेव अटल जगदम्बा काली ॥

कवित्त।

अर्द्ध अंग नर आज अर्द्धअङ्ग मृगराज नादमनो घनगाज क्रोधवंतविकराल ॥ वज्जेंनख चट्ट चट्ट बोलैं दंत कट्ट कट्ट फोरै मुण्ड भट्ट भट्ट बहै रुधिर पनाल ॥ नरसिंही रूपधार परगटि खंभफार हिरण्यक शिपु मार रत्नजन रत्नपाल ॥ विनयईश्वरीप्रसाद सुनि लीजै मातुआद इतौ दीजियेप्रसाद छूटैभ्रमभवजाल ॥

शिखरिणी केवल एक चौक।

नमो जननी आद्या हरहु बहु बाधा सुख करी ॥ नमो अम्बा काली जननि रछ पाली अघहरी नमो भव अर्द्धंगी करन खलभंगी जा-गरी ॥ नमो रामा श्यामा जपत तुव नामा हर हरी ॥

दोहा—नमो नमो श्रीकालिका, नमो नमो महकाल। जयतिरूप अर्द्धांगिनी, जयजय गौरि कृपाल ॥ छन्दभु० ॥ चिता भस्मको लेपहै अंगदायें ॥ सजो उवटनो केशरी रंगबायें ॥ यहां कांखमें वस्त्रछालाकु-रंगा । वहांशीशसोहै सुसारी सुरंगा ॥ इतै चर्णमें पद्म को चिह्न सज्जै । उतै पांवमें पैंजना शब्द वज्जै ॥

(गजल सूक्ष्म) दयालीदीन प्रणपाली महा काली कृपाली है ॥ अभय वरदान, तत्काली बहाली देनेवाली है ॥ मनोहर गात छवि खुश्तर पयोधर रंग अतिकमतर । वरावर द्युति छटा क्योंकर दमक आनन निरालीहै ॥ लसै दृगपट स्त्रवै ओदक नि-लय मरघट लपट झटपट ॥ सुभट भैरों कटक वंकट लिये संग देत ताली है ॥ धिगत त्रयनैनमें ज्वाला लसै करवालकरवाला । हिये त्रयदेव शिरमाला यु-गल कंकण वयाली है ॥ धरे वलपुष्टदशभारी किये शवपुश्त आधारी ।भयानक घोर चिकारी ललकिर

सना निकाली है ॥ कमरमें मेखलाशवकर मजे आयुध दशोंकरवर। खड़ी रणभूमिमें धक्कर भयंकर दुष्टशाली है ॥ जनहिं संकट निरखि झटपट झपट धावति तुरत सरपट। बजावत मुंड अरि फटफट पटा पट देत तालीहै ॥

रसनिरूपण।

सुरहीके भार सूधे शवद सुकीरन के,
मंदिरन त्यागि करै अनत कहुंन गौन।
द्विजदेव त्योंही मधुभारन अपारन सो,
नेक झुकि झूमिरहे मोगरे मरुअ दौन॥
खोलि इननैननि निहारों तो निहारों कहा,
सुखमा अभूत छायरही प्रति भौन भौन।
चाँदनीके भारन दिखात उनयो सो चंद,
गंदहीके भारन बहत मंद २ पौन॥

वाग्वर्णन।

सवैया।

झूमें झुके तरु पुंज रसाल तमालन जालनपै

दुति साजै ॥ त्यों ललिते कचनार अनार प्रसूनन भार अपार जु राजै ॥ कोकिल कीर कपोतनके कुल बोलत सो मधुरी धुनि छाजै ॥ श्रीमिथिलाधिपके वर बागमें बारहु मास बसंत विराजै ॥

श्रीरामचन्द्रजीके चरण वर्णन।

कवित्त।

मानस महेश मानसरके सरोज मञ्जु,
वेष मति शेषके सुआनंद धरन हैं ॥
कहै कवि ललित सजीवनि सुजन हीके,
नीके जगहीके चारु पोषण भरन हैं ॥
विपति विदारन सुतारन अहिल्या सुख
कारन हमेश जौन आवत शरन हैं।
दारिद दरन अघहरन बरन वर,
मङ्गल करन रामचन्द्रके चरन हैं ॥

श्रीजानकीजीके चरण वर्णन।

कवित्त।

भ्राजत सभामें भरे चारुता प्रभामें अति,

मञ्जु अरविन्दवत गति अधिकारीके।
नीके सुरतीके सती भारती रतीके चित,
दान विरती सुमती व्रतधारीके॥
लालजी कहत जगसेवित प्रशंसनीय,
नित्य सुखकर हर अवधविहारीके।
चन्द दुति मंदकर सुरवृन्द सेवनीय,
अमल अमन्द पद जनकदुलारीके।

श्रीराम नाम वैभव।

सवैया।

या तन सुन्दर पाय अरे मन मूरख क्यों न भजे रघुराई॥ जासु सनेह किये गणिका गजगीध अजामिलने गति पाई॥ और अधीनकी कौन कथा जग जान तरे सदनासे कसाई। नाम न भूलो छनौ मधुरा नरदेह धरेको यहै फल भाई॥

श्रीरामचन्द्रजीको व्याहक बानक।

कवित्त।

रामचन्द्र वदन विलोकी व्याह बानकमें,
मङ्गलीके औरई उछाह सरसत हैं॥
दशरथ कौशिल्या सुमित्रा कैकेयी मन,
लछिराम औरई प्रकाश परसत हैं॥
विवुध वधूटी झारैं औरही सुमन हार,
औरही अदायें अमरेश दरसत हैं॥
औरही खजाने खुले अवध नगर बर,
और भाँति हीरालाल मोती बरसतहैं॥

श्रीरामचन्द्रजीको नेजा वर्णन।

कवित्त।

कौशल कुमारके शिकारमें अजब धूम,
वार पार फैलत अतङ्क भट भीर को।
लछिराम साजैं वे सहमि घन वन वीच,
मन्दर दरीन दुरैं परिहरि धीर को।

अरना वराह बाघ फारे अधफारे परे,
हारिन हजारे भरे गरद गँभीरको ।
भेजा भाल रेजालों गिरत गज भूमें जब,
चलत मजेजदार नेजा रघुवीरको ॥

श्रीरामसेनापयान ।

भारी भालु भीर वारी कारी कपिवीर वारी,
नन्दन समीर वारी सेना जितै जितै जात ॥
छूटै तरुतुंग औ उतङ्ग गिरि शृङ्गफूटे,
छूटे बड़े दुर्गम प्रवास गढ़के सँघात ॥
यार कहै कोदिन निसान संग फहरात,
चिक्करत बीरनके घहरात वज्रपात ॥
हहलात हेम गिरि थिरा थम्भ थहरात,
दहलात दिग्गज कमठ लोल लहरात ॥

शब्दालङ्कारछेकावृत्तिअनुप्रासआदिवर्णावृत्ति ।

कवित्त ॥

चौंर चारु भूधर भरत छितिपाल छत्र,

शत्रुहन सामुहे शरासन सुवेलेको।
सुमन सुकण्ठ हनूमान हाथ मणि मञ्जु,
व्यजन विभीषण विलास बगरलेको।
रङ्गराज मैथिली महीप रामचन्द्र राजैं,
शासन सुमन्त लछिराम लहरेलेको।
परम प्रकाशन विलासन वलित सज्यो,
सुभग सिंहासन अवध अलबेलेको॥

अन्तवर्णावृत्ति।

कवित्त।

वदन सदन गुनगन परसानै ज्ञान,
सरसनि हंसनि सवारो अवतारों मैं।
लछिराम धूम धाम लोचन संकोचजसु,
भौंहनके सौंहन धनुष रुख टारों मैं॥
मैथिली अमन्द रामचन्द्र यों सिंहासन,
विलासन बगर औध नगर निहारों मैं।
सौज श्री मनोज कर भूपर अमङ्गलीक,

मङ्गलीक मौजपर जलधर वारों में ॥

वृत्यनुप्रास।

कवित्त।

पारस पुरन्दर परमहंस परवीन,
धरम धुरन्धर धनी त्यो धीर कल में।
छलिराम ललित लहे जे लाल लाहन में,
विरद विशाल वगरेले बांह हल में॥
अवध अमरावती आनन्द अमन्द ओज,
कामद कला है कमनीय करतल में।
मंगली मैथिल लों मोहिनीन मण्डल में,
राव रामचन्द्रसों न राजा रसातल में॥

हेतुअलङ्कार।

सवैया।

श्री अवतारशिरोमणि यों विरदावलि वेद पुरान
सुनी में। सेवरी गीध अजामिलकी लछिराम कथा
रहो फैलि गुनी में॥ कौल जवाहिरी सन्तनका कव

लालकी चौकी की मोल चुनीमें। रामजो तैं न गरी-
ब नेवाज तो कौन गरीब नेवाज दुनीमें ॥

द्वितीय हेतु अलङ्कार।

क०—कौशल कलश चारु चौदहों भुवनपति,
आरत कलपतरु ऐसो कत पाऊँ मैं। मैथिली लषण
हनूमान अंगदादि सोहैं, लछिमन दूजो क्यों सभा
सदगनाऊँ में। असहन पीरके गँभीरग्रह दोपन में,
वारनउवारन विरदगोहराऊँ मैं। दानी दीनबन्धुरावरे
सों कौन रामचन्द्र, जाके दरबारदौरिदरदसुनाऊँमैं ॥

विभावना अलंकार।

क०—भूषण वसन वारे वलकल डारे अङ्ग, रोम रोम
अनुरूपे रूपके शहरहैं। जटाजूटशिखर त्रिपुण्डपरि-
मित भाल परम प्रतापवान जगर मगर हैं ॥ दल
दूब आसन सिंहासन सों भा समान, लछिराम नाम
रघुवीरब ह्नवर हैं। श्याम घन वरन अकेले आम-
रन भूमि, परनकुटीमें ये कहांके कलाधर हैं ॥

असङ्गति अलङ्कार।

क०–दिग्गज नगारे देव गरजत आपही तें, सगुन शची त्यों गौरी पूजन करति हैं,। लछिराम सातों द्वीप सुन्दरी सँवारैं केश, असुरकी बामैं वन दावालोंजरति हैं। छीर भरे सागर सरित सरितान मौलि, मन्द मधु मालती समीरही हरति हैं। अवध अमन्दरामचन्द्र अवतार हेत भाँवरें दिनेश की दिगङ्गना करति हैं॥

अधिक अलङ्कार।

कवित्त–उन्नतपहार नदी नदन अपारन को,
धौलकरि बिरद बहाली बगरत हैं॥
लछिराम देव नर देव संत घन वन,
पावन परम सिरो आनन्द भरत हैं॥
बिरदवितानमें महीप रामचन्द्र द्वीप–
द्वीप कलाधरलों कुतूहल करत हैं।
फैल्यो छीर सागर तरङ्ग सो तिहारो यश,
छीरमें दिगन्तनके छलक्यो परत है॥

अन्योन्यालंकार।

स०—वैं उनके धनुबान सँवारिकै राखत सामुहैं मौज गँभीरके। वै लछिराम उमाहन मैं कलकोरैं निहारत छौर मनीरके॥ वै उनके मुख हेरि भरैं गरे माल घने मुकताहल हीरके। भाग भरैं सब लोग सराहत आनँद लक्खन श्रीरघुवीरके।

यथासंख्यालंकार।

क०—मङ्गलीक चरन करन अधरन चढ़ी,
लालिमा गहर गुण कोमल बटोरके।
छलिराम जंघ भुजदंडन प्रचण्ड उर,
बिरचे कठोर सान अजब हिलोरके॥
भुजमूल भालचन्द्रवदन बिलास हास,
परम प्रकाश पुञ्ज रस वीर बोरके।
भौहैं भङ्ग लोचन तिरीछे जुलफनबारे,
बार घुंघुरारे कारे लखन किशोरके॥

परिसंख्या अलंकार।

क०—चन्दन वलित वेस बग़र विहद्द मौलि,

कुण्डलित शुण्ड रद मद के प्रचार मैं।
वरन गनेश मणिमण्डित रतन झूल,
झूमिकै चलत हैं मलिन्द झनकारमैं॥
लछिराम रावरे मतङ्गन पै रामचन्द्र,
वै रही प्रभा जो गज रथके अगारमैं।
विध विकरार मैं न दिग्गज कुमार मैं,
न कज्जल पहार मैं न घन वन भार मैं॥

सन्देहालंकार।

क०--वार मैं तिरीछी द्वैपलाकै उतरति पार
कैधौंयाफनाली किपन्नगी झलाझल है।
लछिराम कैधौं प्रलै वासर प्रणाली जोर,
जौहर जमाली पाली काल करनल है॥
रावण समर में पहीप रामचन्द्र कर,
कैधौं या कृपाणज्वालामुखीकी सकल है।
असल कुमारी बडवानल प्रचण्ड कैधौं,
बारहों कलाके मारतण्डकी नकल है।

सम्भावना अलंकार।

स०—रामचंद्र दल-महिमा, तब कहि जात।
जो कह शारद कोटिन, मुख जलजात॥

लोकोक्ति अलंकार।

स०—छोड़ि मानसर मञ्जुल, लघु सर जात।
राजहंस तजि मोती कांकर खात॥१॥

अमृत ध्वनि।

सजत चारु चतुरंगिनी रामचंद्र भूपाल।
खलभल फैलत असुरपुर छुट्टत गढ़ विकराल।
छुट्टत गढ़ विकरालदश दिगपालहलकत।
फुट्टत खलदलभालग्गज मतवालक्षलकत॥
सग्गस्सुवन समीर लखन गम्भीरग्गज्जत।
वज्जत नवल निसानस्सुभट कृपानस्सज्जत॥

श्रीकृष्णचन्द्रजीका नखशिख वर्णन।

कवित्त—नखन पै नखत तरुणकञ्ज पायन पै, रम्भ खम्भ जानु पै मृगेंद्रजलोंनीलकपै। उदर पै पान कण्ठ पै कपोत रंग, चिबुक रसाल छटा दंतन

दमंक पै ॥ वारि विम्ब मुकुर कपोलन पै नासा कीर, नैनन पै खञ्जन कमान भौंह वंक पै। भाल पै मयंक भाग कोटि मारतण्ड वारौं, मुकुट छवानि झला झलकी झमंक पै ॥

श्रीकृष्णचन्द्रछविवर्णन।

कवित्त-नव घन वारि डारौं श्याम रंग अंगन पै,
वारौं छबि पुञ्ज मोर चन्द्रकी छटान पै।
नैनन पै कञ्ज खञ्ज मीन मृग वारि डारौं,
जगतलोनाई वारौं लाल अधरान पै ॥
नासिका पै कीरअलि अवलि सुभौंहनपै।
वारौं अहिवृन्द केश वेष लहरान पै।
सातौ स्वर तीनी ग्राम बांसुरीकी तानन पै।
कोटिकाम वारिडारौं मृदु मुसुक्यान पै॥

श्रीराधिकाजीका ध्यान।

सवैया-भूषन सारे सँवारे जराऊ जिन्हैं लखि तारे
लगैं अतिफीके। त्यों द्विजदेव जू आनन

की छवि अंग सबै सरसाय शशीके ॥
ताहू पै भानु प्रभा निदरे लसैं चञ्चल
कुंडल कानन नीके। मोहमई तम
क्योन मिटै इमिध्यानधरेवृषभानु ललीके

श्रीराधाकृष्ण सनेहवर्णन।

सवैया—दोऊ दुहूँनको हेरत हैं मुख, दोऊ दुहूँनहरा
पहिरावैं। दोऊ दुहूँनको साजैं शृँगार, दुहूँनपै दोऊ
सुगन्ध लगावैं॥ यों अनुराग दुहूँ उमड़्यो, लछि
राम दुहूँन पै आनँद भावैं। राधिका गोकुलचन्द
कीरीति, प्रतीति औ प्रीति लखे बनि आवैं।

अधर वर्णन।

दोहा-तेरस दुतिया दुहुँन मिलि, एक रूप निजगानि॥
भोर सांझ गहि अरुणता, भये अधर तुव आनि॥

रदन वर्णन।

सवैया—केते कहैं मुकता हलकी लहै, कोऊसुहीरकनी
सनमाने। कोऊकहैं कछुटोनेके बीज ये, चन्द्रिका
चूर किते परमाने ॥ ये लछिराम न मो मनमें

बसैं, शारद या समता अनुमाने। शोधिकै मार म-
नोहर मंत्र, धरे अरविंद अनारके दाने ॥

प्रेमतरंग ।

कवित्त-एरी आजुकाल्हि सबलोक लाज त्यागि दोऊ,
सीखैं हैं सबै विधि सनेह सरसाइबो ।
यह रसखान दिन द्वैमें बान फैलि जैहे,
कहांलो सयानि चंद हाथन छिपाइबो ॥
आजुहौं निहारयो वीर नीप कलिन्दीतीर,
दोउन सों दोउनको मुख मुसक्याइबो ।
दोऊ परैं पैयां दोऊ लेतहैं बलैयां उंहैं,
भूलिगई गैयां उंह गागरी उठाइबो ॥

उद्योग ।

दोहा-भरत पेट नट निरत कै, डरत न करत उपाय ॥
धरत बरतपर पांयँ अरु, परतबरत लपटाय ॥

पुरुषार्थ ।

दोहा-दुख सुख सबकहँ परतहै, पौरुष तजहु न मीत॥
मनके हारे हार है, मनके जीते जीत ॥

शिक्षा।

कवित्त-याहि मतिजानौ है सहज कहै रघुनाथा,
अतिही कठिन रीति निपट कुढंगकी।
याहिकरि काहूकाहूभांतिसों न कलपायो
कलपायो तन मन मति बहुरंगकी॥
औरहू कहौं सो नेक कानदेके, सुनलीजै,
प्रगट कही है बात बेदनके अङ्गकी।
तब कहूँ प्रीति कीजै पहिलेते साख लीजै,
बिछुरन मीनकी औ मिलन पतंगकी॥

बसन्तविरहिनी।

कवित्त-कुञ्जनमें खञ्जनकी चलनि विलोकतही
दृग अरविन्दकी आभा दरसायजात।
देवकीनन्दन करें फिरि नहिं भूलै मोहिं,
वाहीबानिहामें कोर कठिन सताय जात॥
कैसे जियों आली बनमाली बिन फागुनमें,
देखतहीं रंग अङ्ग अङ्ग पियराय जात।
भाय जात श्यामसुधि कालिंदिबिलोकतही,

छाय जात मैन पोर आसू नैन आयजात ॥

विषाद ।

कवित्त-दरिद विदारिवेको प्रभुको तलास है तो, हमरे इहां अनगन दरिद की खानि है। अघकेशिकारी जोहै नजरि तिहारीतो पै, हौहूँ मन पूरन अघन राख्यो ठानि है॥ कहत वियोगी सुनो हे हे दयामय आज होत हरषिगात पूरो भाग अनुमानि है ॥ अपनी बिपतिको हुजूर हौं कहत लरि, रावरे की विपति विदारिवेकी बानि है ॥

निर्वेद ।

सवैया-या लकुटी अरु कामरियापर, राज तिहूँ पुरको तजि डारौं । आठहुंसिद्धि नवो निधिके सुख, नन्द की गाय चराय विसारौं ॥ नैननसों "रसखान" जबै, ब्रजके बन बाग तड़ाग निहारौं । कोटिकवे कलधौतके धाम, करीलकीकुंजन ऊपरवारौं ॥ समाप्त ।

विद्याविलास प्रेस, गोपालमन्दिर लेन, बनारस सिटी ।